पं० हरिशंकर शर्मा
जन्म १९ अगस्त १८९१
निधन ९ मार्च १९६८

छन्द-विज्ञान की व्यापकता

हरिशंकर शर्मा

रतन प्रकाशन मन्दिर
पुस्तक-प्रकाशक एवं विक्रेता
आगरा जयपुर

मूल्य : ३'७५ न० पै०

मुद्रकः—
प्रेम इलैक्ट्रिक प्रेस,
मंडी सईद खां आगरा।

निवेदन

'छन्द-विज्ञान और उसकी व्यापकता' नामक अपनी एक तुच्छ कृति प्रवीण पाठकों की सेवा में समुपस्थित कर रहा हूँ। महामति पिंगल मुनि आज से सहस्रों वर्ष पूर्व, गणित के अटल आधार पर, छन्दःशास्त्र को वैज्ञानिक रूप देकर, सचमुच बड़ा भारी काम कर गये हैं। जहाँ दो मात्राओं का भी छन्द माना गया हो, वहाँ तो गद्य-पद्यात्मक कोई भी वाक्य क्यों न हो, छन्द की कोटि में आए बिना न रहेगा। हमारी वाणी या लेखनी से जो भी व्यक्त-अव्यक्त शब्द निकलते हैं, वे सब ही पिंगल-शास्त्र के वैज्ञानिक आधार पर, छन्द-कोटि में आ जाते हैं। शब्द ही नहीं; ध्वनियाँ भी छन्द का रूप धारण कर लेती हैं। वार, मास, नगर, व्यक्ति, पशु-पक्षी, पुस्तक इत्यादि सभी के नाम किसी न किसी छन्द के अन्तर्गत ही हैं।

हिन्दी, गुजराती, मराठी, बँगला, तामिल, तैलगू आदि भारतीय भाषाओं ने किसी न किसी रूप में परम प्राचीन पिंगल-शास्त्र का ही आश्रय लिया है। उर्दू भाषा भी हिन्दी का ही एक रूप है, इसने भी अपनी छन्द-रचना में, सदा-सर्वदा पिंगल-पथ पर ही चलने का प्रयत्न किया है। उर्दू ही नहीं, फ़ारसी भाषा के छन्द भी पिंगल मुनि की वैज्ञानिकता से बाहर नहीं हो पाए। अँग्रेज़ी छन्दों का प्रवाह भी पिंगल के अनुसार ही है। छन्द ही क्यों प्रत्येक भाषा का वाक्य या वाक्यांश भी किसी न किसी छन्द का ही रूप है। इस निबन्ध में यही विचार-धारा, युक्तियों और उदाहरणों के आधार पर परिपुष्ट की गयी है। ऊपर उर्दू, फ़ारसी या अँग्रेज़ी का छन्द है, नीचे उसी के अनुरूप हिन्दी छन्द दे दिया गया है। हिन्दी छन्द के प्रवाह तथा उसकी गति के अनुसार, उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी के छन्द पढ़िए तो आपको उनमें पूर्ण समता प्रतीत होगी। ऐसा जान पड़ेगा मानो विभिन्न भाषाओं के दोनों छन्द एक ही साँचे में ढले हुए हैं। इसी प्रकार इन भाषाओं के छोटे-बड़े वाक्यों और वाक्यांशों को भी पढ़िये, वे भी किसी न किसी छन्द का प्रतिनिधित्व करते दिखायी देंगे।

इस निबन्ध की रचना का उद्देश्य यही है कि पाठक यह जान सकें कि हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी ही नहीं, संसार की किसी भाषा के भी 'वाक्य' या 'पद' क्यों न हों, छन्दःशास्त्र की दृष्टि से वे सब ही पिंगल-परिधि में दिखायी देंगें। मात्राएँ गिन कर प्रत्येक छन्द का नाम छन्दःशास्त्र में बड़ी सरलता से

खोजा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वाणी और लेखनी से जो कुछ निःसृत होता है उस पर छन्द-छवि स्पष्ट छाई हुई है। उर्दू बहरों और हिन्दी छन्दों में सर्वथा समानता है, इस विषय पर 'विशाल भारत' आदि पत्रों में मेरे कई लेख प्रकाशित हुए थे। उनकी चर्चा भी काफ़ी हुई थी। जब मैं उर्दू-फ़ारसी के गढ़ लाहौर, लशकर, हैदराबाद आदि नगरों में गया, तो वहाँ के कितने ही शायरों और अदीबों ने मेरी इस विचार-धारा को पसन्द किया और मुझे दाद दी। आगरे के शायरों और अदीबों को भी यह विचार-शैली अच्छी लगी। अब अंग्रेज़ी कविता में भी मुझे पिंगल की ही छवि-छाया दिखायी दी। उसका दिग्दर्शन भी इस पुस्तक में कराया गया है। पाठक गण हिन्दी छन्दों के प्रवाहानुरूप ही उर्दू, फ़ारसी और अँग्रेज़ी छन्दों को पढ़ेंगे तो उन्हें दोनों छन्दों में एकरूपता दिखायी देगी। उर्दू, फ़ारसी और अँग्रेजी की प्रत्येक कविता के नीचे तदनुरूप हिन्दी छन्द भी दे दिये हैं। कितने ही छन्दों के नामों का भी उल्लेख है। इस नाम-निर्देश और छन्द-पुष्टि-करण में, मुझे सुप्रसिद्ध कला-कोविद और सुकवि बन्धुवर श्री पं० हृषीकेश चतुर्वेदी से यथेष्ट सहायता मिली है, अतएव मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

शङ्कर-सदन,
आगरा

विनीत—
हरिशङ्कर शर्मा

तालिका

छन्द-विज्ञान
की
व्यापकता

छन्द की उत्पत्ति

छन्द-ज्ञान किस भाँति हुआ, अथवा कब से पाया है,
यही तत्त्व संक्षेप रीति से नीचे समझाया है।

परमात्मा का ज्ञान–कृति–वेद 'काव्य' के नाम से पुकारा जाता है। स्वयम् वेद-वाक्य बताता है—'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।' अर्थात् देवाधिदेव परमात्मा के काव्य को देखो, जो न कभी नष्ट होता और न कभी पुराना पड़ता है। इसी आधार पर यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में, परमात्मा को 'कवि' कहा गया है। 'कवि' का अर्थ है त्रिकालदर्शी, सूक्ष्मदर्शी अर्थात् भूत, भविष्यत् और वर्तमान का ज्ञाता या पण्डित। कवि का कर्म्म ही उसका काव्य कहलाता है। अतः आदि कवि परमात्मा की कृति 'वेद' ही संसार का सबसे पहला 'काव्य' है।

प्राचीन आचार्य्यों की परिभाषानुसार, काव्य वह है जिसका सम्बन्ध गायन कला से हो। वैदिक ऋचाएँ गायी जाने के कारण काव्य कहलाईं। उस समय छन्दोबद्ध रचनाओं का नाम 'काव्य' था, अतः वेद भी 'काव्य' कहलाए और उनका नाम छन्द भी पड़ा—'छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्'। छन्दांसि यस्य पर्णानि' इत्यादि मन्त्रांशों में वेद को छन्द कहा गया हैं। लौकिक और वैदिक व्याकरण के परमाचार्य्य महर्षि पाणिनि ने भी 'बहुलंछन्दसि' आदि सूत्रों में वेदों को छन्द ही माना है। इन संकेतों से स्पष्ट है कि संसार में सबसे पहले वेद ही छन्दोबद्ध हुए और उनमें सात छन्द मुख्य माने गये जिनका उल्लेख कात्यायन मुनि ने, स्वरचित वेदों की सर्वानुक्रमणिका में किया है, अर्थात्—१. गायत्री, २. उष्णिक, ३. अनुष्टुप्, ४. बृहती, ५. पंक्ति, ६. त्रिष्टुप् और ७. जगती। इन छन्दों की अक्षर-संख्या इस प्रकार है—

गायत्री २४ अक्षर, उष्णिक २८ अक्षर, अनुष्टुप् ३२ अक्षर, बृहती ३६ अक्षर, पंक्ति ४० अक्षर, त्रिष्टुप् ४४ अक्षर और जगती ४८ अक्षर। अथर्ववेद का निम्नलिखित मन्त्र भी इसी भाव का द्योतक है—

गायत्रेण प्रति मिमीतेऽर्कम्
अर्केणसाम त्रैष्टुभेन वाकम्
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा
अक्षरेण मिमते सप्त वाणी

अर्थात् गायत्री छन्द से ऋचा बनती है, ऋचा से साम; त्रिष्टुप से वाक् और वाक् से वाक्य। चाहे वह द्विपद हो चाहे चतुष्पद। इस प्रकार सातों छन्दों और अक्षरों से बनी वाणी वेद-विद्या है। वेद-मन्त्रों की छन्दोबद्धता के सम्बन्ध में अथर्ववेद फिर कहता है—ऋचः पदं मात्रया कल्पन्तः। अर्थात् ऋचाओं के पद मात्राओं की गणना से रचे गये हैं। इसीलिये उनमें अक्षर-विन्यास तथा मात्राओं का ठीक-ठीक क्रम परिलक्षित होता है।

अब प्रश्न यह है कि 'छंद' शब्द का अर्थ क्या है? संस्कृत साहित्य में 'छदि' धातु (जिस से छन्द बना है) का अर्थ 'संवरण' और 'आ-ल्हाद' है। 'छन्दयति-आल्हादयति मनुष्यान् इति छन्दः'। अर्थात् जो मनुष्यों को प्रसन्न करता या आनन्द देता है, वह छन्द है। रोज़ देखा जाता है कि जब 'लय' और 'ताल' से युक्त छन्द गाये जाते हैं तब मनुष्य मुग्ध होकर झूमने लगते हैं। मानव ही क्यों, गाने का प्रभाव तो पशु-पक्षियों तक पर पड़ता बताया जाता है। लोक में प्रसिद्ध है कि हरिण और सर्प तक को गाना सुनने से बड़ी प्रसन्नता होती है। छन्दोबद्ध रचनाएँ ही तो गायी जाती हैं और छन्द का अर्थ है प्रसन्न करने वाला या सुखदाता। अतएव छन्द गानात्मक या गेय होने के कारण अद्भुत सौन्दर्य-युक्त आनन्ददाता बन गया। वस्तुतः छन्द की आवश्यकता भाषा को गानात्मक बनाने के लिये ही होती है। गद्य की अपेक्षा पद्य श्रवण और मन को अधिक तृप्तिकर होता है। पद्य बड़ी सरलता से याद हो जाता है और उसके आधार पर थोड़े शब्दों में गम्भीर भाव भरे जा सकते हैं। किसी ने ठीक कहा है, ध्वनि का

नियमित और आकर्षक रूप ही वाद्य है और विधिवत् अंग-संचालन (शारीरिक गति) तथा भाव-भंगिमा के प्रदर्शन को नृत्य कहते हैं। स्वर की आकर्षण पूर्ण नियमितता गान है और शब्दों का सुन्दर विन्यास तथा वाक्यों की भावमयी लोकोत्तरानन्ददायिनी चमत्कृति, चाहे वह छन्द-युक्त हो या छन्द-मुक्त, कविता है। इस प्रकार लघु-गुरु स्वरों या मात्राओं की नियमित योजना का नाम ही छन्द है। इन छन्दों में रची गयी रुचिर रचनाएँ ही काव्य हैं। साधारण पद्य भी छन्दोबद्ध रचना का ही नाम है—छन्दोबद्धं पदं पद्यम्। वेद के छह अंग हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। इनमें एक अंग 'छन्द' भी है, जो पाणिनि के मतानुसार 'वेद' का ही नाम है। 'उद्‌गीथ' और 'गीति' छन्द के ही पर्याय हैं। उद्‌गीथ भी गाये जाते हैं और सामवेद उद्‌गीथ प्रधान होने से गीति-काव्य है। इसी वेद का उपवेद गांधर्व वेद है। नारद संहिता आदि ग्रन्थों में, छन्दों तथा उद्‌गीथों की विशद व्याख्या की गयी है। छन्दों के सम्बन्ध में 'लघु' तथा 'गुरु' का ज्ञान भी आवश्यक है। आचार्य्य पाणिनि कहते हैं–ह्रस्वं लघु। संयोगे गुरु। दीर्घंच। अर्थात् ह्रस्व की संज्ञा लघु है। इसके उच्चारण में एक मात्रा का काल लगता है। संयुक्त अक्षर से पहला 'ह्रस्व' गुरु होता है। और दीर्घ भी गुरु होता है। दीर्घ या गुरु के उच्चारण में, दो मात्राओं का काल लगता है। 'गुरु' अक्षर के विषय में एक आचार्य्य का कहना है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गीच गुरुर्भवेत्,
वर्णः संयुक्त पूर्वस्यः तथा पादान्तगोऽपिवा।

अर्थात् अनुस्वार सहित, दीर्घ और विसर्ग युक्त वर्ण गुरु होता है। संयोग से पूर्व का अक्षर 'गुरु' और पाद के अन्त का अक्षर विकल्प से गुरु होता है। छन्दः शास्त्र के आचार्यों ने लघु का चिन्ह। इस प्रकार सीधी रेखा और गुरु का चिन्ह ऽ यह माना है। वर्ण का गुरुत्व अथवा लघुत्व उसके उच्चारण पर निर्भर है अर्थात्–

दीरघहू लघुकर पढ़े, लघुहू दीरघ जान,
मुखसों प्रगटे सुख सहित, कोविद करत बखान।

ऊपर की पंक्तियों में वैदिक छन्दों का अति सूक्ष्म वर्णन किया गया है। प्रारम्भ में उल्लिखित सात छन्द थे, फिर वे बढ़ते-बढ़ते बहुसंख्यक होगये अर्थात् इन छन्दों के अनेक भेद-उपभेद बन गये। वैदिक छन्दों के पश्चात् लौकिक छन्दों का युग आता है। इस युग के आदि कवि महर्षि वाल्मीकि माने जाते हैं। कहते हैं कि एक दिन वाल्मीकिजी स्नानार्थ नदी-तट की ओर जा रहे थे। मार्ग में किसी निषाद (शिकारी) ने क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े में से एक को बाण से वींध दिया। उस समय कारुण्य से ओत-प्रोत महर्षि वाल्मीकि के मुख से यह पद्य प्रस्फुटित हुआ—

मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगमः शाश्वतीः समाः,
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्।

अर्थात् अरे निषाद, तुझे शाश्वती प्रतिष्ठा कभी प्राप्त न हो क्योंकि तूने काम से मोहित क्रौंच के जोड़े में से एक को मार दिया! कहने को वाल्मीकिजी उक्त पंक्तियाँ कह गये, परन्तु स्वयम् उन्हें उन पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे समझ न सके कि उनके मुख से ये छन्दोमयी वाणी किस प्रकार सहसा प्रस्फुटित हो गयी। जो हो, उपर्युक्त पंक्तियाँ ही संसार का सर्वप्रथम लौकिक छन्द कहलाईं और महर्षि वाल्मीकि 'आदि कवि' माने गये। कहा जाता है कि वाल्मीकिजी ने सारी रामायण अनुष्टुप छन्दों में ही रची थी, परन्तु वर्तमान रामायण में तो अनुष्टुप के अतिरिक्त और भी अनेक छन्द पाये जाते हैं। मात्रा, वर्ण की रचना, विराम, गति का नियम और चरणान्त में समता जिन पंक्तियों में पायी जाती है, वे छन्द कहाती हैं। छन्द दो प्रकार के होते हैं (१) 'मात्रिक' अथवा 'जाति' और (२) 'वर्णवृत्त'

गुरु लघु चारों चरण में, क्रमतें मिलें समान,
'वर्णवृत्त' है अन्यथा, मात्रिक छन्द प्रमान।

अर्थात् जिस पद्य के चारों चरणों में वर्ण-संख्या और उन वर्णों के गुरुत्व अथवा लघुत्व का क्रम समान हो, उसे 'वर्णवृत्त' कहते

हैं और जिस पद्य के चरणों में यह नियम न पाया जाए, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं। मात्रिक छन्दों में वर्ण-संख्या एक-सी हो या न हो परन्तु मात्राओं की गणना अवश्य एक-सी होनी चाहिए।

अबसे कई सहस्र वर्ष पूर्व आचार्य पिंगल मुनि ने लौकिक छन्दः शास्त्र की रचना की थी। पिंगल मुनि का काल 'पंच-तन्त्र'-रचयिता विष्णु शर्मा से पहले का माना जाता है और विष्णु शर्मा चन्द्रगुप्त के समकालीन थे। पिंगलाचार्य्य ने अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा-शक्ति द्वारा मौलिक और अद्भुत सूत्र रचे। उन्होंने पाणिनि के लघु और गुरु अक्षरों की परम्परा ध्यान में रखकर, तीन-तीन अक्षरों के आठ गण बनाए। एक-एक सूत्र में एक-एक गण का सोदाहरण विवेचन किया और गणों के नाम इस प्रकार रखे–

१. मगण, २. नगण, ३. भगण, ४. यगण, ५. जगण, ६. रगण, ७. सगण और ८. तगण।

गणों के सम्बंध में निम्न लिखित श्लोक प्रसिद्ध है,

मस्त्रि गुरुस्त्रि लघुश्च नकारो,
भादि गुरुः पुनरादि लघुर्यः

× × × ×

आदि मध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्
यरता लाघवं यान्ति मनौतु गुरु लाघवम्।

इसके पश्चात् हिंदी छंदः शास्त्राचार्यों ने गणों की पहचान के लिये जो सूत्र बनाया वह बड़ा महत्त्वपूर्ण और स्पष्ट है। इस सूत्र में आए उन-उन अक्षरों के सामने तीन-तीन अक्षर गिनते जाइए तो प्रत्येक अक्षर का गण उसके साथ ही मिल जाएगा। वह सूत्र है– 'यमाता राजभान सलगा' अर्थात् यमाता, मातारा, ताराज, राजभा, जभान, भानस, नसल, सलगा। सलगा के 'ल' से लघु और 'ग' से गुरु। इसी सूत्र को अधिक विशदता और सरलता से निम्न प्रकार समझाया जा सकता है—

१.	यगण	यमाता	आदि लघु	ISS
२.	मगण	मातारा	तीनों गुरु	SSS

३.	तगरण	ताराज	अन्त्य लघु	SSI
४.	रगरण	राजभा	मध्य लघु	SIS
५.	जगरण	जभान	मध्य गुरु	ISI
६.	भगरण	भानस	आदि गुरु	SII
७	नगरण	नसल	तीनों लघु	III
८.	सगरण	सलगा	अन्त्य गुरु	IIS

इस प्रकार इन आठ गणों की कल्पना कर, हिन्दी छन्दः शास्त्र को बड़ा सुन्दर और स्वाभाविक स्वरूप दिया गया और इन्हीं गणों के आधार पर हिन्दी तथा संस्कृत के सैकड़ों छन्दों का निर्माण हुआ। इस विषय की व्याख्या में अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं। संस्कृत में पिंगल सूत्रों के अनन्तर, 'वृत्त रत्नाकर' और 'छन्दोमंजरी' नामक दो ग्रन्थ और उल्लेखनीय हैं। 'श्रुत बोध' नामक एक छोटी पुस्तिका भी प्रसिद्ध है। संस्कृत काव्य-साहित्य में, एक अक्षर के 'श्री' छन्द से ही छन्दःशास्त्र का श्रीगणेश हुआ है। इसके पश्चात् दो, तीन, चार, पाँच तथा अधिक अक्षरों के भी छन्द बने। अन्ततः दण्डक छन्द पर इस क्रम की समाप्ति हुई। प्रत्येक पद्य या छंद के सामान्यतः चार चरण माने गये हैं। कुछ ऐसे छंद भी निर्मित हुए जिनके चारों चरण समान न थे। ऐसे छंदों को 'विषमवृत्त' माना गया और उनके नामकरण भी पृथक् किये गये। 'आर्या', 'उपजाति' 'पुष्पिताग्रा' आदि इसी प्रकार के छंद हैं। इसके पश्चात् तो छंदों के अनेक भेद हुए और इन भेदों का ज्ञान कराने के लिये प्रस्तारों की वैज्ञानिक विधि को जन्म दिया गया। प्रस्तारों के विस्तार और उनकी संख्या की दृष्टि से छंद का स्वरूप निश्चित कराने के लिये, सूची, पाताल, नष्ट, इष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, खण्डमेरु, मर्कटी, पताका इत्यादि नाम देकर छंदः शास्त्र को एक अत्यन्त गहन तथा वैज्ञानिक रूप दिया गया। प्रस्तारों का विस्तार देख कर निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि संसार की समस्त भाषाओं के वाक्य या वाक्यांश किसी न किसी छंद के अन्तर्गत अवश्य आजाते हैं। मात्रिक छंदों में मात्राएँ–गुरु-लघु की दृष्टि से—गिनी जाती हैं और वर्णवृत्तों

में वर्ण अर्थात् अक्षरों की गिनती होती है। वर्णों या अक्षरों के आधार पर जो छंद बनाए जाते हैं, वे वर्णवृत्त कहलाते हैं।

छन्दःशास्त्रकारों ने दग्धाक्षर और शुभाशुभ अक्षरों पर भी विचार किया है। काव्य के आरम्भ में जगण अशुभ माना गया है, किन्तु यदि 'जगण' में कोई देवतावाचक शब्द आ जाए तो प्रारम्भ में भी 'जगण' शुभ मान लिया जाता है। माघ का 'शिशुपाल-वध' और भारवि का 'किरातार्जुनीय' दोनों ही काव्य 'जगण' से प्रारम्भ किये गये हैं, परन्तु दोनों के प्रारम्भ में देवता-वाचक 'जगण' हैं।

संस्कृत में गीतियाँ भी बहुत हैं। महाकवि जयदेव ने 'गीत गोविन्द' नामक सुप्रसिद्ध गीति-काव्य की रचना की है। हिन्दी में मुक्तक छन्दों का भी अच्छा प्रचार हुआ है। महाकवि तुलसीदास और आचार्य केशव की अधिकांश कविताएँ मुक्तक छन्दों में हैं। जिस प्रकार वर्णवृत्तों और मात्रिक छन्दों में यति तथा गति का ध्यान रखना पड़ता है, उसी प्रकार मुक्तक छन्दों में भी। मुक्तक में यति-गति के साथ लय का भी विशेष ध्यान रखा जाता है। कवि-वर शङ्करजी ने तो छन्दों की दिशा में एक और अपूर्व चमत्कार कर दिखाया है, अर्थात् उन्होंने अपने बहुसंख्यक मात्रिक छन्दों में, वर्णों की संख्या भी समान रखी है। हिन्दी भाषा देववाणी (संस्कृत) की बड़ी बेटी है। हिन्दी ने जो कुछ पाया है, अपनी माता संस्कृत से ही पाया है। हिन्दी छन्दःशास्त्र भी संस्कृत छन्दःशास्त्र के आधार पर ही रचा गया है। अतः उस में भी वे सब वैज्ञानिक विशेषताएँ हैं, जो संस्कृत छन्दःशास्त्र में पायी जाती हैं। छन्द-संख्या की दृष्टि से तो हिन्दी अपनी माता से भी बहुत आगे बढ़ गयी है।

वर्ण-गणना

गुरु-लघु या गण-गणना से ही होता छन्दों का निर्माण,
छन्द और संगीत-कला के समझे जाते गुरु-लघु प्राण।

व्याकरण शास्त्र में तीन प्रकार के अक्षर माने गये हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। प्लुत का व्यवहार वेद-मन्त्रों और संगीत में होता है। ह्रस्व अर्थात् लघु का अर्थ छोटा और गुरु अथवा दीर्घ का अर्थ बड़ा है। अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच अक्षर लघु हैं, इनकी एक-एक मात्रा गिनी जाती है। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अनुस्वार और विसर्ग गुरु वर्ण हैं। इनकी दो-दो मात्राएँ मानी जाती हैं। मात्रा को कल, कला, मत्त और मत्ता भी कहते हैं। लघु अकेला होता है, इसलिये उसकी एक मात्रा मानी जाती है, परन्तु गुरु दो अक्षरों से बनता है, अतः उसकी दो मात्राएँ होती हैं। उदाहरणार्थ देखिए, लघु-गुरु की सृष्टि कैसे हुई—

अ+अ=आ	अ+ए=ऐ
इ+इ=ई	अ+उ=ओ
उ+उ=ऊ	अ+ओ=औ
ऋ+ऋ=ॠ	अ+.=अं
अ+इ=ए	अ+:=अः

ऊपर जो बात स्वरों के सम्बन्ध में कही गयी, वही व्यंजनों के सम्बन्ध में भी समझिए। 'क' से 'ह' तक सब अक्षर व्यंजन कहलाते हैं। वे न गुरु हैं और न लघु। उनकी हल संज्ञा है। ये व्यंजन लघु या गुरु स्वरों के साथ मिलने से 'लघु' या 'गुरु' बन जाते हैं। जैसे 'क' छोटी 'इ' मिलने से 'कि' और बड़ी 'ई' मिलने से 'की' हुआ। अतः 'कि' लघु और 'की' गुरु है। इसी प्रकार अन्य सब व्यंजनों के सम्बन्ध में समझना चाहिए। शब्द के मध्य अथवा

अन्त में यदि कोई संयुक्त अक्षर आ जाता है तो वह अपने पूर्व-वर्ती लघु अक्षर को गुरु बना देता है। यथा–सत्य, सर्व, मध्य, चक्र, पर्व आदि में स, स, म, च, प लघु वर्ण होने पर भी गुरु हो गये। इसी क्रम से उनकी गणना भी होगी। संयुक्त अक्षर अपने पूर्ववर्ती लघु को तो गुरु कर देगा, परन्तु स्वयम् वह लघु-गुरु जैसा है, वैसा ही रहेगा। दो शब्दों के समास में यदि दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर संयुक्त हो तो उससे पूर्ववर्ती शब्द के अन्तिम लघु अक्षर को लघु या गुरु मानना छन्द की आवश्यकता और कवि की इच्छा पर निर्भर है। जैसे 'कवि-प्रिया' और 'पतिव्रता' में 'वि' और 'ति' गुरु या लघु जिस प्रकार भी ठीक बैठ जाएँ उसी प्रकार ठीक समझनी चाहिएँ। जिन अक्षरों पर चन्द्र बिन्दु होता है, और जो पूरे अनुस्वार सहित नहीं बोले जाते, उनकी गणना भी लघु मात्रा के रूप में ही की जाती है। यथा—फँसना, हँसना आदि। 'तुम्हारा' और 'कन्हैया' का 'तु' और 'क' संयुक्त वर्ण से पहले होने पर भी गुरु नहीं होगा, लघु ही गिना जायगा, क्योंकि उनका उच्चारण लघु रूप में ही होता है। उच्चारण-भेद से सवैया आदि में गुरु वर्ण की गणना प्रायः लघु मान कर ही की जाती है। साधारणतः वर्णिक को 'वृत्त' और मात्रिक को 'छन्द' माना जाता है। मात्रिक छन्दों में ३२ मात्राओं तक का साधारण छन्द कहा जाता है, और इस से अधिक मात्रा वाले की 'दण्डक' संज्ञा है। जिन मात्रिक छन्दों में पहले तथा तीसरे और दूसरे तथा चौथे पद समान होते हैं, उन्हें 'अर्द्धसम' कहा जाता है। जिन छन्दों के चारों चरण असमान हों उन्हें 'विषम' कहते हैं। मात्रिक छन्दों में, वर्ण भले ही न्यूना-धिक हों, परन्तु मात्राएँ नियत-नियमित ही होनी चाहिएं यथा 'माता' में दो गुरु वर्ण होने से चार मात्राएँ हुईं और 'भारत' में एक गुरु तथा दो लघु हैं अतः इसमें भी चार मात्राएँ हुईं। इस प्रकार दोनों समान हैं। हाँ, उपभेद की दृष्टि से वे पृथक् हो जाएँगे। मात्रिक गणों के ६, ५, ४, ३ तथा २ मात्राओं की दृष्टि से 'टगण', 'ठगण', 'डगण', 'ढगण' और 'णगण' क्रमशः ये 'पाँच

भेद हैं। उपभेद अलग रहे। इन गणों के भेद और उपभेद इस प्रकार हैं—

मात्रिक गण

(१)	टगण,	६ मात्राओं का	१३ उपभेद
(२)	ठगण,	५ ,, ,,	८ ,,
(३)	डगण,	४ ,, ,,	५ ,,
(४)	ढगण,	३ ,, ,,	३ ,,
(५)	णगण,	२ ,, ,,	२ ,,

१—टगण, छह मात्राओं का उदाहरण — छन्द का नाम

(१)	SSS	गोविन्दा	हर
(२)	IISS	बनवारी	शशि
(३)	ISIS	रमापती	सूर्य
(४)	SIIS	लोकपती	शक्र
(५)	IIIIS	जगतपती	शेष
(६)	ISSI	दयासिन्धु	अहि
(७)	SISI	दीन बन्धु	कमल
(८)	IIISI	जगतनाथ	धाता
(९)	SSII	राधावर	कलि
(१०)	IISII	मुरलीधर	चन्द्र
(११)	ISIII	रमारमण	ध्रुव
(१२)	SIIII	नन्दसुवन	धर्म
(१३)	IIIIII	कमल नयन	शाली

२—ठगण, पाँच मात्राओं का

(१)	ISS	मुरारी	इन्द्रासन
(२)	SIS	श्रीपती	वीर
(३)	IIIS	जगपती	चाप
(४)	SSI	गोपाल	हीर
(५)	IISI	व्रजनाथ	शेखर
(६)	ISII	कृपाकर	कुसुम
(७)	SIII	पापहर	अहिगण
(८)	IIIII	मनहरन	पापगण

३—डगण, ४ मात्राओं का

(१)	ऽऽ	माधो	कर्ण
(२)	।।ऽ	हरिजू	करतल
(३)	।ऽ।	मुकुन्द	पयोधि, मुरारि
(४)	ऽ।।	मोहन	वसुचरण
(५)	।।।।	गिरिधर	विप्र—द्विज

३—ढगण, तीन मात्राओं का

(१)	।ऽ	हरी	रसवास
(२)	ऽ।	श्याम	पौन, नन्द, ग्वाल, ताल
(३)	।।।	अमर	वलय

४—णगण, दो मात्राओं का

(१)	ऽ	श्री	हार, चीर, नूपुर, कुण्डल
(२)	।।	हरि	सुप्रिय

उपर्युक्त मात्रिक गणों की गणना से स्पष्ट है कि छन्दः शास्त्र में दो मात्राओं का भी छंद होता है। दो से लेकर छह मात्राओं के छोटे-छोटे वाक्य, मात्राओं की गणना के अनुसार, उपर्युक्त मात्रिक छंदों में समाविष्ट हो जाते हैं और उपभेदों के अंतर्भूत होकर अपना नाम और स्वरूप निश्चित कर लेते हैं। यह विशेषता हमारे पिंगल शास्त्र में ही पायी जाती है, अन्यत्र नहीं।

एक छन्द में अनेक छन्द

एक छन्द में अनेक छन्द छिपे पाए हैं,
ऐसे कुछ दृश्य इस लेख में दिखाए हैं।

हिन्दी का छन्दःशास्त्र बड़ा वैज्ञानिक तथा व्यापक है। संस्कृत की भाँति इसमें भी दो मात्राओं तक का छन्द माना गया है। इस आधार पर अनेक नये छन्द बनाये जा चुके तथा बनाये जा सकते हैं। यही कारण है कि हिन्दी में जितनी छन्द-संख्या है, उतनी अन्य भाषाओं में नहीं। यहाँ कुछ ऐसे छन्दों या पदों का उल्लेख किया जाता है, जिन्होंने अपने में अनेक छन्दों को समाविष्ट करते हुए, एक विशेष छन्द या पद का रूप धारण किया है। हिन्दी में ही नहीं, उर्दू और अँग्रेज़ी छन्दों में भी यही बात पाई जाती है। कुछ उदाहरण देखिए—

चौपाई

जय जय जय गिरिराज किशोरी, [१६ मात्राएँ और अन्त में २ गुरु]

१. जय, २. जयज ३. जय-जय ४. जयजयगि ५. जय-जय-गिरि ६. जय-जय-जय गिरिरा—७. जय-जय-जय गिरिराज ८. जय-जय-जय गिरिराज कि ९. जय-जय-जय गिरिराज किशो और १०. जय-जय-जय गिरिराज किशोरी।

१. 'जय' (दो मात्राओं का 'सुप्रिय' नामक छन्द। २. 'जयज'- तीन मात्राओं का 'वलय' छन्द। ३. 'जय-जय ४ मात्राओं का 'विप्र' छन्द। ४. 'जय जय गि'—पाँच मात्राओं का पाप गण छन्द। ५. 'जय जय गिरि'—छह मात्राओं का शाली छन्द। ६. जय-जय-जय गिरि रा—१० मात्राओं का 'दीप' छन्द। ७. जय-जय-जय गिरिराज- ग्यारह मात्राओं का 'अहीर' छन्द। ८. जय जय जय गिरिराज कि—१२ मात्राओं का तोमर 'छन्द'। ९. जय जय जय गिरिराज

किशो—१४ मात्राओं का 'सखी' छन्द। जय जय जय गिरिराज किशोरी—१६ मात्राओं का चौपाई छन्द।

पाठकों को 'जय-जय-जय गिरिराज किशोरी' इस 'अर्द्धाली' में उपर्युक्त नौ छन्दों का समावेश देख कर आश्चर्य होगा। १६ मात्राओं की ज़रा-सी चौपाई में कितने छन्द छिपे हुए हैं। चौपाई ही क्यों नीचे लिखे 'दोहे' के एक चरण को देखिये इस में भी यही चमत्कार दिखाई देगा।

दोहा

'आवत ही हरसै नहीं, नैनन नहीं सनेह'

१. 'आव'–तीन मात्राओं का 'नन्द' छन्द। २. 'आवत'–चार मात्राओं का 'वसुचरण' छन्द। ३. आवतही'–छह मात्राओं का 'शक्र' छन्द। ४. 'आवत ही हर'–आठ मात्राओं का 'छवि' छन्द। ५. आवत ही हरसे–१० मात्राओं का 'दीप' छन्द। ६. आवत ही हरसैन–ग्यारह मात्राओं का 'अहीर' छन्द। ७. आवत ही हरसै नहीं–तेरह मात्राओं का 'उल्लाला' छन्द है। इसी प्रकार नैनन नहीं सनेह तथा पूरे दोहे में अनेक छन्द सन्निविष्ट मिलेंगे। पाठकों ने देखा कि आधी चोपाई की तरह, आधे दोहे में भी कितने ही छन्द छिपे पड़े हैं।

पद

चौपाई और दोहे के पश्चात् 'पद' देखिए, इस में भी कितने छन्द छिपे हुए हैं—

प्रभूजी मेरे औगुन चित न धरो—
समदरसी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो।
इक नदिया इक नालि कहावे, मैलोहि नीर भरो,
दोनों मिल जब एक वरन भईं, सुर-सरि नाम परो।

चौपाई और दोहे की तरह उपर्युक्त पद की भी प्रत्येक पंक्ति में अनेक छन्द छिपे हुए हैं, देखिए—

१. प्रभुजी मेरे औगुन चितन धरो—	१८	मात्राओं	का	'राजीवगण' छन्द
२. समदरसी है नाम तिहारो—	१६	मात्राओं	का	चौपाई छन्द
३. चाहो तो पार करो—	१२	,,	,,	शिव छन्द
४. एक नदिया एक नालि कहावे	१६	,,	,,	चौपाई छन्द
५. मैलोहि नीर भरो	११	,,	,,	शिव छन्द
६. दोनों मिल जब	८	,,	,,	छवि छन्द
७. एक बरन् भईं	८	,,	,,	,,
८. 'सुरसरि नाम परो'	१०	,,	,,	दीप छन्द

उपर्युक्त पद के दो-तीन चरणों में अनेक छन्दों की छाया देखकर पाठकों को आश्चर्य होना स्वाभाविक है। और ये पद यदि चौपाई की तरह निरखे-परखे जाएँ तो उनमें और भी अधिक छन्द छिपे मिलेंगे यथा—

१. 'प्रभु', २. 'प्रभुजी', ३. प्रभुजी मे, ४. प्रभुजी मेरे', ५. 'प्रभुजी मेरे औ' ६. प्रभुजी मेरे औगु' ७. प्रभुजी मेरे औगुन, ८. प्रभूजी मेरे औगुन चि, ९. प्रभुजी मेरे औगुन चित, १०. 'प्रभुजी मेरे औगुन चितन, ११. प्रभुजी मेरे औगुन चितन ध, १२. प्रभूजी मेरे औगुन चितन धरो। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रभूजी मेरे औगुन चित न धरो, इस तनक-से चरण में १२ छन्द छिपे हुए हैं और प्रत्येक अक्षर पर छन्द परिवर्तित हो जाता है। परिवर्तित छन्दों की मात्राओं के अनुसार उनके नाम छन्दःशास्त्र में देखे जा सकते हैं। कुछ नाम तो चौपाई, दोहा और उक्त पद का विश्लेषण करते हुए ऊपर दिये भी हैं। हिन्दी का कवित्त, सवैया, गीतिका, हरिगीतिका इत्यादि कोई भी छन्द ले लीजिए, सब की एक-एक पंक्ति में अनेक छन्द छिपे हुए हैं, और मात्राओं की गणना के अनुसार, छन्दःशास्त्र में उनके नाम भी मिल जाएँगे। हिन्दी का कोई भी छन्द ऐसा नहीं जिसमें यह गूढ़ रहस्य न छिपा हो। यदि पिंगल की दृष्टि से विवेचना की जाए तो उर्दू छन्दों में भी यही बात दिखायी देगी। डाक्टर इक़बाल की निम्नलिखित पंक्ति पढ़िए—

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा'

इसमें निम्नलिखित छन्द छिपे हुए हैं—

१. सारे—चार मात्राओं का 'कर्ण' छन्द ।
२. सारेज—पाँच मात्राओं का 'हीर' छन्द ।
३. सारे जहाँ—सात मात्राओं का 'सुगती' छन्द ।
४. सारे जहाँ से—नौ मात्राओं का 'गङ्ग' छन्द ।
५. सारे जहाँ से अच्छा—बारह मात्राओं का 'लीला' छन्द ।
६. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ—१८ मात्राओं का राजीवगण छन्द ।
७. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसताँ हमा—२२ ,, ,, रास छन्द
८. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसताँ हमारा २४ ,, ,, दिग्पाल छन्द

ध्यान पूर्वक देखा जाय तो अँग्रेज़ी छन्दों में भी कई-कई छन्द छिपे हुए हैं—शेक्सपीयर की नीचे लिखी पंक्ति पढ़िए—

Where the bee Sucks there Suck I.

ह्वेअर दी बी सक्स देअर सक आई

१. वेअर—४ मात्राओं का वसुचरण छन्द ।
२. वेअर दी—६ मात्राओं का शक्र छन्द ।
३. वेअर दी बी—८ मात्राओं का छवि छन्द ।
४. वेअर दी बी सक्स—११ मात्राओं का अहीर छन्द ।
५. वेअर दी बी सक्स देअर—१४ मात्राओं का कज्जल छन्द ।
६. वेअर दी बी सक्स देअर सक—१५ मात्राओं का चौपई छन्द ।
७. वेअर दी बी सक्स देअर सक आई—१६ मात्राओं का चौपाई छन्द ।

किसी भाषा के किसी भी छन्द को पढ़िये, सब में इसी प्रकार विविध छन्दों का समावेश पाया जाएगा । पद ही नहीं कवित्त और सवैया भी कई-कई छन्दों के सम्मिश्रण से बनाये गये हैं । यथा 'षटपदी' या 'छप्पय' छन्द का निर्माण 'रोला' और 'उल्लाला' नामक दो छन्दों के योग से हुआ है । 'ध्रुव पद' या 'ध्रुपद' को देखिए इसकी निर्माण-व्यवस्था कैसी सुन्दर है—

ओमनेक वार बोल प्रेम के प्रयोगी ।
है यही अनादिनाद, निर्विकल्प निर्विवाद ।
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी । ओम्...

वेद को प्रमाण मान, अर्थ-योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु-स्वर्ग भोगी। ओम्...
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त,
त्यागते अघी अशक्त, पोच पाप रोगी। ओम्...
शंकरादि नित्य नाम, जो जपे विसार काम,
तो बने विवेक धाम, मुक्ति क्यों न होगी। ओम्...

१. ओम् अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी २२ मात्राओं का 'कुण्डल' छन्द।
२. है यही अनादिनाद—१२ मात्राओं का लीला छन्द।
३. निर्विकल्प-निर्विवाद—१२ मात्राओं का " "
४. भूलते न पूज्यपाद १२ " " "
५. वीतराग योगी— १० ,, दीप ,,

इसी प्रकार यह पद १२+१२+१२ और १० कुल ४६ मात्राओं के योग से बना है। अब उक्त चरणों को दूसरे रूप में पढ़िए—

है यही अनादि नाद निर्विकल्प निर्विवाद, भूलते न पूज्य पाद वीतराग-योगी
वेद को प्रमाण मान अर्थ योजना बखान गा रहे गुणी सुजान साधु स्वर्ग भोगी
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त, त्यागते अघी अशक्त पोच पापरोगी
शंकरादि नित्यनाम जो जपे विसार काम तो बने विवेकधाम मुक्ति क्यों न होगी

ऊपर के रूप ने उसी ध्रुवपद-चरणों से एक 'वर्णवृत्त' छन्द बना दिया। इस में तीस वर्ण हैं और बारह-बारह मात्राओं पर सानुप्रास यति है।

छन्दों की व्यापकता

अभिप्राय यह है कि गणित के वैज्ञानिक आधार पर, जहाँ दो मात्राओं तक का छंद माना गया हो, वहाँ नये-नये सैकड़ों छंदों का निर्माण हुआ और हो सकता है। संसार की किसी भी भाषा का छंद, भारतीय पिंगल-शास्त्र के प्रस्तार से पृथक् नहीं रह सकता। इस हिसाब से सभी भाषाओं के सब छंद हमारे विज्ञान मूलक छंद-शास्त्र के अन्तगर्त आजाते हैं। भारतीय भाषाओं के छंदों पर तो पिंगल का पूरा प्रभाव है ही, क्योंकि परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप में उनका सम्बन्ध संस्कृत से ही है। उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी आदि भाषाओं के

छंदों की पृष्ठ-भूमि भी पिंगल शास्त्र की ही वैज्ञानिकता है। यह बात भी आगे छंद-विज्ञान की कसौटी द्वारा सिद्ध की गयी है।

हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी में लिखा और बोला जाने वाला गद्य भी हिन्दी छन्दः शास्त्र की छवि-छाया के अन्तर्गत ही आजाता है। एक-एक वाक्य और वाक्य-समूह में एक या भिन्न-भिन्न कई छंद छिपे हुए हैं। एक अक्षर भी इधर-उधर किये बिना सारा वाक्य या वाक्यांश किसी न किसी छंद के अन्तर्गत आजाता है। यह छंद सम्बन्धिनी वैज्ञानिकता की ही विशेषता है। संसार में जहाँ-जहाँ छंद है, वहाँ-वहाँ उसे भारतीय छंदःशास्त्र का वैज्ञानिक आधार प्राप्त है, क्यों कि यह शास्त्र संसार में सबसे पुराना है।

हिन्दी छंदों की वैज्ञानिकता और व्यापकता इतनी अधिक है कि संसार का कोई भी छंद और ध्वनि क्यों न हो सब उसके अन्तर्गत आजाते हैं। वस्तुओं, महीनों, वारों, व्यक्तियों, नगरों आदि के नाम भी इसी वैज्ञानिक व्यापकता के कारण, 'छंद' रूप में परिणत हो जाते हैं। किसी भाषा की वर्णमाला और गिनती भी उसके भीतर आजाती है। दो-चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं। सबके नीचे वैसी ही तुकें भी देदी गयी हैं जिससे छंद समझने में कठिनाई न हो। छंद की मात्राएँ गिनकर उसका नाम भी छंद सम्बन्धी ग्रन्थों में बड़ी सरलता से खोजा जा सकता है।

हिन्दी वर्णमाला

अ आ, इ ई, उ ऊ, ए ऐ, ओ औ. अं अः २१ मात्राएँ
क का, कि की, कु कू, के कै, को कौ, कं कः
धर्म्म-कर्म पाल भाई सत्य-सत्य कह।

क ख ग घ ङ | [illegible] यरलव—मतलब
च छ ज झ ञ | शषसह—सच कह
ट ठ ड ढ ण |
त थ द ध न |
प फ ब भ म | क्ष त्र ज्ञ—ध-र्म-ज्ञ

अँग्रेज़ी वर्णमाला

ए बी सी डी ई एफ़ जी
सत्य-साधना कर तू जी
एच आई जे के एल एम एन
है यह सब ईश्वर की देन
ओ पी क्यू आर एस टी यू वी
मेवा खाकर थोड़ा पय पी
डबल्यू एक्स वाई ज़ैड
कभी न होने देंगे क़ैद

उर्दू वर्णमाला

अलिफ़ बे पे ते टे से
जो कुछ मिले सो लेले
जीम चे हे ख़े दाल, डाल
सारा बतला दे तू हाल
रे डे जे जे सीन शीन
क्यों बनता है दीन-हीन
स्वाद ज़्वाद तो ज़ो
एक और एक दो
एन ग़ैन फ़े काफ़
बात कह साफ़-साफ़
गाफ़ लाम मीम नून
कितना निकल गया खून

वाउ हे हे ई ए
दाम मैंने दीए

हिन्दी सप्ताह के दिन

सोमवार, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्रवार, शनिवार,
हुए हमारे भारत में ही, धन्य धर्म्म-'अवतार'।

हिन्दी महीने

चैत, वैशाख, जेठ, आषाढ़, सावन,
तुम ही तो हो निर्धन के धन।
भादों, क्वार, कार्तिक, अगहन,
तन हों पुष्ट और शुचि हों मन।

पूस, माघ, फागुन,
औरों की भी सुन।

अँग्रेज़ी सप्ताह के दिन

सण्डे, मण्डे, ट्यूज़डे, वेंज़डे,
जो कुछ कहें सभी तू सुन ले।
थर्सडे, फ्राइडे, सेटरडे,
धनहीनों को प्रभु धन दे।

अँग्रेज़ी महीने

जनवरी, फ़रवरी, मार्च अप्रैल,
देखो टूट गयी खपरैल।

मई, जून, जौलाइ, अगस्त,
क्या अब सूर्य हो गया अस्त।

सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर,
बताओ हमें आपका है कहाँ घर।

गिनती में छन्द

गिनती में भी छन्द निहारो—तुकबन्दी के सँग उच्चारो।

एक—सेक, 'नन्द',
एक-दो—फेंकदो, 'वीर'
दो-तीन—मत छीन, 'हीर'
तीन-चार—कर विचार, 'कमल'
चार-पाँच—हरा काँच, 'कमल'
पाँच छह—सत्य कह, 'अहिगण'
छह-सात—कह बात, 'शेखर'
सात-आठ—पढ़ो पाठ, 'कमल'
आठ-नौ—साठ जौ, 'वीर'
नौ-दस—पी रस, 'वसुचरण'
एक दो तीन चार—नदी की स्वच्छ धार।
एक दो तीन चार पाँच—रोक दो आए नहिं आँच।
एक दो तीन चार पाँच छह—सब ही बातें तो सच-सच कह।
एक दो तीन चार पाँच छह सात—कहिए कहाँ बिताई भाई रात।
एक दो तीन चार पाँच छह सात आठ—सुघड़ सजीले बने हैं सारे ठाठ।
एक दो तीन चार पाँच छह सात आठ नौ—गेहूँ बिके तीन सेर और आठ सेर जौ।
ग्यारह बारह तेरह चौदह पन्द्रह—कष्ट पड़े तो शान्त होके हँस-हँस सह।
सोलह सत्रह अठारह उन्नीस बीस—देख चुके बड़े-बड़े कई तो रईस।
दस बीस तीस चालीस पचास—जब तक साँस हैं तब तक आस।
साठ सत्तर अस्सी नव्वे सौ—कविता में अब आगयी है रौ।
सैंकड़ा हज़ार लाख कोटि अरब—खरब से आगे क्या रह गया अब।

× × × ×

रत्ती माशा तोला टाँक—ढाई तोला एक छटाँक ।
सेर पँसेरी ढैया मन—पौंड रतल हंडर और टन ।

× × × ×

योजन कोस, मील, फ़रलांग—गज, फ़ुट, इंच, भूमि धन माँग ।
अंगुल हाथ बालिश्त गिरह—सब की ताक-झाँक में रह ।

× × × ×

वन टू थ्री—खा मिसरी । फ़ोर फ़ाइव सिक्स—होना मत मिक्स ।

सेविन एट नाईन टैन,
जैसे-तैसे काटी रैन ।

नाम-धामों में छन्द

व्यक्तियों के नगरों के, वस्तुओं के नामों में,
छन्द-छवि छाई दीखती है सब ठामों में।

नीचे कुछ व्यक्तियों, नगरों आदि के नाम दिये जाते हैं, उनकी तुकें भी लगादी हैं। ये सभी नाम-धाम छंद हैं। मात्राएँ गिनकर सभी छंदों के नाम इसी निबन्ध अथवा छंद सम्बंधी अन्य किसी ग्रंथ में बड़ी आसानी से तलाश किये जा सकते हैं।

	मात्राओं का छन्द		मात्राओं का छन्द
अभिराम राम	८ ,,	पंजाब केसरी लाला लाजपत राय	२१ ,,
गुण-गण-निधान		एक दूसरे की करो सबही सहाय	
भगवान बुद्ध	८ ,,	दादा भाई नौरोजी	१४ ,,
मत ठान युद्ध		बनो सत्य के सब खोजी	
शङ्कराचार्य्य	८ ,,	महात्मा मोहनदास कर्म्मचन्द गाँधी	२२ ,,
कर पुण्य कार्य		चली जन-जागरण की जोरदार आँधी	
श्री कृष्णचन्द	८ ,,	महामान्य राजेन्द्रप्रसाद	१५ ,,
आनन्दकन्द		सबको सदा रहेंगे याद	
भगवान महावीर	११ ,,	पँडित जवाहरलाल नहरू	१६ ,,
मत हो दुखी-अधीर		भारत के हैं प्रधान प्रहरू	
दयानन्द ऋषिराज	१२ ,,	श्री मौलाना अबुल कलाम	१५ ,,
खोला आर्य्यसमाज		अमर रहेगा नामी नाम	
पण्डित मदनमोहन मालवीय	१७ ,,	श्री रफीअ अहमद किदवई	१३ ,,
वन में रमे लक्ष्मण-राम-सीय		कहाँ बसाई दुनिया नई	
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक	१८ ,,	हकीम अजमल खाँ साहब	१४ ,,
व्योम बीच चाँदनी चमकी चिलक		नहीं रहे दुनिया में अब	
योगिराज अरविन्द	११ ,,	विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ	१२ ,,
कैसा सुन्दर छन्द		छोड़ गये हाथ साथ	

नेताजी सुभाष बोस	१३ ,,	सी. एफ़ एण्ड्रूज़	१० ,,
चलना आज आठ कोस		खरबूज़-तरबूज़	
श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन	१६ ,,	ए. ओ ह्यूम	७ ,,
करना नहीं सत्य का खण्डन		कर पग चूम	
शेक्सपियर	६ ,,	हर्बर्ट इस्पैन्सर	६ ,,
दूर न घर		सब के संकट हर	

× × × ×

अहमदाबाद	८ ,,	कलकत्ता	६ ,,
करो आबाद		फल-पत्ता	
मदरास	५ ,,	बम्बई	५ ,,
कर आस		हा दई	
आगरा	५ ,,	लाहोर	५ ,,
भाँगरा		खा और	
प्रयाग	४ ,,	मीरजापुर	७ ,,
सुहाग		सींग दुम खुर	
वाराणसी	७ ,,	भारतवर्ष	७ ,,
खा खाँड़सी		हो उत्कर्ष	
इंगलैण्ड	६ ,,	अमरीका	६ ,,
बजा बैण्ड		रँग फीका	
पाकिस्तान	७ ,,	महाभारत	७ ,,
तोड़ न तान		हुआ आरत	
ज़िन्दावस्ता	८ ,,	रेडिओ	५ ,,
कपड़ा सस्ता		पान लो	
कठौती	५ ,,	मेज़	३ ,,
रघौती		तेज़	
मोटर	४ ,,	बालटी	५ ,,
वोटर		मालती	
फ़ौण्टेन पैन	८ ,,	खाट-खटोला	८ ,,
मिलान पैन		छोड़ा-चोला	
वेद	३ ,,	रामायण	६ ,,
मेद		पारायण	
वाईबिल	६ ,,	कुरान	४ ,,
भाईमिल		पुरान	

खाट ३ ,,
हाट
चकला ४ ,,
हकला
कोट-पतलून ६ ,,
पीस ला चून
साईकिल ६ ,,
पाया बिल
चौका ४ ,,
लौका
चक्की-चूल्हा ८ ,,
टूटा कूल्हा
आटा-दाल ६ ,,
उल्टी चाल
छापाख़ाना ८ ,,
जाना ठाना
हाट-बज़ार ७ ,,
गप्प न मार

चौखट ४ ,,
औघट
सन्दूक ३ ,,
बन्दूक
ट्रंक ३ ,,
पंक
तख्त ३ ,,
सख्त
बटलोई ६ ,,
क्यों सोई
कठौआ ६ ,,
भड़ौआ
रोटी-पानी ८ ,,
कैसी ठानी
क़लम-दवात ७ ,,
बनी न बात

ध्वनियों में छन्द

(Imitative Sound)

नक़ली शब्द

भाषाओं में ही नहीं, ध्वनियों में भी छन्द-छवि छिटकती हुई दिखाई देती है। जब हम सारंगी, सितार, हारमोनियम, वीणा बैण्ड, ढोल आदि में कोई ध्वनि सुनते हैं तो तुरन्त समझ जाते हैं कि यह ध्वनि अमुक पद, छन्द या राग की है इससे स्पष्ट है कि छन्द का सम्बन्ध भाषाओं से ही नहीं, ध्वनियों से भी है, जिनमें शब्दों की सार्थकता को कोई स्थान नहीं है। 'ई ई', ऊँ ऊँ, की'-की' ची'-ची' 'रा रा', 'गा गा', 'पा पा' इत्यादि कोई भी ध्वनि क्यों न हो, सब छन्द उसमें समा जाएँगे। उदाहरण देखिए—

चौपाई, १६ मात्राएँ

रा रा र रा र र र रर रा रा — प्यारा भारत देश हमारा। चौपाई

दोहा, २४ मात्राएँ

रा रा रा रा रा र र र, रा रा रर रा रार।
जा जा कारागार भर, आजा यश विस्तार।

घनाक्षरी छन्द, ३१ मात्राएं

रा र र रा रार रार रार रार रारा र र
रा रा रा ररर रा र रा रा ररा रार रर।
आवत हे जात हे, अनेक वार याही मग
ठाड़े हू रहत हे ठगे से बड़ी देर-देर।

विधाता, २८ मात्राएँ

र रा रा रार रारा रर, र रारा रार रा रा रा
प्रतापी धर्म ही केवल, हमारे काम आएगा।

सगणात्मक सवैया

र र रार र रा र र रार ररा, र र रा र र रा र र रार ररा
अवधेश के बालक चार सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिचरें

उपर्युक्त ध्वनियों के अतिरिक्त कुछ ऐसी ध्वनियाँ भी हैं जो ढोल-धमाके, चोट-चपेट आदि से निकलती रहती हैं, उनमें भी छन्द की छाया मौजूद है। उदाहरण देखिए—

सारे गा मा पा धा नी सा—
देखो टूट न जाए सीसा।
कड़म धूँ, कड़म धू, धूँ धू धस,
काम कर, नाम कर, तज आलस। ठन्न ठनाठन—है छिछलापन।
धड़क, धड़ाम, धूँ धूँ धड़ धड़ धम, झावर झल्लू—सोजा लल्लू
काम करो ज्यादा बात करो कम। खों, खों, खों खों—रोता है क्यों।
ढम्म ढमाढम—पढ़ते हैं, हम। फक फक फक फक—बहुत न तू बक।
ढूँ ठाँ ठस—पीलो रस।
ढड्डर ढड्डर—है अति सुन्दर। झन झन झन झन—शुद्ध करो मन।
कुड़म धूँ—मैं क्यों दूं। ताबड़ तोड़—सात करोड़।
तड़ तड़, तड़-तड़—आगे बढ़ अड़। चिल्लपों—किल्ल क्यों।
खट्ट खटाखट—किया सफ़ाचट।

धम धम धू धू धम धम धू—
इसमें तो आती खुशबू।
धमक धमाधम—नमक नहीं कम।
छिन्न छिनाछिन—लगा नहीं मन।
ताक धिनाधिन—दस तक तू गिन।
हू हड़प हप्प—मार मत गप्प।
फट्ट फटाफट—चिन्ती को रट।
कच्च कचाकच—अब रण मत रच।
धूम धड़ाका—बेटा माका।
टन टन पों पों—रोते हो क्यों ?
अट्ट सट्ट—भद्र भट्ट।
धू धू धू धू—आती बदबू।
खटर-पटर—बना न घर।
धक धक धक धाई—गधे की दुम भाई।
ठिठिक ठिठिक ठिक—करो न अब दिक।

ठूँ ठा ठस—बस कर बस।
चट्ट-पट—जल्दी हट।
फू-फॉय—कबजायँ।
भौंभौंभौं—यह सब क्यों।
हेंचूँ-हेंचूँ—खाल न खेंचूँ।
हीं हीं हीं हीं हीं—हाँ-हाँ शरबत पी।
सी सी सी सी सी सी सी—
तुमने अच्छी करनी की।
कू कू कू कू—अब मत छू तू।
धिक धिक धुकधक धामक्क धस,
अरे बुरे कामों से बच।
चीं चीं ची चीं चीं—मीठा पानी पी।
टिलि टिल टिल—सबसे मिल।
धक धक धक धक धक धक धन्ना—
पोथी का फट जाय न पन्ना।
मैं मैं मैं मैं कैं कैं रें रें—
दान अनाथों को कुछ दे दें।

फूँ फां फक-बहुत न बक।
फुंकार-शृंगार।
भीड़ भडक्का—दे मत धक्का।
खट्ट खटाखट—समझ गया झट
अर रर रर—अति सुन्दर।
धूँ धड़ाम—लो सलाम।
चटाक-पटाक—बनाया पाक।
गुटुरगूँ-क्या कहूँ।
थल्लक-थल्लक—मार न पल्लक।
खी खी खी—पर हितजी।
ह्याऊ ह्याऊ—आओ ताऊ।
आखछीं—दाख दीं।
गटर गटर गटागट—
काम कर लौटो झट।
ताक धिनाधिन—
बीत गया दिन।
था था थैय्या—
कुमर कन्हैया।

हीं हीं हीं ही—गाली क्यों दीं। कुकड़ूँ कूँ—बात कहूँ।
फूँ फाँय फस—बस करो बस। ढम्म ढमाढम—
तिक तिक तिक—मत कर दिक कुछ तो कर कम।
झक झक झक—दहली तक। हा हा हू हू—खुशकुन खुशबू।
अर रर रर—झट पट कर। ताक धिनाधिन—गिनती तो गिन।

ऊपर कुछ ध्वनियाँ ही दी गयीं हैं। इसी प्रकार सब ध्वनियाँ किसी न किसी छन्द में आ जाती हैं। निममित वर्ण और मात्राओं की रचनाएँ, साहित्य में छन्द और संगीत में ध्वनि कहाती हैं। किसी भो भाषा का छन्द क्यों न हो संगीत में वह ध्वनि का रूप धारण कर लेता है। छन्द तो एक ऐसा पात्र है, जिसमें किसी भाषा की भी भावना भरी जा सकती है। छन्द-रचना का सिद्धान्त एक है। उसके रूप-स्वरूप या भेद-विभेद, रचना-क्रम से, भिन्न हो सकते हैं।

यह भिन्नता जब छन्दःशास्त्र की कसौटी पर कसी जायगी तो उसमें अभिन्नता दिखायी देगी। अभिप्राय यह कि जहाँ-जहाँ छन्द है, वहाँ-वहाँ गेयता और ध्वनि है और जहाँ-जहाँ ध्वनि है, वहाँ-वहाँ छन्द पाया जाता है। छन्द-रचना का जैसा वैज्ञानिक आधार हिंदी में है. वैसा अन्य भाषाओं में नहीं। संस्कृत भाषा की बात जाने दोजिए, वह तो हिन्दी तथा अन्य अनेक भाषाओं की जननी ही है।

इस निबंध में यह व्यक्त करने की चेष्टा की गयी है कि हिंदी छंद-रचना के नियम विश्व-व्यापी हैं। जहाँ-जहाँ छंद है, वहाँ वहाँ, किसी न किसी रूप में, पिंगल शास्त्र का ही आश्रय लिया गया है और लेना पड़ेगा। पिंगल सम्बंधी नियमों में जितनी शिथिलता की जाएगी, उतनी ही छंद-रचना सदोष सिद्ध होगी। अपने इस कथन की पुष्टि के लिये, आगामी पृष्ठों में हमने उर्दू, फ़ारसी अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के छंदों की, हिंदी छंदों के साथ समता या तुलना करने का प्रयत्न किया है। तुलना का आधार छंदःशास्त्र की वैज्ञानिकता है। हमारा सौभाग्य है कि पिंगल मुनि ने

छंदों को ऐसा वैज्ञानिक आधार देकर उन्हें सार्वभौम सिद्ध करने में सहायता प्रदान की है। अंग्रेज़ी भाषा के छंद भी पिंगल के वैज्ञानिक आधार पर ही हैं, जहाँ इस वैज्ञानिकता की उपेक्षा की गयी है, वहीं अंग्रेज़ी छंद में शिथिलता आगयी है। अंग्रेजी, फ़ारसी, उर्दू आदि भाषाएँ ही क्यों यदि संस्कृत या हिंदी छंदों की रचना में भी पिंगल शास्त्र के नियमों की अवहेलना होती है, तो उनमें भी शिथिलता आ जाती है, और छंद ग़लत बन जाते हैं। जो पिंगल शास्त्र गणित के वैज्ञानिक आधार पर है, उसमें तो त्रुटि या भूल हो ही नहीं सकती।

संस्कृत काव्य-साहित्य में जो छंद प्रयुक्त हुए हैं, वे हिंदी छंदों की अपेक्षा बहुत कम हैं। हिन्दी में सैकड़ों नये छंद बन चुके और बनाये जा रहे हैं। संस्कृत छंदों में से कुछ छन्दों के नाम नीचे दिये जाते हैं—

गायत्री, पंक्ति, कन्या, विद्युल्लेखा, शशिवदना, सोम राजी, कुमार ललिता, मद लेखा, मधुमती, अनुष्टुप आर्य्या, हंरिण प्लुता, वेगवती, यियोगिनी, क्रौंचपदा, तन्वी, उत्कृति, स्रग्धरा, सुवदना, सुरसा, सुमधुरी, शार्दूल विक्रीडित, मेघ-विस्फूर्जिता, चित्र लेखा, नाराच, नन्दन, शार्दूल ललित, शिखारिणी, हरिणी, रथोद्धता, इन्द्रवंशा, इन्द्र वज्रा, विद्युन्माला, वृहती, मणि मध्य, त्वरित गति, मत्ता, रुक्मवती, उपेन्द्र वज्रा, त्रिष्टुप, गीति, उपगीति, उद्गीति, पुष्पिताग्रा, अपर वक्त्र, पंच कावली, धृति, कुसुमितलता, वेल्लिता, मंदाक्रान्ता, चित्र, वाणिनी, शशिकला, अष्टि, मालिनी, लीला खेल, वसन्त तिलका, वासन्ती, अपराजिता, रुचिरा, मत्त मयूरी, मंजु भाषिणी, प्रहर्षिणी, कलहंस, मालती, प्रमिताक्षरा, भुजंग-प्रयात, मणिमाला, जलोद्धत गति, तामरस, दोधक, भ्रमर विलसित, उपजाति इत्यादि। संस्कृत के इन छन्दों का उल्लेख हिन्दी छन्दः शास्त्र में भी किया गया है। उनके लक्षण और उदाहरण भी दिये हैं। कितने ही संस्कृत छन्द तो हिन्दी काव्य-रचना में भी बड़ी सफलता और सुन्दरता से व्यवहृत हुए तथा हो रहे हैं। हिन्दी

के पास जोकुछ है वह उसकी माता देववाणी की ही देन है। संतोष की बात तो यह है कि माता संस्कृत से प्राप्त इस छंद-सम्पत्ति की हिन्दी ने विशेष वृद्धि करली है और संस्कृत तथा हिन्दी छंदःशास्त्र एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है।

संस्कृत और हिन्दी छंदों की जितनी संख्या-वृद्धि हुई, उतनी अन्य भाषाओं के छंदों की नहीं। भारतीय भाषाओं में, बँगला, गुजराती, मराठी, तामिल, तैलगू आदि का काव्य-साहित्य भगवान् पिंगलाचार्य द्वारा निर्मित छन्दःशास्त्र पर ही आधारित है। फ़ारसी और उर्दू के भी प्रायः सब छंद जिन्हें 'बहर' कहा जाता है, हिन्दी छंदःशास्त्र के अनुसार ही हैं। यद्यपि उर्दू वालों ने 'अरूज़' नामक अपना अलग पिंगल गढ़ लिया हैं, परन्तु इस 'अरूज़' के 'अरकान' हिंदी गणों के सिद्धान्त पर ही हैं। जिस प्रकार हिंदी छंद लघु-गुरु और गणों पर निर्भर हैं उसी प्रकार उर्दू 'अरूज़' का दारोमदार भी 'साकिन' तथा 'मुतहर्रिक' दो संकेतों पर हैं, 'अरूज' पिंगल की सन्तति होने पर भी अधिक वैज्ञानिक नहीं बन सका। फ़ारसी और उर्दू बहरों की रचना का रहस्य प्रायः उनके पढ़ने यानी उच्चारण में है। पढ़ते समय 'बहरों' के अक्षरों को घटाना-बढ़ाना पड़ता है। लघु को गुरु और गुरु को लघु पढ़ना होता है। जिसे उर्दू बहरों के पढ़ने का अच्छा अभ्यास नहीं, वह उन्हें ठीक-ठीक नहीं पढ़ पाता। जहाँ बहरों के पढ़ने या गाने में न्यूनाधिकता होती है, वहाँ उन्हें घटा-बढ़ाकर ठीक कर लेते हैं।

उर्दू बहरें

उर्दू की ऐसी कोई भी बहर नहीं, जो हिन्दी छन्दों में मौजूद न हो। उर्दू के मूल छन्द उन्नीस हैं। इनके भेद-उपभेद मिलाकर ३८० के लगभग बहरें होती हैं। हिन्दी छन्द तो इतने अधिक हैं कि उनकी गणना करना कठिन है। छन्द-प्रस्तार की विधि से हिन्दी में एक-एक छन्द के अनेक भेद-उपभेद हो जाते हैं। यहाँ कुछ उर्दू

बहरों का उल्लेख कर यह दिखाना उद्दिष्ट है कि वे प्रायः हिन्दी छन्दों की ही छाया-माया हैं। इन बहरों को पिंगल की वैज्ञानिक विधि से देखा जाए तो ज्ञात होगा कि वे प्रायः हिन्दी छन्दों का ही आश्रय पाकर पली-पनपी हैं। अगले पृष्ठों में उर्दू बहरों को पढ़िए और उन्हें हिन्दी छन्दों से मिलाइए, तो कोई अन्तर दिखाई न देगा। पिंगल शास्त्र की इस वैज्ञानिकता और व्यापकता की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है।

फ़ारसी, अरबी और उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० मोहम्मद हुसेन आज़ाद ने अपने उर्दू इतिहास—'आबे हयात' में स्पष्ट लिखा है कि "उर्दू ज़बान ब्रजभाषा (हिन्दी) से निकली है और ब्रजभाषा ख़ास हिन्दुस्तानी ज़बान है।" अभिप्राय यह है कि उर्दू हिन्दी का ही एक रूप है। वह कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं, क्योंकि उसका व्याकरण, शब्द-कोष और छन्दःशास्त्र नहीं है। उर्दू ने हिन्दी में से शब्द लेकर, उसके व्याकरण और छन्द : शास्त्र के आधार पर ही अपना सारा काम चलाया है। उसने संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, तुर्की आदि भाषाओं से भी शब्द उधार लिये हैं। उर्दू का निज का कोई शब्द नहीं है। ऐसी दशा में, उर्दू बहरों पर हिन्दी छन्दों का प्रभाव स्वाभाविक है। जिस विधि से बहरों या शेरों की रचना या उनके निर्माण की व्याख्या की जाए, उसे 'अरूज़' कहते हैं। दो मिसरे या चरण मिलकर एक-एक शेर या बेत कहलाता है। हर मिसरा कई 'रुकनों' से मिलकर बनता है। ये 'रुकन' या 'अरकान' आठ हैं।

१. फ़ऊलुन, २. फ़ाइलुन, ३. मज़ाईलुन, ४. मुस्तफ़ईलुन, ५. मफ़ाइलतुन, ६. मुत फ़ाइलुन, ७. फ़ाइलातुन और ८. मफ़ ऊलात।

उर्दू में केवल मात्रिक छन्द होते हैं, वर्ण वृत्त नहीं। मात्राएँ ज़बर, ज़ेर और पेश हैं, जो अ इ उ का काम देती हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं आदि गुरु वर्ण अलिफ़ ये वाव आदि अक्षर

मिलाकर पूरे किये जाते हैं। उपर्युक्त रुकनों का वज़न प्रायः इस प्रकार समझिए—

१. रुक्न—शराफ़त, हज़ूरन, फकीरन, जलेतन, सहारा, बहादुर, जरगर।
२. रुक्न—जा उधर, सरबसर, खरखशा
३. ,, कहो तो कुछ, गवाही है, करम करिए, कहाँ वह है।
४. ,, मरते नहीं; लख्तेजिगर, खन्दाँदहन, प्यारा वतन।
५. ,, चलें न चलें, ग़दर न करें, क़दम ब क़दम।
६, ,, कि कहाँ चले, न अगर मगर, तु जफ़ा करे, न जरर सहूँ।
७. ,, क्या किसी से, मरहबा है, जब तलक मैं, हर क़दम पर।
८ ,, दिल की बात, मतकर घात, है बरसात।

उर्दू में दो मिसरों से शेर बनता है। 'फ़र्द' अकेला शेर कहलाता है। मुसल्लस (त्रिपदी) मुरब्बा (चौपदी) मुखम्मस या खमसा (पंचपदी) मुसद्दस (षट्पदी) रुबाई (चतुष्पदी) आदि इन शेरों के विशेष भेद-उपभेद हैं। 'क़ितअ' कई शेरों के समुच्चय का नाम है। मुस्तज़ाद डेढ़ मिसरे की शेर होती है। 'मसनवी' वह है जिसमें एक ही अनुप्रास के पद्य हों और विषय सुसंगठित हो। कथा-वार्त्ता आदि 'मसनवी' में ही लिखे जाते हैं। 'क़सीदा' वह कविता है जिसमें किसी की निन्दा-स्तुति हो। 'ग़ज़ल' जिसमें कम से कम पाँच और अधिक से अधिक पन्द्रह शेर हों। यह चाहे जिस छन्द में लिखी जा सकती है। इसमें पहले शेर के दोनों चरणों की तुकों में समानता होती है। ग़ज़ल में प्रायः स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव और गुलोबुलबुल का भाव रहता है। अब और भी विषय उसमें रहने लगे हैं। 'मरसिया' में किसी की मृत्यु के भाव प्रदर्शित किये जाते हैं। इसमें चरितनायक की वीरता का भी वर्णन रहता है। परिस्थिति, सवारी, उत्साहशीलता, स्थान आदि सभी की ओर संकेत किया जाता है। 'हज़ल' भड़ौए अथवा हँसी-मज़ाक की कविता का नाम है। उर्दू कविता में 'काफ़िया' और 'रदीफ़' दो चीज़ें होती हैं। नीचे के चरण में काफ़िया और रदीफ़ का उदाहरण देखिए—

स्वदेशी का साहब 'असर' देख लेना,
वह लाएगी ज़र खींच 'कर' देख लेना।

उक्त पंक्तियों में 'असर' और 'कर' काफ़िया है और देख लेना 'रदीफ़'। रदीफ़ की तुक मिलाना ज़रूरी नहीं।

उर्दू वज़नों से यह बात भली भाँति स्पष्ट है कि एक गुरु के स्थान पर दो लघु और दो लघुओं की जगह एक गुरु आ सकता है। हिन्दी की प्रस्तार-विधि की तरह उर्दू में 'तकतीअ' की जाती है। यानी नियत 'रुक्न' के आधार पर किसी बहर के मिसरे की तुलना 'तकतीअ' कहाती है। 'तकतीअ' करते समय आवश्यकतानुसार गुरु वर्ण को लघु मान लेते हैं। यथा– 'भी' को भि; 'किसी' को 'किसि', 'मेरो' को 'मिरी' या 'मेरि' आदि। हिन्दी छन्दों में भी कहीं-कहीं गुरु को लघु मान लेने की छूट है। विशेष कर सवैया में, परन्तु वर्ण वृत्तों में ऐसा नही होता। अस्तु, नीचे लिखा पद्य पढ़िए और उसकी 'तकतीअ' देखिए--

न थी हाल की अपने मुझे जो खबर.
तो में तकता था औरों के ऐबो हुनर।
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र,
तो निगाह में कोई बुरा न रहा।

इसकी 'तकतीअ' इस प्रकार होगी—

न थि हाल कि अपन मुझे जु खबर, तम त क त थ और क ऐव हुनर, पड़ि अपनि बुराइयों पर जु नज़र तु निगाह म कोई बुरा न रहा।

उर्दू कविता में अरबी भाषा के कुछ ऐसे शब्द भी आते हैं जो लिखे जाते हैं और पढ़े जाते है, ये 'मलफ़ूज़ी' कहलाते हैं और कुछ ऐसे शब्द हैं जो लिखे तो जाते हैं, परन्तु उनका उच्चारण नहीं होता। ऐसे शब्दों को 'मकतूबी' कहते हैं। जब 'अकार' के पश्चात् कोई अन्य स्वर आता है, तो आवश्यकतानुसार, कभी-कभी उसका लोप हो जाता है और उसमें अगला वर्ण मिल जाता है। यथा— 'उठालूँ' सख़्तियाँ सौ-सौ कड़ी बात उठ नहीं सकती। प्रवाह की

दृष्टि से यह मिसरा यों पढ़ा जाएगा, "उठालूँ सख़्तियाँ सौ-सौ कड़ी बातुठ नहीं सकती" और इसी हिसाब से इस मिसरे की 'तकतीअ' होगी। हिन्दी के लघु-गुरु की भाँति उर्दू अरूज में 'साकिन' 'मुतहर्रिक' माने जाते हैं। जिस प्रकार लघु-गुरु मिलकर गण बनते हैं, उसी प्रकार 'साकिन' मुतहर्रिक मिलकर 'अरकान' का रूप धारण कर लेते हैं।

नीचे हिन्दी और उर्दू के कुछ छंद दिये जाते हैं। फ़ारसी और अँग्रेज़ी के भी छंद दिये गये हैं। उनमें भी हिन्दी छंदों का आधार स्पष्ट है। ध्यान पूर्वक पढ़ने से पाठकों को प्रतीत होगा कि उर्दू, फ़ारसी तथा अँग्रेज़ी भाषा के छंद-प्रवाह हिन्दी छंदों से मिलते-जुलते हैं यानी वे उन्हीं के दूसरे रूप हैं। दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, गीतिका, हरिगीतिका इत्यादि सब ही छंद उनमें मौजूद हैं। इसी प्रकार फ़ारसी तथा अँग्रेज़ी छंदों में भी हिन्दी छंदों की छवि-छाया स्पष्ट दिखायी देगी। उर्दू या फ़ारसी के शायर चाहें तो हिन्दी पिंगल शास्त्र के अनुसार अपनी बहरों का निर्माण कर सकते हैं। इससे अधिक हिन्दी छंदों की वैज्ञानिकता तथा व्यापकता का प्रमाण और क्या हो सकता है।

फ़ारसी और उर्दू के ही छन्द नहीं, अँगरेज़ी छन्द भी हिन्दी छन्दों की कोटि में आ जाते हैं। उनकी रचना और रूप-रेखा भी हिन्दी छन्दःशास्त्र के आधार पर ही है। आगे चलकर अंगरेज़ी छन्दों की तुलना भी हिन्दी छन्दों से की गयी है। यदि अँगरेज़ी छन्द उनके नीचे लिखे हिन्दी छन्दों के साथ पढ़े जाएंगे तो उनके प्रवाह में बहुत कुछ समता दिखाई देगी। हिन्दी पिंगल में दो मात्राओं तक का छन्द माना गया है, इस लिये उसमें पद्य तो पद्य गद्य भी समा जाता है। फिर यह गद्य हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी, बँगला, गुजराती, मराठी किसी भाषा का क्यों न हो। यहाँ तक कि हमारे मुँह से निकली स्पष्ट या अस्पष्ट प्रत्येक ध्वनि भी छन्द कोटि में ही आ जाती है। किसी भी वाक्य, वाक्यांश या ध्वनि को पिंगल-कसौटी पर कस कर देख लीजिए, छोटा वाक्य एक छन्द

होगा, किन्तु बड़े वाक्य में कई छन्द समाविष्ट होंगे। चाहे ये वाक्य या वाक्यांश किसी भी भाषा के क्यों न हों।

इस निबन्ध में हिन्दी, उर्दू और अँगरेज़ी के कितने ही वाक्य दिये गये हैं, साथ ही उनकी तुकें भी लगा दी हैं, जिनसे स्पष्ट जाना जा सके कि ये वाक्य किसी न किसी छन्द के अंश या रूप हैं और उनमें गेयता है। सम्भवतः इसी लिये 'जीवन' संगीतमय कहा गया है। जब मनुष्य के मुख से निकलने वाली समस्त ध्वनियाँ और वाक्य, वाक्यांश एवम् वाक्यावलियाँ किसी न किसी छन्द का रूप धारण कर गेय बन जाती हैं, तब मानव-जीवन को संगीतमय क्यों न कहा जाय। मनुष्य ही क्यों पशु-पक्षियों के मुख से निकली ध्वनि भी छन्द का रूप धारण कर लेती हैं।

अँग्रेज़ी छन्द-संकेत

अँग्रेजी छन्दः शास्त्र को प्रोसौडी (Prosody) कहते हैं। इस प्रोसौडी में भी 'छन्द' की वही व्याख्या की गयी है जो संस्कृत और हिन्दी में है। अर्थात् लघु-गुरु स्वर और मात्राओं की नियत-नियमित योजना का नाम ही छन्द है—

The arrangements of accents or quantities in a verse is called metre.

अँग्रेज़ी में लघु—शार्ट और 'गुरु'—लाँग 'सिलेबिल' माने गये हैं। गणों के नाम इस प्रकार हैं—

यगण	।SS	Bacchius
रगण	S।S	Amphimacer
तगण	SS।	Anti Bacchius
भगण	S।।	Dactylus
जगण	।S।	Amphi brachys
सगण	।।S	Anapaestus
मगण	SSS	Molossus
नगण	।।।	Tribrachys

अँग्रेज़ी में पारिभाषिक शब्दों की संज्ञा इस प्रकार है—

Metre=छन्द। Syllabic instant=मात्रा। Syllable of two instants=वर्ण। Verse or a poetical line=पद-पाद। Even quarter=समचरण। Odd quarter=विषम चरण। Couplet=दोहा। Triplet=त्रिपाद। Poetry=काव्य या पद्य। Prose=गद्य। Senary=षट्पदी। Ottava rima=अष्टपदी। Monometrical=एक गणात्मक। Dimetrical=द्विगणात्मक। Trimetrical=त्रिगणात्मक। Tetrametrical=चतुर्गणात्मक। Pentametrical=पंचगणात्मक। Hexametrical=षड्गणात्मक। Heptametrical=सप्तगणात्मक। Octometrical=अष्टगणात्मक। Caesura=यति। Versification=पद-योजना। Measure or Definition=लक्षण और नियम। Permutation=प्रस्तार। Possible combination=भेद। Rhythm=ध्वनि। Rhyme=तुकान्त। Alliteration=अनुप्रास। Scanning=लक्षण-विचार।

ऊपर जिन गणों का उल्लेख किया गया है, उनके उदाहरण इस प्रकार हैं—

1.	Monometre	Thus I—Pass by
2-3.	Dimetre and Trimetre	For in my mind of all mankind, I love but you alone.
4.	Pentametre	Of that forbidden tree whose mortal taste.
5.	Hepametre	That like a wounded snake drag its slow length along.
6.	Common metre	O sleep it is a gentle thing. Beloved from pole to pole × × × How doth the little busy bee improve each shining from.

हिन्दी के गणों की भाँति अँग्रेजी में भी गणादि प्रयुक्त हो सकते हैं। यदि गणों के पीछे एक या अधिक लघु-गुरु और भी रखे जाएँ तो ये छन्द Hypermeter कहाते हैं। 'दण्डक' भी Hypermeter कहे जा सकते हैं।

अँग्रेजी छंदों के अनेक भेद-उपभेद हैं। उनके विस्तार की न यहाँ आवश्यकता है और न सार्थकता। इस दिशा में संकेतमात्र किया गया है। हाँ, इतना अवश्य है कि अँग्रेज़ी छंदों का कैसा ही छोटा-बड़ा रूप क्यों न हो, वह हिन्दी छंदः शास्त्र के अन्तर्गत अवश्य आजाएगा। इस पुस्तक में अँग्रेजी छंदों के नीचे उनके समान हिन्दी छंद दिये गये हैं। दोनों साथ-साथ पढ़े जाएँगे तो उनमें बहुत कुछ साम्य प्रतीत होगा। वे बिलकुल एक-से जान पड़ेंगे, क्योंकि उन्हें पिंगल का वैज्ञानिक आधार प्राप्त है।

बात-चीत में छन्द

गद्य की गली में देखो, पद्य का प्रकाश है,
बात-चीत में भी हुआ, छन्द का विकाश है।

साधारणतः जो वार्त्तालाप किया जाता है, उसमें भी पद्य का प्रभाव रहता है। बात-चीत का प्रत्येक छोटा-बड़ा वाक्य किसी छन्द विशेष का रूप धारण कर, संगीत की दृष्टि से, गेय बन जाता है। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं। प्रत्येक वाक्य वैसी ही तुक लगाकर छन्द के रूप में दिखाया गया है। इससे भली-भांति जाना जा सकेगा कि बोला हुआ कोई भी वाक्य किसी छन्द का ही अंग या अंश है, और संगीत के नियमानुसार वह गाया जा सकता है।

कुछ काम करो—सब कष्ट हरो।
खाना खाने जाता हूँ—अभी लौट कर आता हूँ।
कल अवश्य आना—ग्रन्थ साथ लाना।
कहिए इस समय क्या बजा है—उसने सुख-भोग सब तजा है।
हाथ घड़ी की क्या क़ीमत है—क्या इससे समाज सहमत है।
कहाँ का टिकट खरीदा है—मामला तो पेचीदा है।
कहीं फ़ेल मत हो जाना—गन्दी वस्तु नहीं खाना।
क्यों भाई, दस आने लोगे—हमें कैण्ट तक पहुँचादोगे।
खाना बन गया तो खालो—पानीं आ गया तो न्हालो।

अब की बार कोर्स की भाई कई किताबें बदल गयीं;
देखो खबरें छपी हुई हैं इसमें सब ही नयी-नयी।

कितनी खीर खाई थी—खूब आँधी आई थी।
खादी का खरीदना तो बहुत ज़रूरी है,
करनी नहीं तो कोरी कथनी अधूरी है।

कसरत करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है।
संयमी वही जो सुख-दुख सम सहता है।

तुम यह किताब कितनी क़ीमत में लाए।
हैं आसमान में काले बादल छाए।

सबकी मुसीबत है—अब तो रितूबत है।
तशरीफ़ लाइए—खरबूज़ खाइए।
इस्म मुबारक—बात बिलाशक।
साफ़ फ़रमाइए—माफ़ कर जाइए।

ख़ुदा का ख़याल करो।
ख़ुशी से बहाल करो।

काम तो ज़रूरी है—बात ये अधूरी है।
शाक में मिरचें बड़ी पड़ी हैं—बस्तियाँ कितनी ही उजड़ी हैं।

ओ ताँगे वाले बोल, ताज चलना है,
यह सत्य नहीं है दम्भ, कपट, छलना है।

इम्तहान सर पर है अब तो, महनत खूब करें।
अच्छा बनना चाहें तो, हम पाप से डरें।

दूध में पानी मिलाना पाप है—कर्म्म पर सद्धर्म की यह छाप है।

घर-घर में एक-एक गाय पलनी चाहिए।
रात होने पर तेज़ बल्ब जलना चाहिए।

बेचारे भिखारी को चार पैसे दे दो।
जैसे बने उससे किताब अभी ले लो।

कपड़ों को मैला मत करो—प्याले में मिट्टी मत भरो।
तुमको क्या तनुखा मिलती है—हाँ, हृदय-कली अब खिलती है।
बासी खाना मत खाओ—अच्छे गीत सदा गाओ।
डाक्टर ने क्या कहा—व्यर्थ ही संकट सहा।
दर्ज़ी को पैसे देने हैं—धोबी से कपड़े लेने हैं।
खाना नहीं पचता—पैसा नहीं बचता।
चिट्ठी देकर फ़ौरन आना—आकर दूध-मलाई खाना।
कोठी बनवानी है—कार भी मँगानी है।

ट्रेन किस समय छूटेगी—अब न किसी को लूटेगी।
गाय को चारा डाल दो—टूटी खाट को साल दो।
देखो, खिचड़ी खाया करो—देसी पान चबाया करो।
आज दिवाली खूब मनाना—कूए पर जा मल-मल न्हाना।
अक़्ल बेच खाई हैं—कैसी आफ़त आई है।
अम्मा तुम्हें बुलाती है—क्यों नाहक चिल्लाती है।

इन छन्दों के नाम मात्राओं की गिनती के हिसाब से किसी भी अच्छे 'छन्दोग्रन्थ' में सरलता से देखे जा सकते हैं।

Where are yau going.
वेअर आर यू गोइंग—टूटा हुआ है यह शृंग।

What dc you think.
वाट डू यू थिंक—टूट गयी है लिंक।

For this reason.
फ़ौर दिस रीज़न—लगता नहीं मन।

When the bee sucks.
व्हैन दी बी सक्स—खोल दो दो बक्स।

He is gone on the mountain.
ही इज़ गौन ऑन दी माउण्टेन्—छूट गयी कुछ देर पहले ट्रेन।

He will come tomorrow.
ही विल कम टू मारो—हे प्रभु हम को तारो।

what is the price.
वाट इज़ दी प्राइस—चावल या राइस।

Give my paper.
गिव माई पेपर—भज भाई हर-हर।

I made a garland.
आई मेड ए गारलैण्ड—आओ अभी बजाओ बैण्ड

God save us.
गोड सेव अस—आज, पिएँ रस।

This is our country.
दिस इज़ अवर कंट्री—वे हैं यहाँ मन्त्री।

ऊपर जो वाक्य दिये गये हैं, वे प्रायः ऐसे हैं, जिनका प्रयोग नित्य-प्रति की बोल-चाल में, स्वाभाविक रीति से, किया जाता है, परन्तु वे सब किसी न किसी छन्द के अन्तर्गत आ जाते हैं, जैसा कि ऊपर की तुकों से प्रतीत होता है। ये सब छन्द हैं। अब लम्बे वाक्यों को देखिए, इनमें कई-कई छन्द छिपे हुए है।

हिन्दी गद्य में पद्य

बड़े-बड़े वाक्य भी तो छन्द बन जाते हैं,
एक वाक्य में अनेक छन्द दृष्टि आते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

उसके मुँह पर हँसी और माथे पर, गंजी चाँद चमकती रहती। गले से काव्य-रचना की पंक्तियां झरने के समान कलरव करती हुई, झरा करतीं।

उसके मुँह पर हँसी और माथे पर
वह बहुत रात बीते पर आया था घर
गंजी चाँद चमकती रहती
भद्दी-भद्दी गाली सहती

गले से काव्य-रचना की
पिलाता दूध, खिलाता घी
पंक्तियाँ झरने के समान
करुणा करते हैं भगवान

कलरव करती हुई झरा करतीं
भव्य भाव जन-जीवन में भरतीं

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

महाकवि तुलसीदास ऐसा महाकाव्य रच गये हैं कि जिससे हिन्दी साहित्य धन्य हो गया। भारत का गौरव है।

महाकवि तुलसीदास ऐसा महाकाव्य
विश्व के साहित्य में बन गया श्राव्य

रच गये हैं कि
बच गये हैं कि

जिससे हिन्दी साहित्य धन्य हो गया,
अज्ञता-तिमिर अच्छा हुआ खो गया।

भारत का गौरव है
दम्भ-द्वेष रौरव है

आचार्य प्रेमचन्द जी

चुनाव के समय मत-दाता व्यक्ति की सेवा और योग्यता को

देखकर मत दें तो समुचित प्रतिनिधि ही उचित स्थान पर पहुँचेंगे ।

चुनाव के समय मत-दाता   व्यक्ति की सेवा और योग्यता को देखकर
बन सत् साधक सुख-दाता   कच्चे-पक्के जैसे हों बनाते रहो वैसे घर
मत दें तो समुचित प्रतिनिधि ही   उचित स्थान पर पहुँचेंगे
बतलाएँगे अद्भुत विधि ही   सेवा करके ही दम लेंगे

महात्मा गाँधी

रामायण पर मेरा अत्यन्त प्रेम है । मैं तुलसीदास की रामायण को भक्ति-मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ ।

रामायण पर मेरा अत्यन्त प्रेम है   सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ
उससे होता सबका सर्वत्र क्षेम है   मैं ऐसा उसे जानता हूँ
मैं तुलसीदास की रामायण को भक्ति-मार्ग का
धर्म, कर्म, धीरता का शक्ति-मार्ग का

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

भगवान हमारी भावना ही देखते हैं । भक्तों के लिए यही यथेष्ट है । कविता उनके लिए साध्य नहीं साधना मात्र है ।

भगवान हमारी भावना ही देखते हैं   भक्तों के लिये यही यथेष्ट है
साहित्यिक तो शब्द-चित्र लेखते हैं   साधना को सन्त ही सचेष्ट हैं
कविता उनके लिये   साध्य नहीं साधना मात्र है
जो बन सहृदय जिये   धनी कहाँ, निर्धन छात्र है

ऋषि दयानन्द

आज भारत विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है । कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है । विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, पूर्ण सुखदायक नहीं होता ।

आज भारत विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है
पराधीनता के पंजे में पड़ा वेदना बो रहा है
कोई कितना ही करे परन्तु   जो स्वदेशीय राज्य होता है
बिना ज्ञान के बने न सन्त   वही सुख के सुबीज बोता है

सर्वोपरि उत्तम होता है विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो
पड़ा सिसकता है, सोता है प्रेम के प्रसून दे तू काँटे कभी न बो

पूर्ण सुखदायक नहीं होता
त्याग नींद उठ व्यर्थ क्यों सोता

महामना पं० मदनमोहन मालवीय

जिन लोगों का जीवन सुखी है, उन्हें ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए कि सब ही का जीवन ऐसा होगा। एक भाग्यशाली का कर्त्तव्य है कि वह सदा अभागों का ध्यान रक्खे।

जिन लोगों का जीवन सुखी है उन्हें ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए
वे क्या जानें कौन दुखी है जितना दे सकें उतना देना चाहिए
कि सब ही का जीवन ऐसा होगा एक भाग्यशाली का कर्त्तव्य है कि वह
हाँ, हाँ उसका भी तन-मन जैसा होगा सेवा करे समाज की सानन्द सदा रह

सदा अभागों का ध्यान रक्खे,
नहीं अकेला ही रस बो चक्खे

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन

महात्मा गांधी ऐसे महान हुए कि आज विश्व उनके गुण गाता है। भ्रष्टाचार स्वतन्त्रता के लिये बड़ा विघातक है।

महात्मा गांधी ऐसे महान हुए कि आज विश्व उनके गुण गाता है
भारतीयता के अभिमान हुए भक्ति-भाव और श्रद्धा दिखलाता है

भ्रष्टाचार स्वतन्त्रता के लीये बड़ा विघातक है
गांधीवादी शासन को तो निश्चय पूरा पातक है।

लोकमान्य तिलक

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, और उसे हम प्राप्त करके रहेंगे।

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है
योगियों के मन में तो होता न विकार है

और हम उसे प्राप्त करके रहेंगे
उसके निमित्त घोर संकट सहेंगे।

महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन

कुछ काल पहले हिन्दी लेखक बड़ी जानदार हिन्दी लिखते थे, क्योंकि वे उर्दू की शैली से परिचित थे।

कुछ काल पहले हिन्दी लेखक बड़ी
वक्त देखने के लिए साथ लो घड़ी
जानदार हिन्दी लिखते थे
बड़े प्रभावपूर्ण दिखते थे
क्योंकि वे उर्दू की शैली से परिचित थे
शब्द समुचित और भाव भी उचित थे

माननीय राजेन्द्रप्रसाद

एक चीज़ जिसका असर मुझ पर बचपन से ही पड़ा है, रामायण-पाठ है। त्यौहारों में सबसे प्रसिद्ध होली है, गाँवों में धार्मिक जीवन सदैव जगा रहता है।

एक चीज़ जिसका असर मुझ पर
चाहता हूँ शीघ्र आज पहुँच जाऊँ घर
बचपन से ही पड़ा है रामायण-पाठ है
कैसा सुघड़-सजीला यह सुन्दर ठाठ है
त्यौहारों में सबसे प्रसिद्ध होली है
झूठ की तो पोल सबने ही खोली है
गाँवों में धार्मिक जीवन सदैव
बना रहे ऐसी कृपा करे सुदैव
जगा रहता है
सत्य कहता है

सन्त विनोबा भावे

स्वराज्य तो आया पर टिकेगा कैसे। जो लोग यह समझते हैं कि वह सेना के आधार पर टिकेगा तो यह ख्याल ग़लत है। देश टिकता है नागरिकों के चरित्र पर।

स्वराज्य तो आया पर टिकेगा कैसे ?
नदी बहती है, साँप दौड़ता जैसे।

जो लोग यह समझते हैं कि
बेकार वे झिझकते हैं कि

वह सेना के आधार पर टिकेगा, तो यह ख्याल ग़लत है
पक कर बाज़ार में आकर बिकेगा बड़ी बुरी यह लत है
देश टिकता है नागरिकों के चरित्र पर
ध्यान रखना है वाणी विमल पवित्र पर

माननीय जवाहरलाल नेहरू

उन दिनों जीवन के प्रति मेरा दृष्टि-कोण भोगवाद का था। आनन्द के अनुभव और आराम की ज़िन्दगी बिताने की इच्छा को भोगवाद कहा जाता है।

उन दिनों जीवन के प्रति मेरा दृष्टि-कोण
भीष्मजी के बाद ही थे सेनापति द्रोण
भोगवाद का था आनन्द के अनुभव
सूर्य उगता है और छिपता है कब
और आराम की ज़िन्दगी बिताने की
फ़िक्र रहती है नित खाने की कमाने की
इच्छा को भोगवाद कहा जाता है
देखिए नदी में, क्या बहा जाता है।

उर्दू गद्य में पद्य

सर सैयद ग्रहमदखाँ

ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाली उम्मीद, जब कि ज़िन्दगी का चिराग़ टिम-टिमाता है, मिट्टी मिट्टी में मिलने को होती है, तो तेरे ही सहारे वह कठिन घड़ी बड़ी ग्रासान होती है ।

ए हमेशा ज़िन्दा रहने वाली उम्मीद
कौन भला तेरी कर पाएगा तरदीद
जब कि ज़िन्दगी का चिराग़ टिमटिमाता
तब ख़ुदावन्द का खयाल ग्राता है
मिट्टी मिट्टी में मिलने को होती है
तब हो हताश दुखिया दुख से रोती है
तो तेरे ही सहारे वह कठिन घड़ी
जैसे हुग्रा वैसे हाय काटनी पड़ी
ग्रासान होती है
दुख-दर्द खोती है

मिर्ज़ा ग़ालिब

सास ग्रौर सालियों ने ग्रौर साले ने ग्राँसुग्रों के दरिया बहा दिये, खुशदामन साहिबा बलाएँ लेती हैं । सालियाँ खड़ी हुई दुग्राएँ देती हैं । बीबी मानिन्द दीवार चुप है ।

सास ग्रौर सालियों ने ग्रौर साले ने ग्राँसुग्रों के दरिया बहा दिये
मार दिये ग्राठ-दस भील भाले ने हाय हाय कष्ट-क्लेश सहा किये

खुशदामन साहिबा बलाएँ लेती हैं
सालियाँ खड़ी हुई दुग्राएँ देती हैं
बीबी मानिन्द दीवार चुप है
हो रही दिल में धुपकुप है

मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली

अगरचे मिर्ज़ा ग़ालिब की आमदनी क़लील थी, मगर हौसला फ़राख़ था। सायल उनके दरवाज़े से ख़ाली हाथ न जाता था।

अगरचे मिर्ज़ा ग़ालिब की आमदनी क़लील थी
कौए नाचते थे और गाती गीत चील थी
मगर हौसला फ़राख़ था
सभी हो गया खराब था
सायल उनके दरवाज़े से ख़ाली हाथ न जाता था
प्रातःकाल भजन करने को वह मन्दिर में आता था

मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद

इतनी बात तो हर शख्स जानता है कि उर्दू ज़बान ब्रजभाषा से निकली है। और ब्रजभाषा ख़ास हिन्दुस्तानी ज़बान है

इतनी बात हर शख्स जानता है कि
सत्य-स्नेह को तो सारा जग मानता है कि
उर्दू ज़बान ब्रजभाषा से निकली है
आया वसन्त तो सुन्दर कली खिली है
और ब्रजभाषा खास हिन्दुस्तानी ज़बान है
चाय पीली उसने फिर खा लिया पान है

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

मुल्क के लिये कुरबान होना बड़े फ़ख्र की बात है। ऐसा करने से आज़ादी नज़दीक दिखाई देगी।

मुल्क के लिये कुरबान होना
बीज सदा सत्य के ही बोना
ऐसा करने से आज़ादी नज़दीक दिखाई देगी
हाँ, हाँ वह थकी हुई है, बस अब थोड़ा-सा दम लेगी
बड़े फ़ख्र की बात है
कैसी काली रात है,

डाक्टर इक़बाल

शायरी को सुनकर हर दिल में रंज, खुशी, जोश का असर

पैदा होता है। यही ख़ुसूसियात शायरी को साइंस से मुमताज़ कर देती है।

शायरी को सुनकर हर दिल में
साँप घुस जाता है बिल में
रंज-ख़ुशी जोश का असर पैदा होता है
दुख-दर्द दिल का तुरन्त वह खोता है
यही ख़ुसूसियात शायरी को
फेंक मत देना डायरी को
साइन्स से मुमताज़ कर देती है
जीवन को शुद्धता से भर देती है

अँगरेज़ी गद्य में पद्य

ग्लैडस्टन

The politician tries to find where the people are. in order that he may stand with them while the statesman tries to find where God is in order that he may stand with him.

दी पोलीटीशियन ट्राइज टु फ़ाइण्ड वेअर,
बतलाओ हमको जाना है कब घर।
दी पीपिल आर इन आर्डर दैट ही मे इस्टैण्ड विद दैम
डोग है कुत्ता, बिल्ली कैट, पूछ रहे हैं कुशल-क्षेम
वाइल दि इस्टेट्समैन ट्राइज़ टु फ़ाइण्ड
छोड़ क्यों न देते हो, अब उसका पिण्ड
वेअर गौड इज़ इन आर्डर दैट ही मे इस्टैण्ड विद हिम
मोटे मानसों को कहते हैं फ़ैट हो रही है अब रिम-झिम

एडीसन

Mirth is like a flash of lightening that breaks through a gloom of cloud and glitters for a moment.

मर्थ इज़ लाइक ए फ़्लैश आफ लाइटनिंग
बादशाह अँगरेज़ी में कहलाता है किंग
दैट ब्रेक्स थ्रू ए ग्लूम आफ़ क्लाउड
मन्द-मन्द बोलो, मत होओ तुम लाउड
एण्ड ग्लिटर्स फ़ौर ए मोमेंट
कितनी दूर रहा है कैण्ट

रोमाँ रोलाँ

Action is the end of thought. All thoughts which do not look towards action are abortion and treachery.

एकशन इज़ दी एण्ड आफ़ थौट
देखो दूध रहा है औट

आल थौट्स विच डू नौट लुक
अरे चलो तुम थोड़ा झुक
टुवर्डस एक्शन—हो पावन मन
आर एबोर्शन एण्ड ट्रेचरी
बड़ा कष्ट है, हाय मरी

लायड जार्ज

The fault of a business man and of politician is [that they do not wipe their glasses often enough. The result is that they do not see clearly.

दी फ़ोल्ट आफ़ ए बिज़िनैस मैन
चिन्ता में कब किसको मिलता चैन
एण्ड आफ़ पोलीटीशियन इज़ दैट
पहनो पगड़ी उतारो भाई हैट
दे डू नाट वाइप देअर ग्लासेज
आम लोग कहलाते हैं मासेज
औफिन एनफ़ दी रिज़ल्ट
सारी सत्ता को दो पल्ट
इज़ दैट दे डू नॉट सी क्लीअरली
खिचड़ी-खीर ठूस कर भरली

इमर्सन

What I must do is all that concerns me not what the people think. This rule equally arduous in actual and intellectual life.

वाट आई मस्ट डू इज आल दैट
कुछ टोपी पहनो और कुछ पहनो हैट
कन्सर्न्स मी नाट वाट दी पीपिल थिंक
कोई बात नहीं हैं, भाइ टूट जायगा डंक
दिस रूल ईक्वैली आरडुअस इन
अभी तो दिवाली के हैं पूरे दस दिन
एकचुअल एण्ड इनटलेक्चुअल लाइफ़
मिल-जुल काम करो, साथ रहें वाइफ़

सी० एफ० एण्ड्रूज़

For Gandhi's mind was one of the greatest I have ever known and his character also was true and pure.

फ़ौर गाँधीज़ माइण्ड वाज़ वन ग्राफ़ दी ग्रेटेस्ट
ख़बर सुनायी गयी है यह तुम को लेटेस्ट
ग्राई हैव एवर नोन एण्ड हिज़ कैरेक्टर
बार-बार ग्राते हो क्यों भाई कहो मेरे घर
ग्रालसो वाज़ ट्रू एण्ड प्योर
तुम-सा पाया मित्र न ग्रौर

मुसौलिनी

Rulers might be elegant and agreeable but if the people under their sway remain hungry, cold, naked in the midst of abundance, then the rulers are incompetant if not worse.

रूलर्स माइट बी एलीगेंट — रिमेन हग्री कोल्ड
बनें न वे कोरे एजेंट — स्वर्ण कहो या गोल्ड
एण्ड एग्रीएबिल बट — नेकेड इन दी मिडिस्ट
क्यों बैठा है फ़ौरन हट — जो हो तुम को इष्ट
इफ़ दी पीपिल ग्रण्डर देग्रर स्वे — ग्राफ़ एबण्डैन्स दैन दी रूलर्स
इस विधि तू क्यों बकता है रे — श्रेष्ठ बनो तप-त्याग साध कर
ग्रार इनकम्पीटेंट, इफ़ नाट वर्स
क्या पाया पर सेंट दीजे बेग दर्स

श्री ग्ररविन्द

Thoughts builds the universe, the mind alone is real, all that is seen is but a dream.

थौट बिल्ड्स दी यूनीवर्स
इससे ग्रधिक ग्रौर क्या हर्ष
दी माइण्ड ग्रलोन इज़ रीयल
है मिष्ट स्वाध्यकर यह जल
ग्राल दैट्स सीन इज़ बट ए ड्रीम
विश्वम्भर है ग्रमित-ग्रसीम

बर्नार्ड शा

He that takes the sword shall be perished by sword. It is dangerous to be too good man.

ही दैट टेक्स दी सोर्ड — शैल बी पैरिश्ड बाई सोर्ड
पढ़ लो साईन बोर्ड — भग कर दिया है शिक्षा बोर्ड

इट इज़ डेञ्जरस टु-बी टू गुड मैन
शान्ति से सब को मिलता है सुख-चैन

बेकन

Reading maketh a full man, conference a ready man and writing an exact man.

रीडिंग मेकैथ ए फुल मैन कानफ़रेन्स ए रेडी मैन
धर्म्म करो पाओ सुख-चैन है सब परमेश्वर की दैन
एण्ड राइटिंग एन एकज़ क्ट मैन
वह है बहुत पुरातन जैन

शेक्सपीयर

Poetry is the speaking picture and painting is a mute poetry.

पोइट्री इज़ दी इस्पीकिंग पिकचर एण्ड पेंटिंग इज़ ए म्यूट पोइट्री
अबतो जाना है हमको घर प्रभु दे तुमको विद्या-बल भी

विक्टर ह्यूगो

Sublime art is created when a great genius is also a great man.

सबलाइम आर्ट इज़ क्रिएटेड वैन
उसने खूब मिलाए नैन
ए ग्रेट जीनियस इज़ आलसो ए ग्रेट मैन
कहाँ से खरीद कर लाए हो बताओ पैन

हर्बर्ट इस्पैन्सर

Every man has freedom to do all that he wills; provided he infringes not the equal freedom of any other man.

एवरीमैन हैज़ फ्रीडम टू डू आल दैट ही विल्स प्रोवाइडेड ही
ब्याह हुए तो बीत गये दस साल दूध नहीं तो मठ्ठा ही पी
इनफ़्रिंजेज़ नॉट दि ईक्वल फ्रीडम आफ़ एनी अदर मैन
छाया हुआ है मोह महातम काटो अब तो यह रैन

कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ

Man's mistakes and failures have been many leaving their ruines on the way along which he came.

मैन्स मिस्टेक्स एण्ड फेल्योर्स हैव बीन मैनी
मुझको लोगों की बहुत वस्तु हैं दैनी

लीविंग देअर रूइन्स आन दी वे एलौंग
सत्य-धर्म के साधक होकर ढाओ मत ढौंग
विच ही केम—सच्चा प्रेम

महात्मा गांधी

I have no body guard God alone keeps vigil over me. Some think me crazy and some fool because of my love for my enemies but it is very foundation of my whole life's work and creed.

आई हैव नो बौड़ी गार्ड
कैसा अच्छा है यह वार्ड
गौड अलोन कीप्स विजिल ओवर मी
जितनी माँगी खीर मैंने उतनी दी।
सम थिंक मी क्रेज़ी एण्ड सम फूल
ऐसी क्यों करते हो भूल
बीकौज़ आफ़ माई लव फ़ौर माई
पुस्तक तुमने कब मँगवाई
एनीमीज़ बट इट इज वैरी
ग्राम-ग्रामले थे, कुछ कैरी
फौण्डेशन आफ, माई होल लाइफ़
पत्नी कहो या जोज़ा-वाइफ़
वर्क एण्ड क्रीड
चन्द्रापीड

डाक्टर राधाकृष्णन

Philosoply is an intellectual attempt to understand the realty. Religion is the conquest of fear, the antidote to failure and death.

फ़िलौसोफ़ी इज़ एन इटैलैक्चुअल अटैम्पृ
जैसी जनता है वैसी ही है गवर्नमेंट
टु अंडरस्टेंड दी रीयलटी
जितना चाहे उतना घी पी
रिलीजन इज़ दी कंक्वैस्ट आफ़ फ़ीयर
गप्प मारने का नहीं है यह अवसर
दी ऐंटीडोट टू फ़ेल्यौर एण्ड डैथ
खड़े हो गये हो क्यों जल्द जाओ बैठ

मन्त्रों में हिन्दी छन्द

हिन्दी छन्द मन्त्र-चरणों में भी निज शीश झुकाते हैं,
ऐसी कुछ समुचित समताएँ निम्न रूप में पाते हैं।

शन्नो देवी रभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये
त्याग-त्याग कर भौतिक तन, जगती से चले गये

शंयो रभिस्र वन्तुनः—सत्य वचन ही बोलना

स्वस्ति मित्रा वरुणा, स्वस्ति पथ्ये रेवति
करो भाई करुणा, हो गृहस्थ या कि यति

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि
भारत-भूमि कभी थी भाई त्याग-तप खानि
भर्गों देवस्य धीमहि—वहुत गयी थोड़ी रहि

धियो योन : प्रचोदयात्—बीती बातें कर न याद

सनो बन्धुर्जनिता स विधाता
धन्य भगवान्, तू पिता-माता

धामानि वेद भुवनानि विश्वा
काम बन गया है बीस बिस्वा

अग्नि मीड़े पुरोहितम. यज्ञस्य देव मृत्विजम्
मोटा पहन और खा कम, तू न रहेगा फिर निर्धन

होता रं रत्न धातमम्—काम करो पर बोलो कम
यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवम्—पुस्तक पढ़ दूर हो जायगा भ्रम
तन्मेमनः शिव संकल्प मस्तु—कहिए कहाँ से मँगाई वस्तु
सनःपवस्व संगमे, शंजनाय शमर्वते—दीनों को तू दान दे, खोज-खोज कर पते

असतो मा सद गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय
रहो सदा सब अभय, सत्य की ही होती जय

अपाणि पादो जवनो ग्रहीता :
श्रीराम की थी पत्नी सु-सीता

सहना ववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव है
वह है अशक्त वह है सशक्त कौन किसी के साथ रहे

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकम्
बीत गयी अब रात त्यागो मोहतम

एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः—विद्या विना बन गये हाय मूढ़ :
अभयं मित्रादमयं मित्रा, दभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्
वह देवी है परम पवित्रा, क्यों करता है रे ऐसी बात

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
अन्याय-अनर्थों को मत सहना तुम अब

हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे
समस्त जनता शुचि सत्य धारे

भूतस्य जातः पतिरेक आसीत,
गायें न केवल सत्कर्म के गीत

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते
कुछ न कुछ तो दे सदा, दीन जन हैं माँगते

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः
तुम्ही माता-त्राता तुम्हीं हो हे प्रभुजी पिता

तच्चक्षुर्देव हितम्—ज्यों-ज्यों बच पाए हम
पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत—धारो सदा सत्य व्रत

तया मामद्य मेधयाग्ने मेधा विनं कुरु
मानो या मत मानो, हैं वे अपने गुरु

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः
वही है हम सबका स्रष्टा, पालक, पोषक पिता
देवेभिर्मानुषेजने,—वहाँ मिलेंगे चने घने
"शंनों देवः सविता त्रायमाणः
क्या कर सकेंगे ये अल्प प्राणः
शंनो भवन्तूषसो विभाती—चिन्ता बड़ी है पाकर न पाती

अमृतोपस्तरण मसि स्वाहा—हुआ वही जो सबने चाहा

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम् मुखम्
बड़े-बड़े योधा आ बैठे, ठोक-ठोक कर खम

मा गृधः कस्य स्विद्धनम्
जप,तप, त्याग, विनय, यम, संयम

पूर्ण मदः पूर्ण मिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते
शुभ कर्म्मों में निरत रहो, करो न फल की आश अरे

शंन्नो मित्रः शंवरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा
थोड़ा-थोड़ा खर्चो तुम, कुछ तो धन हो जाय जमा

ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः—बड़ी सुन्दर यह उक्ति :
आचार : परमो धर्म्मः—कहिए कहाँ गये वर्मा

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे
जब लोग जागे, भागे-अभागे

भूतस्य जातः पतिरेक आसीत
सबके बनो सत्य स्नेही सुमीत

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा
करते रहो लोक की नित्य सेवा

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
पोथी पढ़ो किन्तु फाड़ो न पत्रा

स्वस्ति पन्था मनुचरेम
पूछो उनसे कुशल-क्षेम

सूर्य्याचन्द्र मसा विव
हे भगवान् सदा शिव

शौच सन्तोष तपः स्वाध्याय
इसका कोई नहीं उपाय

अहरह सन्ध्यामुपासीत—आओ मिलजुल गाएँ गीत
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति
भूल गये हो तो फिर गिनो गिन्ती

मातृमान पितृमानाचार्य्यमान पुरुषो वेद
स्वाध्याय, सत्संग करना छोड़ दिया है अति खेद
तत्राहिंसा सत्यास्त्येय—कितनी चीज़ें हैं विक्रेय
ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः—दुनिया मे वह खूब रमा

विश्वं भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्य वक्षा जगतो निवेशनी
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्दु ऋषभा द्रविणे नो दधातु—अथर्व

× × × ×

है शोचनीया सबकी अवस्था, दुख-आपदाएँ छाई हुईं घनी
प्रभो करो शान्ति मयी व्यवस्था, जाएँ कहाँ प्राणों पर आबनी

× × × ×

ओम् भूर्भुवः स्वः—शुद्ध रह सत्य कह
तत्सवितुर्वरेण्यम्—धार सदा यम-नियम
भर्गो देवस्य धीमहि—बहुत गयी थोड़ी रही
धियो योनः प्रचोदयात—अब न बिताओ व्यर्थ रात

गुजराती-मराठी-बंगाली

गुजराती, बंगाली और मराठी में ममता देखो,
हिन्दी छन्दों की तीनों में स्वयम् सिद्ध समता देखा ।

गुजराती, मराठी, बंगला, तामिल, तैलगू आदि भाषाएँ तो छन्दों के लिये पिंगल (छन्द) शास्त्र का ही आधार स्वीकार करती हैं, अत: उनके छन्दों का तो वही स्रोत अथवा आधार है, जो हिन्दी का है । ऐसी दशा में उपर्युक्त भाषाओं के छन्दों और हिन्दी छन्दों में साम्य होना तो स्वाभाविक ही है । अतएव इस निबन्ध में इन भाषाओं के छन्दों की व्याख्या करने की विशेष आवश्यकता नहीं समझी गयी । यथा—

१

बैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाणे रे—गुजराती
सज्जनता से जीवित रहिए, ईश्वर के गुण गाओ रे—हिन्दी

२

भूतल भक्ति पदारथ मोट्टुँ, ब्रह्मलोक में नाहींरे—गुजराती
जल, थल और आकाश खखोरा, पर तू दृष्टि न आयारे—हिन्दी

३

ऋषि पत्नीए श्री हरि काजे, तजिया निज भरथार रे
तेमा तेनु कंईए न गयूँ, पामी पदारथ चार रे—गुजराती
भाई, जन-जनता की सेवा, करो प्रमाद विसार रे
कर्म करो, फल पर न किसी का हुआ कभी अधिकार रे—हिन्दी

४

ऋतु लता पत्र फल-फूल आपे यथा
मानवी मूर्ख मन व्यर्थ शोचे

जेहना भाग्ययाँ जे समय जे लख्यूँ
तेहने ते समे तेज पौंचे—गुजराती

दानवीरो, उठो खोल दिल दान दो, लोभ संकोच मन में न लाओ,
भूख से प्राण त्यागे न कोई अरे, शीघ्र मरते हुओं को बचाओ।—हिन्दी

५

हरि नो मारग छे शूरा नो, नहिं कायर जू काम-जोने—गुजराती
क्यों जाते हो अरे वहाँ तुम बिना बात बदनाम होने।—हिन्दी

६

मारी नाव तमारे हाथे हरि सँभाल जोरे—गुजराती
बीज प्रेम के वोता चल तू जीवन व्यर्थ न खोरे।—हिन्दी

७

करुणाकर वरदायक हरि जो ठेवित हात शिरी—मराठी
तेरी चरण-शरण-रज पाकर मैं भगवान तरी।—हिन्दी

८

महारासी शिवे कोपे ब्राह्मण तो नव्हे—मराठी
सारी दूनिया सोती है तब ज्ञानी जन जगे।—हिन्दी

९

हरि भजन वीण काल घालवूँ नकोरे—मराठी
रात–दिन सभी जन 'ओम्-ओम्' कहोरे।—हिन्दी
दुःख मूल हा संसार तया मध्ये भक्ती सार—मराठी
जनता का कर उद्धार। सब जीवों पर करो प्यार।—हिन्दी

१०

शेवटीची विनवणी सन्त जनों परिसावी,
विसर तो न पड़ावा, माझा देवा तुम्हांसी—मराठी
सुनने को कष्ट-कथा, भीड़ लगी थी खासी
सिर धुन-धुन रोती थी, हा, अबला दुखियासी—हिन्दी

११

रजनी जशे ने प्रभात उजलशे, ने स्मित करशे प्रेमाल
दिव्य गणोनां वदन मनोहर, मारे हृदय वस्यां चिरकाल—मराठी

हे जगदीश देव करुणाकर, करिए भक्तों का उद्धार
धर्म-कर्म का मर्म समझकर, वर्तें सब से प्रेम प्रसार ।—हिन्दी

१२

ग्रह तारक चन्द्र तपन व्याकुल द्रुत वेगे ।
धरती पर झरे निर्झर मोहन मधु शोभा ।
जीवन जखन शुकाये जाय—सकल माधुरी लूकाये जाय ।
—बंगाली

१३

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे । —बंगाली

१४

बहे निरन्तर अनन्त आनन्द-धारा
बाजे असीम नभमाझे अनादिरव
जागे अगण्य रवि-चन्द्र तारा ।—बंगाली

१५

तुमि बन्धु, तुमि नाथ, निशदिन तुमि आमार,
तुमि सुख तुमि शान्ति, तुमि हे अमृत पाथार ।
एकटि नमस्कारे प्रभु, एकटि नमस्कारे,
सकल देह लुटिए पडुक तोमार ए संसार ।
—बंगाली

१६

जनगण-मन-अधिनायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता,
पंजाब सिन्धु गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग ।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल-जलधि तरंग,
तब शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे ।
गाहे तब जय गाथा । —कवीन्द्र रवीन्द्र

[ये बंगाली छन्द हिन्दी छन्दों से स्पष्ट मिलते-जुलते हैं । उनकी तुकबन्दी की आवश्यकता नहीं]

उर्दू में हिन्दी छन्द

उर्दू शायरी ने हिन्दी छन्द अपनाए हैं,
ऐसे भाव नीचे दे उदाहरण दिखाए हैं।

नीचे उर्दू के महाकवियों की कुछ शेरों के साथ हिन्दी छन्दों की समता दिखायी गयी है, हिन्दी छन्दों के नाम नहीं दिये। वे इसी अध्याय में 'छन्द-निरूपण' शीर्षक के नीचे दिये छन्दों की सूची में, मात्राएँ गिनकर, खोजे जा सकते हैं। वहाँ समता सूचक सब हिन्दी छन्दों के नाम दे दिये गये हैं।

१. 'सौदा'

(१)

सौदा जहाँ में आके कोई कुछ न ले गया,
जाता हूँ, एक मैं ही दिल पै आरज़ू लिये।

× × × ×

भारत का भाग्य जागा था, पर, हाय सो गया,
कैसे कहूँ कि देश का कल्याण हो गया।

(२)

मेरी आँखों में तू रहता है, मुझको क्यों रुलाता है,
समझ कर देख ले अपना भी कोई घर डुबाता है।

× × × ×

दया का दान करने को जिन्होंने जन्म धारे हैं,
वही त्यागी-तपस्वी सन्त सबके प्राण प्यारे हैं।

२. 'मीर'

(१)

बारे दुनिया में रहो ग़मज़दा या शाद रहो,
ऐसा कुछ करके चलो, याँ कि बहुत याद रहो।

× × × ×

स्नेह सद्भाव से हृदयों को हाँ, भरपूर करो,
शत्रुता त्याग दो, दुर्भाव-दम्भ दूर करो।

(२)

इब्तदाए इश्क़ है, रोता है क्या,
आगे-आगे देखिए, होता है क्या।

× × × ×

भारती की भव्यता क्यों खो गयी,
हाय, जगती ज्योति कैसे सो गई।

३. 'दर्द'

हरदम बुतों की सूरत, रखता है, दिल नज़र में,
होती है, बुत-परस्ती अब तो खुदा के घर में।

× × × ×

भगवान तेरी सत्ता छाई है, विश्व-भर में,
व्यापक है, हे दयामय तू ही तो चर-अचर में।

४. 'इन्शा'

(१)

एक तिफ़्ल दबिस्ताँ है फ़लातूँ मेरे आगे,
क्या मूँ है अरस्तू जो करे चूँ मेरे आगे।

× × × ×

नैराश्य त्याग वीर बढ़ो देर मत करो,
पीड़ित प्रताड़ितों के संकट सभी हरो।

(२)

भर-भर छाजों, बरसत नूर,
रद्द बलैयाँ दुश्मन दूर।

× × × ×

शङ्कर शैल-सुता के लाल,
जय लम्बोदर वेश विशाल।

(३)

कमर बाँधे हुए चलने को याँ सब यार बैठे हैं,
बहुत आगे गये, बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं।

× × × ×

विधाता तू हमारा है, तुही कल्याण दाता है,
विना तेरी दया कोई नहीं आनन्द पाता है।

५. 'नज़ीर'

मग़रूर न हो तलवारों पर, मत भूल भरोसे ढालों के
सब यहाँ तोड़के भागेंगे, मुँह देख अजल के भालों के।

× × × ×

क्यों व्यथित-विकल घबराते हो, भगवान तुम्हारा भला करे,
वह दीनबन्धु करुणा-निधान, दुखियों के संकट-त्रास हरें।

६. 'नासिख़'

(१)

मरतबा कम हिर्से रिफ़अत से हमारा हो गया,
आफ़ताब इतना हुआ ऊँचा कि तारा हो गया।

× × × ×

मैं दीन-दुखिया दुःख से कातर हुई रोती रही,
उठती रही गिरती रही जगती रही सोती रही।

७. 'आतिश'

(१)

दहन पर हैं, उनके गुमाँ कैसे-कैसे,
कलाम आए हैं, दरमियाँ कैसे-कैसे।

× × × ×

प्रभो, शंकरानन्द आनन्द दाता
मुझे क्यों नहीं, बन्धनों से छुड़ाता।

(२)

तेग़ में जौहर कहाँ, यह अब्रुए खमदार के,
ज़ख़्म दिखलाई नहीं देते हैं, इस तलवार के।

× × × ×

धर्म-रक्षा के लिये सर्वस्व अर्पण कीजिए,
दीन-दुखियों, पीड़ितों को नाथ आश्रय दीजिए।

८. 'ज़ौक़'

(१)

किसी बेकस को ऐ बेदाद, गर मारा तो क्या मारा,
जो आपी मर रहा हो, उसको गर मारा तो क्या मारा।

× × × ×

प्रतापी धर्म ही केवल हमारे काम आएगा,
वही शुभ दिन दिखाएगा, वही बन्धन छुड़ाएगा।

(२)

आँखें मेरे तलुओं से वो मल जाय तो अच्छा,
वह हसरते पावोस निकल जाय तो अच्छा।

× × × ×

जो सत्य बोलता है तो उसको कहो अच्छा,
बूढ़ा हो, बड़ा हो या युवक हो या हो बच्चा।

९. 'ग़ालिब'

(१)

दमे वापसीं बरसरे राह है,
अज़ीज़ो, अब अल्ला ही अल्लाह है।

× × × ×

विकट वीर है, युद्ध की चाह है,
हृदय में भरा उष्ण उत्साह है।

(२)

हविस को है निशाते कार क्या-क्या,
नहो मरना तो जीने का मज़ा क्या।

× × × ×

अरे इस कष्ट से कुछ तो उबारो,
मुझे इस भाँति भाई, मत विसारो।

(३)

कोई उम्मीद बर नहीं आती,
कोई सूरत नज़र नहीं आती।

× × × ×

दशा कुछ भी कही नहीं जाती,
देख कर फट रही मेरी छाती।

१०. 'अनीस'

(१)

नमूदो बूद आक़िल हुबाब समझे हैं।
वो जागते हैं जो दुनिया को ख़्वाब समझे हैं।

× × × ×

हमारे देश को जो लोग बुरा कहते हैं,
पक्षपाती हैं, सचाई से दूर रहते हैं।

११. 'दबीर'

घर कौनसा बसा कि जो वीराँ न होगया,
गुल कौनसा हुआ कि परेशाँ न हो गया।

× × × ×

वह मन ही क्या जिसको न शुद्ध भावना भाए,
वह धन ही क्या, जो राष्ट्र के कुछ काम न आए।

१२. 'नसीम'

जब न जीते जी मेरे काम आयगी,
क्या ये दुनिया आक़बत बख़्शाएगी।

× × × ×

सत्य-सत्ता जब न आदर पायगी,
देश की तब क्या दशा हो जायगी।

(२)

आवेगा तो दर गुज़र करूँगी,
वरना मैं बहुत-सा शर करूँगी।

× × × ×

जो वस्तु नयी निकालते हैं,
भूलों की भूल टालते हैं।

१३. 'दाग़'

(१)

कभी फ़लक को पड़ा दिल जलों से काम नहीं,
अगर न आग लगादूँ तो दाग़ नाम नहीं।

× × × ×

हमारा देश है, पर, उसका हमें ध्यान नहीं,
मनुष्य कैसे कहें जिसको अपना मान नहीं।

(२)

जहाँ लग गयी कारगर हो गई,
मेरी आह तेरी नज़र हो गई।

× × × ×

सदा शंभु भोला मनाया करो,
पड़े जीत के गीत गाया करो।

१३. 'हाली'

(१)

एक रोशन दिमाग़ था न रहा,
शहर में एक चिराग़ था न रहा।

× × × ×

मान ले अब भी तू मेरा कहा,
तेरे कारण ही मैंने संकट सहा।

(२)

वो शेर, ओ, क़सायद का नापाक दफ़्तर,
अफ़ूनत में संडास से जो है, बदतर।

× × × ×

सुनाओ, स्वरचना हमें मित्र कविवर,
सुनाए बिना जाने देंगे नहीं घर।

(३)

उरूज इनका जो तुम अयाँ देखते हो,
इन्हें बरतरज़ आस्माँ देखते हो।

× × × ×

कृपा कर हमें नाथ, अब तो उबारो,
बहुत कष्ट भोगा, दया द्रुत प्रसारो।

(४)

जहाँ में हाली किसी पै अपने सिवा भरोसा न कीजिएगा,
ये भेद है, अपनी ज़िन्दगी का बस इसका चर्चा न कीजिएगा,

× × × ×

जगत के त्राता, विधाता स्वामी, दयालु हम पर दया पसारो,
हैं दीन सेवक पड़े विपद में, हमें न हे नाथ, अब विसारो।

५

१४. 'अकबर'

(१)

सीने इधर ऐसे कि सहें, ज़ोरे रफ़ल भी,
कान उनके वो नाज़ुक कि गराँ मेरी ग़ज़ल भी।

× × × ×

ये सन्त हैं संसार का उपकार करेंगे,
भगवान् के गुण गाएँगे, भव-सिन्धु तरेंगे।

(२)

ख़ुदा का नाम रोशन है, खुदा का नाम प्यारा है,
दिलों को इससे क़ुव्वत है, ज़वानों का सहारा है।

× × × ×

जगत्-उद्धार-हित जुग-जुग महाजन जन्म धरते हैं,
सहें सन्ताप पर वे, विश्व का उपकार करते हैं।

(३)

जो मिल गया वो खाना, दाता का नाम जपना,
इसके सिवा बताऊँ क्या तुमको काम अपना !

× × × ×

शुभ कर्म्म करो भाई, संसार तो है सपना,
जगदीश का भरोसा, कोई यहाँ न अपना।

(४)

मर्द को चाहिए क़ायम रहे ईमान के साथ,
ता दमे मर्ग रहे, यादे ख़ुदा जान के साथ।

× × × ×

धर्म्म के धाम हैं, भगवान् के सद्भक्त हैं वे,
कर्म्म के केन्द्र हैं, शुभ ज्ञान में अनुरक्त हैं वे।

१५. 'ज़फ़र'

(१)

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया,
उसे आह दामने बाद ने सरे शाम ही से बुझा दिया !

× × × ×

इस देश की जैसी दशा वैसी कही जाती नहीं,
भगवान्, तुमको क्यों दया हम पर भला आती नहीं।

१६. मौ० मुहम्मद हुसेन आज़ाद

हुआ लैला पै मजनूँ कोहकन शीरीं पै सौदाई,
मुहब्बत दिल का एक सौदा है, जिसकी जिससे बन आई।

× × × ×

हमारा देश उन्नति के शिखर पर क्यों न चढ़ जाए,
तपस्या-त्याग के कारण शिरोमणि क्यों न कहलाए।

१७. 'शिवली'

मैं ने कहा ग़लत है, तेरा दावए गुरूर,
दीवाना तू नहीं है, तो हुशियार भी नहीं।

× × × ×

मैं जानता हूँ पहले से तेरा रहस्य सब,
तू धर्म्म के विरुद्ध, न ईश्वर का भक्त है।

१८. 'चकबस्त'

(१)

गोतम ने आबरू दी, इस मावदे कुहन को,
सरमद ने इस ज़मीं पर सिदक़े किया वतन को।

× × × ×

भगवान्, तेरी महिमा मुनियों को भा रही हैं,
तेरी असीम सत्ता सब में समा रही हैं।

(२)

दर्दे दिल पासे वफ़ा जज़बए ईमाँ होना,
आदमीयत है यही और यही इंसाँ होना।

× × × ×

धर्म्म-मय कर्म्म से संसार का सागर तरना,
दीन-हीनों की सदा स्नेह से सेवा करना।

१९. 'हश्र'

ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली का नाम है,
मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं।

× × × ×

राम की लीला अमित अभिराम है,
भक्त जन रस-पान करते हैं सदा।

२०. 'इक़बाल'

(१)

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा,
हम बुल-बुलें हैं उसकी वह गुलसिताँ हमारा।

× × × ×

वह चन्द्रमा यही है, आदित्य व्योम-चारी,
शंकर सरस्वती कर वर है, परोपकारी।

(२)

दिल खोल कर बहाऊँ, अपने वतन पै आँसू,
सरसब्ज़ जिसके दमसे बूटा उमेद का हो।

× × × ×

जीवन भी एक समर है, इसमें पड़ेगा लड़ना,
मत भीरुता दिखाओ, साहस से काम लो सब।

२१. हसरत मोहानी

ऐ खाक़े हिन्द तेरी अज़मत में क्या गुमाँ है,
दरियाए फ़ैज़े कुदरत तेरे लिये रवाँ है।

× × × ×

भगवान तू दयाकर, हो विश्व सब सुखारी,
कर्तव्य में रहें रत, सद्भावना हो प्यारी।

छन्द-निरूपण

हिन्दी छन्द और उर्दू बहर

१. भुजंगप्रयात

लिखा बर्गे गुल पर बखत्ते जलीं है

× × × ×

तपस्वी नहीं भक्त भी जो नहीं है

२. भुजंगी

छुरी बन के दिल में उतर जायगी

× × × ×

असत् का न अस्तित्व होता कहीं

३. हारीत

लबे तिश्ना मरना है, अहसाँ से बहतर

× × × ×

हमें प्रेम करना है हरना है संकट

४. यशोदा

इधर भी लिल्लाह फिर के देखो
दिलों में नश्तर चुभोने वाले

× × × ×

जगत के त्राता, जगत-विधाता
जगत के स्वामी हमें बचाना ।

५. स्रग्विणी

क्या करूँ मैं गिला यार ने क्या किया

× × × ×

है वही पार्थ सद्भक्त प्यारा मुझे

६. दोधक

चाँद की रंगत ज़र्द है प्यारे
× × × ×
भारतवर्ष हमें अति प्यारा

७. दुर्मिल सवैया

न खुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के हुए न उधर के हुए
× × × ×
अवधेश के बालक चार सदा
तुलसी मन-मन्दिर में बिचरें

८. झूलना

फ़रियाद कि बिलकुल लुट के चले
दुनिया के मुसाफ़िर ख़ाने में
× × × ×
हो जो कुछ भी मन में तेरे
अवलोक उसे प्रिय मित्र अभी

९. विधाता

बढ़े जाते हैं दुख में, उम्र ज्यों-ज्यों घटती जाती है
× × × ×
जगत तूने रचा स्वामी, जगत में तू समाया है

१०. पंच चामर

ये थोड़ी-थोड़ी मय न दे, कलाई मोड़-मोड़ कर
अनन्त वीर्य आपको समोद सर्वतः सदा

११. दिक्पाल

तौबा भी करेंगे हम, फिर तोड़ भी डालेंगे
× × × ×
सुख-मूल दिव्य दर्शन अबतो करा दे मोहन

१२. भारत छन्द

पीरी है, बलाए नागहानी
× × × ×

कवि शङ्कर विश्व के विधाता

१३. मोहिनी

तुम ठीक कहो इस वक़्त कहाँ से आए

× × × ×

हम देख तुम्हें सचमुच मन में घबराए

१४. पीयूष वर्ष

ख़्वाव है लेकिन परेशाँ ख़्वाब है

× × × ×

नाथ यह संसार का क्या हाल है।

१५. हरिगीतिका

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया

× × × ×

भगवान भारतवर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइए

१६. सार छन्द

तुम दुनिया में आए हो क्यों यह हमको बतलाओ

× × × ×

उर अभिराम राम अरु लछमन, मधुर मनोहर जोड़ी

१७. शास्त्र छन्द

मुसाफ़िर उठ तुझे चलना है मंज़िल
बजे है कूच का हरदम नकारा

× × × ×

हमारा दुख रहा है आज क्यों दिल
मिले भगवान का प्यारा सहारा

१८. शुद्ध गीता

ग़म नहीं गर दिलबरी से दिल को ले जाता है वह

× × × ×

क्यों भुला रखा, उसे तू याद कर अब भी गँवार

१९. खरारी

हर शख़्स को तलवार के बस घाट उतारा, जो सामने आया

× × × ×

रे मूर्ख सदा काम-निरत काल-गँवाया, बस पाप कमाया

२०. विजात छन्द

कहाँ से आप आए हैं, जो याँ तशरीफ़ लाए हैं
× × × ×
भजो श्री कृष्ण प्रिय राधा, कटे भव-फन्द भय-बाधा

२१. कुलाधारी छन्द

मज़ा बेहोशिए उल्फ़त का हुशियारों से मत पूछो
× × × ×
अलग अब हो गया जो मिल गया था, दूध में पानी।

२२. सगुण छन्द

नज़र क्यों गई रू-व-मू की तरफ़
खिंचा जाए है दिल किसूकी तरफ़
× × × ×
अहो ईश तू शक्तिशाली महान,
हुआ कौन, कब, कोई तेरे समान।

२३. चतुष्पदी

जब न जीते जी मेरे काम आयगी
क्या ये दुनिया आक़बत बख्शायगी
जब मिले दो दिल मुखिल फिर कौन है
बैठ जाओ, खुद हया उठ जायगी
× × × ×
कौन मानेगा नहीं इस उक्ति को
गाढ़ निद्रा-सी कहें यदि मुक्ति को
खोखली है भावना उस ग्रन्थ की
मानता है जो नहीं दृढ़ उक्ति को।

२४. ताटंक

इश्क बुरे ही ख्याल पड़ा है, चैन गया, आराम गया
दिल का जाना ठहर गया है, सुबह गया या शाम गया
× × × ×

प्यारे पुत्र, आज मैं तेरा वेदारम्भ कराती हूँ
आशा की आधार-शिला पर सुन्दर सदन बनाती हूँ

२५. शक्ति

खुदा तूने पैदा किया है जहाँ
तुझे तर्क कर हाय जाएँ कहाँ

× × × ×

शिवा-शंभु के पाद-पंकज गहो
विनायक, सहायक सदा ही चहो

२६. विधाता

शहादत के लिये सर से बँधा होगा कफ़न पहले
सितारा बनके चमके ज़र्रे ए खाके वतन पहले

× × × ×

जगत तूने रचा स्वामी जगत में तू समाया है
निराली तेरी दाया है, निराली तेरी माया है

२७. सरसी

फिर बूँदों ने कान में कह दी भूली-बिसरी बात
नागिन बनकर डसने आई, दुख की काली रात

× × ×

पंच शरघ्न-पुरघ्न पिनाकी पंचानन पशुराज
पाँचो पादि नाम शंकर के पंचराज इव आज

२८. प्रिय

न छेड़ो हमें हम सताए हुए हैं,
मुसीबत के सदमे उठाए हुए हैं।

× × × ×

स्वधा शक्ति स्वामी सुखागार तू है,
जगन्नाथ जीवन जगद्धार तू है।

२९. गीतिका

उस परी के ज़ख्मों पर मरहम लगाने हम गये,
वह परी ज़िन्दा रही और मुफ़्त में मर हम गये।

× × ×

बीर व्रतधारी उठो, किस नींद में सब सो रहे,
अब न अत्याचारियों के वार जाते हैं सहे।

३०. शंकर छन्द

ग़म राह नहीं कि साथ दीजे
दुख बोझ नहीं कि बाँट लीजे
क्या लुतफ़ जो ग़ैर पर्दा खोले
जादू वह जो सर पै चढ़ के बोले

× × × ×

शिव शंकर विश्व के विधाता.
मुद मंगल मूल मुक्ति-दाता
प्रणवीर पवित्र नामधारी
भवसागर सेतु शोक हारी।

३१. सुमेरु

शबे फ़ुरक़त में रो-रो कर सहर की
हक़ीक़त क्या कहूँ मैं रात-भर की

× × × ×

कहाँ हो हे हमारे राम प्यारे,
किधर तुम छोड़कर वन को सिधारे।

३२. कुलाधारी

गुलों को क्या खबर है हाल जारे अन्दलीबों का
हक़ीक़त मुफ़लिसों की आह ज़रदारों से मत पूछो।

× × × ×

अरे रंग पड़ गया पीला कलेवर लाल तेरे का
नहीं कुल-केसरी गरजे किसी भूपाल तेरे का

३३. चोपई

वाहिद एक ख़ुदा करतार
खालिक वारी सिरजन हार

× × × ×

कब सौं विप्र खड़ो जिजमान
पैसा दो तो हो कल्यान

३४. चौपाई

रब का शुक्र अदा कर भाई
जिसने हमारी गाय बनाई

× × × ×

जय-जय-जय गिरिराज किशोरी
जय महेश मुख चन्द्र-चकोरी

३५. विहारी

जिसको तेरी आँखों से सरोकार रहेगा
बिलफ़र्ज़ जिया भी तो वो बेकार रहेगा

× × × ×

वसु राग वसू डार यती छन्द बिहारी
गति याद करो कविता हो शुद्ध तुम्हारी

३६. सुमेरु

तसव्वर राम का शामो सहर हो,
ख़याले जानकी नक़शे जिगर हो।

× × × ×

सियाः के नाथ को नित सीस नाओ,
पदारथ चारहू इहि लोक पाओ।

उर्दू में अभिनव हिन्दी छन्द

उर्दू में 'अभिनव छन्दों' की भी धारा बह सकती है,
यही बात नीचे की रचना व्यक्त रूप से कहती है।

उर्दू कविता में, दोहा, सोरठा, चौपाई, घनाक्षरी, सवैया, षटपदी, कुण्डलियाँ, गीत आदि का अभाव है, परन्तु पिंगल-शास्त्र की वैज्ञानिकता और व्यापकता के कारण यह कमी भी बड़ी सरलता से पूरी की जा सकती है। नीचे लिखे छन्दों को देखिए। इनसे स्पष्ट जाना जा सकेगा कि उर्दू में प्रत्येक प्रकार के हिन्दी छन्दों का समावेश हो सकता है, और वे सरलता से लिखे जा सकते हैं।

उर्दू दोहे

(१)

अज़मत मेरे मुल्क की, है शोहरए आफ़ाक,
मैं खुश क़िस्मत बन गया, लगा वतन की खाक।

(२)

जुदा खु.दा से जो हुआ, रहा न वह इन्सान,
बदखू. या बदकार वह, है मुतलिक़ हैवान।

(३)

लग्व़ बयानी का बुरा, होता है अंज़ाम,
सिदक़ दिली से ही करो, दुनिया के सब काम।

(४)

खुदा-खुदा कह क्या किया, बना न खुश अयमाल,
अरे इबादत तो वही, जिसमें हो न ज़बाल।

(५)

ज़र-ज़मीन ज़र के सबब, करना नहीं गुरूर,
नेक नीयती का रहे, जज़बा जुज़ भरपूर।

(६)

बड़ी कोशिशों से हुआ, मुल्क हिन्द आज़ाद,
अब तो वह तदबीर कर, हो न जाय बरबाद।

उर्दू सोरठा

(१)

ख़ुदा रहीम-करीम, बख़्शी सबको ज़िन्दगी,
है वह बड़ा अज़ीम, करो इबादत-बन्दगी।

(२)

वह आला इन्सान, जो सबकी ख़िदमत करे,
मान दीन-ईमान, ऐब-गुनाहों से डरे।

उर्दू चौपाई

"रब का शुक्र अदा कर भाई। जिसने हमारी गाय बनाई।।
उस मालिक को क्यों न पुकारें। जिसने पिलाईं दूध की धारें।।"
मुल्क-क़ौम के काम न आए। वह हैवान जहन्नुम जाए।।
देखी दुनिया में ख़ुदगर्ज़ी। अपना मतलब-अपनी मर्ज़ी।।
ख़ुदा रहीम-करीम कहाता। सबको ख़ुश अखलाक बनाता।।
ख़ुदगर्ज़ी पर जो मरता है। वह न ख़ुदा से भी डरता है।।
उसको क्यों इन्सान कहेंगे। है अहमक़, सब दूर रहेंगे।।

उर्दू घनाक्षरी

(१)

बाग़ की बाहर देखी, मौसमे बहार में तो,
दिले अन्दलीब को रिझाया गुले तर से।
हाय, चकराते रहे, आस्माँ के चक्कर में,
तो भी लौ लगी ही रही, माह की महर से।
आतिशे मुसीबत ने दूर की कुदरत तो,
बात की नबात मिली, लज़्ज़त शकर से।
'शंकर' नतीजा इस हाल का यही है, बस,
सच्ची आशिक़ी में नफ़ा होता है, ज़रर से।

(२)

क़ौम की मुसीबत को बोलो बतलाएँ कैसे,
शोख़ी ओ शरारत से ख़ूब हुई ख्वारी है।
ग़ल्ले की गिरानी ग़ुरबा का गला काट रही,
चीथड़ों के लिये भी तो, ओफ, आहो ज़ारी है।
एक रोज़ दुनिया का दारुल उलूम रहा,
हैफ़ वही अब दर-दर का भिखारी है।
रौशनी का लोग बतलाते हैं, ज़माना पर,
"भारत में छाई, आज रात अँधियारी है।"

उर्दू सवैया

(१)

जामे उल्फ़त पिला के मुझे बेवफ़ा,
नाज़े दीगर से अब वह पली जायगी।
दस्ते गुलचीं से दिल की शिगुफ़्ता कली,
क्या ख़बर थी किसी से मली जायगी।
आओ मातम मनाएँ, चलो सब कोई,
चोट सीने पै कैसे ये ली जायगी।
मोंगरे की लरी सुन सखी केतकी,
कल चमेली हमारी चली जायगी।

स्व० कविवर कौशलेन्द्रजी

(२)

दुशमनी का न हो बोल बाला कहीं,
जंगजू बन न अख़लाक़ियत से गिरें।
गुट गुनाहों या जुर्मो ख़ता से बचें,
पाक दामन रहें, ख़ुद ख़ुदा से डरें।
दरिया अमनो अमाँ का बहे रात-दिन,
उन्स हमदर्दियों से दिलों को भरें,
जज़्बा इन्सानियत का रहे जोश जन
ख़िदमते मुल्क सब लोग मिलकर करें।

उर्दू षटपदी (छप्पय)

दुनिया में आ खल्के खुदा की खिदमत करना,
ऐब, गुनाहों, बद फ़ेलों, जुर्मों से डरना,
अखलाक़ी अज़मत की हर सू शान दिखाना,
खुद शरीफ़ बन कर, औरों को नेक बनाना,
जो सिदक़ दिली से क़ौम पर, करता कुल क़ुरबान है,
बेशक वह आला आदमी, और वही इन्सान है।

उर्दू कुण्डलिया

आला दिल इन्सान हो, कभी न हिम्मत हार,
बन बिलकुल बेलौस तू सबका खिदमतगार,
सबका खिदमतगार, कभी गुमराह न होना,
खुदगरज़ी का तल्ख़ तुख़्म हरगिज़ मत बोना,
सुन' 'शायर सरताज' कह रहे अल्ला ताला,
नेकी करने से बनता अदना भी आला।

उर्दू गीत

(१)

वही तो है आला इन्सान।

जर-ज़मीन-ज़र के ज़द में पड़, बना नहीं खुदग़र्ज,
अखलाकी इफ़लास मिटाना, समझा अपना फ़र्ज़,

न छोड़ा कभी दीन-ईमान—
वही तो है आला इन्सान।

(२)

राहे रास्त पर चला हमेशा, हुआ नहीं गुमराह,
देता रहा मुसीबत-मारों को, हर वक़्त पनाह,

सिदाक़त पर जाता क़ुरबान,
वही तो है आला इन्सान।

(३)

शोहरत या बदनामी की, की जरा नहीं परवाह,
खुद गुनाह से बचा, किया औरों को भी आगाह,

जिसे प्यारा है सभी जहान-
वही तो है आला इन्सान ।

(४)

मुल्क-क़ौम या खल्के खुदा का जो है खिदमतगार,
ना उम्मेदी मुशकिलात का बना न कभी शिकार,

दिखाता है रूहानी शान-
वही तो है आला इन्सान ।

फ़ारसी में हिन्दी छन्द

फ़ारसी बहर हिन्दी छन्द की ही छाया है,
यही भाव नीचे भली भाँति दिखलाया है।

फ़ारसी महाकवियों के कुछ शअ़र नीचे दिये जाते हैं, उनके भावार्थ भी दे दिये हैं। साथ ही तुलनात्मक हिन्दी छन्द भी हैं। ये सब छन्द शक्ती, भुजंगी, हंसगति, सुमेरु, पीयूष वर्ष, केहरी आदि छन्दों के अन्तर्गत हैं। छन्दों की मात्राएँ गिनकर, इसी निबन्ध में, उनके नाम बड़ी सरलता से खोजे जा सकते हैं। निम्नलिखित छन्दों में से अधिकतर छन्द फ़ारसी के महाकवि शेख़सादी के रचे हैं।

करीमा बिबख़शाय बर हालिमा,
कि हस्तम असीरे कमन्दे हवा।

× × × ×

बताओ, तुम्हें वह मिला था कहाँ,
चलें हम सभी देखने को वहाँ।

(२)

जवानाँ रहे ताइत इमरोज़ गीर,
कि फ़र्दा जवानी नियायदज़पीर।

हे युवक, आज़ही भक्ति-पथ पर चल पड़, क्योंकि कल बुढ़ापे में जवानी नहीं आएगी।

सभी को बँधाया करो दुख में धीर,
हरो बन पड़े जितनी दुखियों की पीर।

(३)

दिल आराम बाशद ज़ने नेक ख़्वाह,
वलेकिन ज़ने बद ख़ुदाया पनाह।

सुशीला स्त्री हृदय को आनन्द देने वाली होती है, परन्तु बुरे स्वभाववाली से परमात्मा बचावे।

हमारा-तुम्हारा न होगा निवाह,
भला ऐसी हालत में कैसा विवाह।

(४)

मियाज़ार आमी बयक ख़रदला,
कि सुलतान शबानस्तो आमी गला।

राई के एक दाने के समान भी प्रजा को मत सताओ, क्योंकि राजा गड़रिया है और प्रजा गल्ला।

करेगा जगत का भला क्या भला,
न अपना ही जिससे हो कुनवा पला।

(५)

अगर बीनम कि नाबीना ओ चाह अस्त,
वगर ख़ामोश बिनशीनम गुनाह अस्त।

यदि मैं देखूँ कि अन्धा और कुआं है, अर्थात् अन्धा आदमी कुएं की ओर जा रहा है, और मैं चुप बैठा रहूँ तो पाप है।

अरे क्यों हो रहे इस भाँति श्रीहत,
बनो कर्मठ रहो, सद्धर्म में रत।

(६)

सनाए ख़ुद बख़ुद गुफ़्तन न ज़ेबद मर्द आक़िल रा,
चु ज़न पिस्तान ख़ुद मालिद कुजा लज्ज़त शवद पैदा।

बुद्धिमानों को स्वयम् अपनी प्रशंसा करना शोभा नहीं देता, क्योंकि रमणियों का स्वयम् अपने कुच-मर्दन करना आनन्ददायक नहीं कहा जा सकता।

सदा सद्धर्म ही संसार का कल्याण करता है,
दिलाता शान्ति-सुख, धन-धान्य से भण्डार भरता है।

(७)

बयक साइत बयक लहजा बयक दम,
दिगर गूँ मी शवद अहवाले आलम।

एक क्षण एक पल और एक दम में संसार की दशा कुछ को कुछ हो जाती है।

न अपनाया कभी भी सत्य-संयम,
विसारे हाय, हमने त्याग, तप, शम।

(८)

बन्द अन्देश रा लफ़्ज़ शीरीं मबीं,
कि मुमकिन बुवद ज़हर दर अंगबीं।

दुर्जन के मीठे बोलों पर मत विश्वास करो, क्योंकि सम्भव है, मधु में विष मिला हो।

हमारे-तुम्हारे सभी के लिये,
मरे धर्म-हित धर्म-हित ही जिए।

(९)

हर कसे नासह बराए दीगराँ,
नासह खुद याफ़तम कम दर जहाँ।

दूसरों के लिये तो प्रत्येक व्यक्ति उपदेशक बन जाता है, परन्तु अपने आपको उपदेश देने वाले संसार में बहुत थोड़े हैं।

क्या किया आकर भला तुमने यहाँ,
हो रही पीड़ित पड़ी जनता जहाँ।

(१०)

दोस्त मशुमार आँकि दर नियामत ज़नद,
लाफ़ यारी औ बरादर ख्वाँदगी,
दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त,
दर परेशाँ हाली ओ दर माँदगी।

तू उसको मित्र मत मान जो सुखमय सुदिनों में मित्रता की डींग मारता है। सच्चा मित्र तो वह है जो संकट में सहायक होता है।

है हमारे देश की यह भव्यता, स्नेह के विस्तार से सुख पाएँगे,
छद्म, छल, पाखण्ड, पापाचार तज, सत्य को सद्भाव से अपनाएँगे।

(११)

सोहबते सालह तुरा सालह कुनद,
सोहबते तालअ तुरा तालअ कुनद ।

भले आदमियों की संगति से भला और बुरे लोगों की संगति से तू बुरा बन जाएगा ।

तू यहाँ रह और मैं जाऊँ उधर,
काम करके ही तो अब चलना है घर ।

(१२)

तुरा अज़दहा गर बुवद यार ग़ार,
अज़ाँ बेह कि जाहिल बुवद ग़म गुसार ।

अजगर की मैत्री अच्छी है, परन्तु मूर्ख का सहवास अच्छा नहीं ।

कभी सत्य-शुचिता न देना विसार,
करो धर्म से पुण्य-प्रभुता-प्रसार ।

(१३)

मबाश दर पए आज़ारो हरचे ख्वाही कुन,
कि दर शरीयते मा ग़ैर अज़ीं गुनाह नेस्त ।

और जो चाहे सो कर परन्तु किसी को कष्ट मत दे, क्योंकि शरीयत (धर्मशास्त्र) में इससे बड़ा कोई पाप नहीं है ।

जो तेरे मन को लुभाएँ वे गीत गाया कर,
भली-भली हों जो बातें उन्हें सुनाया कर ।

(१४)

गर इन्साफ़ पुरसी बद अख्तर कस अस्त,
कि दर राहतश रंज दीगर कस अस्त ।

यदि तू न्याय की बात पूछता है तो हत भाग्य वह मनुष्य है, जिसके सुख में दूसरे का दुःख हो ।

अरे अब तो सबही बनें देश-भक्त,
रहें धर्म-पालन में सब ही सशक्त ।

(१५)

तवाज़े कुनद नेक मन्दे गज़ीं,
निहद शाख़ पुरमेवा सर बर ज़मीं।

सत् पुरुष समृद्धि पाकर, सेवा-धर्म स्वीकार करते हैं। जैसे कि फलों से लदी हुई टहनी अपना सिर पृथ्वी से लगा देती है।

न अपने लिये ही जियो या मरो,
अरे कुछ तो औरों की सेवा करो।

(१६)

मकुन बा बदाँ नेकी ऐ नेक बख़्त,
कि दर शोरा नादाँ नशानद दरख़्त।

अरे भले मानस, तू दुष्टों के साथ भलाई मत कर, क्योंकि कल्लर में वृक्ष लगाना मूर्खता है।

अरे सूर्य तो हो गया आज अस्त,
बड़ा व्यस्त है, कार्य करतू समस्त।

(१७)

क़ारूँ हलाक शुद कि चिहल ख़ाना गंज दाश्त,
नौशेरवाँ नमुर्द कि नामे निको गुज़ाश्त।

क़ारूं मृत्यु-मुख में चला गया, जिसके चालीस खज़ाने थे और नौशेरवाँ नहीं मरा क्योंकि उसकी कीर्ति जीवित है।

सत्कीर्ति न मरती कभी, भोगे न पाप-ताप,
भारत-वसुन्धरा का बढ़े सर्वदा प्रताप।

(१८)

यके मुर्ग दीदम न पाओ न पर,
न अज़ शिकमे मादर न पुश्ते पिदर
न बर आसमानो न ज़ेरे ज़मीं,
हमेशा ख़ुरद गोशते आदमी

मैंने एक ऐसा पक्षी देखा है, जो न तो माता के पेट से पैदा हुआ न पिता के वीर्य से। न आकाश पर है, और न पृथ्वी पर। परन्तु

सदा मनुष्य का मांस भक्षण करता है—वह पक्षी और कोई नहीं चिन्ता है।

अरे तू सदा विश्व-कल्याण कर,
सदा दीन-दुखियों की आपत्ति हर।
बड़े स्नेह से सबको सम्मान दे,
दरिद्रों को भोजन-वसन दान दे,

(१९)

हुब्बे वतन अज़ मुल्के सुलेमाँ खुशतर,
ख़ारे वतन अज़ संबलो रेहाँ खुशतर।

अपना देश सुलेमान के देश से भी अच्छा है। अपने देश का काँटा बालछड़ तथा नाज़बो से भी बढ़कर है।

भारत का दुःख दूर करें सब मिलकर,
जनता कराहती है हाय घुल-घुल कर।

(२०)

पाए दर ज़ंजीर पेशे दोस्ताँ,
बेह कि बा बेगानगाँ दर बोस्ताँ।

मित्रों अर्थात् सज्जनों के सामने पैरों में बेड़ियाँ पड़ी हुई अच्छी हैं, परन्तु विरोधियों अर्थात् दुर्जनों के साथ फुलवाड़ी का निवास भी बुरा है।

चल दिये तुम छोड़ कर हमको कहाँ,
हम अकेले रह गये अबतो यहाँ।

(२१)

चु ख़ुदरा पसन्दी कसे रा पसन्द,
तो दर ज़हमते दीगरे रा मबन्द।

जैसा अपने लिये चाहता है, वैसी ही दूसरे के लिये कामना कर। दूसरों को दुःख देना उचित नहीं है।

सताएँ किसी को न अब दुःख द्वन्द्व,
दया-दान दे ईश आनन्द-कन्द।

(२२)

ब शीरीं ज़बानी व लुत्फ़ो ख़ुशी,
तवानी कि पीले बमूए कशी।

मीठी वाणी बोलकर प्रेम और प्रसन्नता से तू हाथी को एक बाल से खींच सकता है।

जो सद्‌भावना है हृदय में भरी,
वही शुद्ध है, सत्य, सुन्दर, ख़री।

(२३)

ता मर्द सख़ुन न गुफ़्ता बाशद,
ऐबो हुनरश निहुफ़्ता बाशद।

जब तक मनुष्य बोलता नहीं, उसके गुण-दोष छिपे रहते हैं।

हे-हे गुण-पुंज भव्य भारत,
क्यों हाय हुआ विपन्न आरत।

(२४)

कुनद हमजिन्स बा हमजिन्स परवाज़,
कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़।

पक्षी अपनी ही श्रेणी के साथ उड़ते हैं। जैसे कबूतर, कबूतर के साथ और बाज़, बाज़ के साथ।

अरे बतलाएँ तुमको सुनलो सब आज,
मिले जिसमें न सुख वह है बुरा राज।

(२५)

मज़हबे इश्क़ अज़ हमा मिल्लत जुदास्त,
आशकाँरा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त।

प्रेम का धर्म सब धर्मों से पृथक् है। प्रेमी जनों का धर्म और मत केवल परमात्मा है।

देखलो अब प्रेम-प्रभुता का प्रकाश,
होगया दुर्भाव-दानव का विनाश।

(२६)

शिकमबन्द दस्तस्तो ज़ंजीर पाय,
शिकम बन्दा नादर परस्तद ख़ुदाय।

पेट हाथ की बेड़ी और पांवों की ज़ंजीर है। पेट का दास शायद ही कभी ईश्वर की पूजा कर सकता है।

अरे तेरी कैसी हुई क्षीण काय,
नहीं स्वास्थ्य की तुझ को चिन्ता है हाय।

(२७)

पये इल्म चूँ शम्मा बायद गदाख़्त,
कि बेइल्म नतवाँ ख़ुदा रा शनाख़्त।

विद्या-प्राप्ति के लिये अपने को दीपक की भाँति जला देना चाहिए, क्योंकि अज्ञानी मनुष्य परमात्मा को नहीं जान सकता।

हमें खेद है देख तुझको उदास,
प्रभो, काटदो शीघ्रतर कष्ट-त्रास।

(२८)

दो दिल यक शवद बिशकुनद कोहरा,
परागन्दगी आरद अम्बोहरा।

दो दिल एक हो जाएं तो पहाड़ को तोड़ दें और सेना को अस्त-व्यस्त कर दें।

सदा स्नेह से हो हृदय-सर भरा,
रहे सत्य-सेवा का पौदा हरा।

(२९)

मुशकिले नेस्त कि आसाँ न शवद,
मर्द बायद कि हरासाँ न शवद।

ऐसी कोई कठिनाई नहीं है, सो सरल न हो सके। मनुष्य को चाहिये कि वह घबराए नहीं।

सत्यवादी से सदा हो सहमत,
धर्म में, कर्म में, अनुचर-अनुगत।

(३०)

चरा ग़म मे खुरी अज़ बहरे रोज़ी दर जहाँ 'सायब',
कि पेश अज़ तिफ़्ल दर पिस्ताने मादर शीर में आयद।

ऐ सायब, तू अपनी जीविका के लिये क्यों चिन्तित है। देखता नहीं कि शिशु के उत्पन्न होने से पूर्व ही मा के स्तनों में दूध आ जाता है।

भला अब क्या करें तेरे नगर में व्यर्थ हम आकर,
न कोई मित्र-सम्बन्धी न है, अब शेष मेरा घर।

(३१)

न हर ज़न ज़नअस्तो, न हर मर्द मर्द,
खुदा पंज अंगुश्त, यकसाँ न कर्द।

प्रत्येक स्त्री, स्त्री और पुरुष, पुरुष नहीं होता। परमात्मा ने पाँचों उंगलियों की रचना समान नहीं की।

बनो सत्य-साधक करो नित्य धर्म,
है शुभ कर्म्म में ही छिपा सर्व मर्म।

अँगरेज़ी में हिन्दी छन्द

अँगरेज़ी के कवियों को भी हिन्दी छन्द भाए हैं,
ऐसे ही सुरूप इन पृष्ठों में दिखाए हैं।

जिस प्रकार उर्दू और फ़ारसी बहरों में हिन्दी छन्द की समानता दिखायी गयी है, उसी प्रकार अँग्रेज़ी छन्दों में भी देखिए। अँग्रेज़ी के महाकवियों की कविताओं के पद नीचे दिये जाते हैं, उनके नीचे उन्हीं के अनुरूप, हिन्दी छन्द भी दे दिये हैं। पाठक अँग्रेज़ी छन्दों को हिन्दी छन्दों की तरह पढ़ेंगे तो उनमें पूरा साम्य पाएंगे। कुछ छन्दों के नाम भी दे दिये हैं। शेष छन्दों के नाम मात्राएँ गिनकर, इसी या किसी छन्द-ग्रन्थ में सरलता से खोजे जा सकते हैं।

१. शेक्सपीयर Shakespeare

(१)

Sigh no more ladies sigh no more
Men were deceiver ever
One foot in sea and one on shore
To one thing constant never

साई नो मोर लेडीज़ साई नो मोर, मैन वर डिसीवर ऐवर
वन फ़ुट इन सी एण्ड वन ऑन शोर, टु वन थिंग कौन्स्टेंट नैवर

होगया भोर भाई होगया भोर, कृपा करो अब हम पर,
क्यों करते हो इतना शोर, पहुँचा दो बस घर पर।

—अर्द्धसम

(२)

Thy tooth is not so keen
Because thou art not seen

दाई टुथ इज़ नॉट सो कीन, बिकौज़ दाऊ आर्ट नॉट सीन ।
दुखी, दरिद्र, दीन या हीन, व्याकुल ज्यों पानी बिन मीन ।

—चौपई

(३)

Tell me where is fancy bred
Or in the heart or in the head

टैल मी वेअर इज़ फ़ैन्सी ब्रैड, और इन दी हार्ट और इन दी हैड ।
रहो सदा संयम में रत, है यह धर्म और वर व्रत ।

—मनमोहन

(४)

Where the bee sucks there suck I
In a cowslip's bell I lie
There I conch when owls do cry
on the bats back I do fly

वेअर दी बी सक्स देअर सक आई,
इन ए काउस्लिप्स बैल आई लाई ।
वेअर आई कौंश वैन आउल्स डू क्राई,
ऑन दी बैटस बैक आई डू फ़्लाई ।

जिसने मानवता अपनाई, जिसने प्रभु गुण-गरिमा गाई,
उसने जीवन-ज्योति जगाई, धर्म-कीर्ति, धन-राशि कमाई ।

—चौपाई

(५)

True art can save from slavery
And gives true greatness to the free

ट्रू आर्ट कैन सेव फ़्रौम स्लेवरी, एण्ड गिव्ज़ ट्रू ग्रेटनैस टू दी फ़्री ।
जब-जब जग पै भीर परी, तब-तब प्रभु ने पीर हरी ।

—मनमोहन

(६)

Though thy path be dark as night
Trust in God and do the right

दो दाई पाथ बी डार्क ऐज़ नाइट
ट्रस्ट इन गौड एण्ड डू दी राइट

हे जग-जीवन, हे सुख-दायक,
हे विश्वम्भर - विश्व - विधायक ।

—चौपाई

२. जे. मिल्टन J. Milton

(१)

It was the winter wild
While the heaven born child
Only with speeches fair
She wooes the gentle air

इट वाज़ दि विण्टर वाइल्ड, व्हाइल दि हैविन बौर्न ए चाइल्ड
ओनली विद इस्पीचेज़ फेअर, शी वूज़ दि जैण्टिल एअर

तू ही है विश्व-विधायक, जग-त्राता सब सुख-दायक ।
नित भक्ति-भाव दरसाकर, श्रद्धा से शीश नवाकर ।

—सखी

(२)

Now the tones became clearer ...
You hear more and more
How the water devided
Returning on the oar

नाउ दी टोन्स बीकेम क्लीअरर, यू हीयर मोर एण्ड मोर
हाउ दी वाटर डिवाइडेड, रिटर्निंग ऑन दि ओर

है सजा-सजाया सुन्दर घर, होने वाला है भोर,
कोई भी नहीं गया है मर, तुम क्यों करते हो शोर ।

—मरहटा

(३)

Almost naked wanton blind
Cruel now and then as kind

ऑलमोस्ट नैकेड, वाण्टन, ब्लाइण्ड
क्रूएल नाउ एण्ड दैन एज़ काइण्ड

त्यागी, तपी, शुद्ध, शुभ नायक,
मानवता का सखा, सहायक।

—चौपाई

(४)

With wanton heed and giddy cunning
The melting voices through mazes running

विद वानटन हीड एण्ड गिडी कनिंग
दी मैलटिंग वाइसेज़, थ्रू मेज़ेज रनिंग

तुम क्यों करते हो झनन-झनन,
मैं कर पाता हूँ नहीं भजन।

—पद्धरि

(५)

And if I give the honour due
Mirth admit me of thy crue

एण्ड इफ़ आई गिव दी आनर ड्यू
मर्थ एडमिट मी आफ़ दाई क्रू

इसमें तो आती है बदबू,
क्यों कहते हो इसको खुशबू।

—चौपाई

(६)

Where day never shuts his eye
Up in the broad fields of the sky

वेअर डे नैवर शट्स हिज़ आई
अप इन दि ब्रौड फ़ील्ड्स आफ़ दी इस्काई

प्रभु से ही अनुकम्पा पाई,
सत्य-धर्म की टेक टिकाई।

—चौपाई

३. बायरन Lord Byron

(१)

For women first were made for men
Not men for them, it follows then

फ़ौर वीमैन फ़र्स्ट वर मेड फ़ौर मैन
नॉट मैन फ़ौर दैम इट फ़ौलोज़ दैन

सबसे बोलो सब मधुर बैन,
है परम पिता की दिव्य दैन।

—पद्धरि

(२)

When we two parted, in silence and tears
Half broken hearted to sever for years

वैन वी टू पार्टेड, इन साइलेंस एण्ड टीअर्स
हाफ़ ब्रोकिन हार्टेड, टू सेवर फ़ौर ईअर्स

जब उसने धारा जीवन में, यह वर व्रत,
होगये सभी जन, उससे सहमत—अनुगत।

—राधिका

(३)

The wave lie still and gleaming
And the lulled winds seem dreaming

दी वेव लाइ इस्टिल एण्ड ग्लीमिंग
एण्ड दी लल्ड विण्डस सीम ड्रीमिंग

जब करें सहाय सभी जन,
तो होगा सुखमय जीवन।

—सखी

(४)

That famished people must slowly nurst
And fed by spoonful else thy always burst
दी फ़ेमिश्ड पीपिल मस्ट इस्लोली नर्स्ट
एराड फ़ैड बाई स्पूनफुल एल्स दाई आलवेज़ बर्स्ट
तुम वृथा होगये हा उस पर आकृष्ट,
वह तो है भाई, सब विधि भ्रष्ट-निकृष्ट।

४. शैली Shelley

(१)

The fountain mingle with the river
And the rivers with the ocean
The winds of heaven mix for ever
With a sweet emotion
दी फ़ौराटेन मिंगिल विद दी रिवर
एराड दि रिवर्स विद दी ओशन
दी विराडस आफ़ हैविन मिक्स फ़ौर एवर
विद ए स्वीट इमोशन

गा भारत की गौरव-गरिमा, कर भारत का वर वन्दन,
भारत-भू की पूजा-महिमा, है जन्म-भूमि-अभिनन्दन।

(२)

Yet I doubt not through the ages
One increasing purpose runs
And the thoughts of men are widened
With the process of the suns
यट आई डाउट नाट थ्रू दी एजेज
वन इनक्रीज़िंग परपज़ रन्स
एण्ड दी थौट्स आफ़ मैन आर वाइडिण्ड
विद दी प्रोसैस आफ़ दी सन्स

त्याग-तपस्या का बल पाकर, पावन हुए धन्य सत्कर्म्म,
ऋषि-मुनियों के गुण अपनाना, बतलाया मानवता-मर्म।

(३)

Raise a nurse of ninety years
Set his child upon her knee
Like summer tempest her tear
sweet my child I live for thee

रेज़ ए नर्स ग्राफ़ नाइन्टी ईयर्स
सैट हिज़ चाइल्ड ग्रपौन हर नी
लाइक समर, टैम्पैस्ट हर टीयर
स्वीट माई चाइल्ड ग्राई लिव फ़ौर दी

भवसागर में भटक रही है, प्रभु मेरी जीवन-तरणी,
ऐसी कृपा करो तर जाऊँ, कर कल्याणमयी करणी।

—ताटंक

(४)

Read my little fable
He that runs may read
Most can raise the flowers now
For all have got the seed

रीड माई लिटिल फ़ेबिल, ही दैट रन्स मे रीड
मोस्ट कैन रेज दी फ़्लावर्स नाउ, फ़ार ग्राल हैव गौट दी सीड

है जीवन की यह जड़ता, रहता न विचार-विवेक,
कैसी है घोर अंधमता, जिसमें न टिकी कुछ टेक।

(५)

She left the web, she left the loom
She made three paces through his room

शी लैफ़्ट दी वेब, शी लैफ़्ट दी लूम
शी मेड थ्री पैसैज थ्रू हिज़ रूम

वह कौन घड़ी वह कौन काल, जब था भारत-वैभव विशाल,
होगये विज्ञ अद्भुत अनूप, धर्मज्ञ धीर वर वीर भूप।

—पद्धरि

(६)

Ring out the old ring in the new
Ring happy bells, across the snow
The year is going let him go
Ring out the false, ring in the true

रिंग आउट दी ओल्ड, रिंग इन दी न्यू,
रिंग हैपी बैल्स, ऐक्रौस दी स्नो
दी ईयर इज़ गोइंग लैट हिम गो,
रिंग आउट दी फ़ाल्स रिंग इन दी ट्रू

मित्रो अब मिथ्याचार तजो, सब सत्य-साधना धार बनो,
यम-नियम साध भगवान भजो, तुम गुण-गरिमा आगार बनो।

—तोटक (मात्रिकरूप)

(७)

What does little baby say
In her bed at peep of day
Baby says like little birdie
Let me rise and fly away

वाट डज़ लिटिल बेबी से, इन हर बैड एट पीप ऑफ़ डे,
बेबी सेज़ लाइक लिटिल बर्डी, लैट मी राइज़ एण्ड फ़्लाई अवे।

क्यों तू बिछुड़ गया है रे, क्या हम नहीं रहे तेरे,
क्या तुझको यह नहीं उचित, रहे प्रेम से घर मेरे।

—मनमोहन

५. टैनीसन Lord Tennyson

(१)

Only reapers reaping early
In among the bearded barley
Hear a song that echoes cheerly
From the river winding clearly

७

औनली रीपर्स रीपिंग अरली,
इन एमंग दी बीअर्डेड वारली।
हीअर दी सौंग दैट इकोज़ चीअरली,
फ़ौम दि रिवर वाइण्डिग क्लीअरली।

स्नेह सहित अधरों पर धरली, बजी कृष्ण की मोहक मुरली।
सत्य भावना मन में भरली, जिसने मद-मादकता हरली।

—चौपाई

(२)

Teach me half the gladness
That thy brain know
Such harmonious madness
From my lips would flow

टीच मी हाफ़ दी ग्लैडनैस, दैट दाई ब्रेन नो,
सच हारमोनियस मैडनैस, फ्रौम माई लिप्स वुड फ़्लो।

शान्ति स्नेह से इस दुनिया में भाई सभी रहो,
भद्र भावना भरो हृदय में, शिव-शिव सदा कहो।

—विष्णुपद

६. कारलायल T. Carlyle

(१)

What is man a foolish baby
Vainly strives and fights and frets
Demanding all deserving nothing
One small grave is what he gets

वाट इज़ मैन ए फ़ुलिश बेबी,
वेनली इस्ट्राइब्स एण्ड फ़ाइट्स एण्ड फ्रैट्स।
डिमानडिंग औल डिज़र्विंग नथिंग,
वन इस्मौल ग्रेव इज़ वाट ही गैट्स।

बनो सभी जन अब उद्योगी, लड़ना और झगड़ना छोड़,
हो निःस्वार्थ सत्य के सेवी, पामरता से मुखड़ा मोड़।

—३१-वीर

(२)

Behold it a fore time
No eye ever did
So soon it for ever
From all eyes is hid

बीहोल्ड इट ए फ़ोर टाइम, नो आई ऐवर डिड
सो सून इट फ़ौर ऐवर, फ़ौम ऑल आईज़ इज़ हिड

पाओगे सदा सफलता, यदि काम करोगे मिल,
हों शुद्ध भाव से पूरित, हे प्रभु हम सब के दिल।

—विष्णुपद

७. कीट्स J. Keats

(१)

I made a garland for her head
And bracelets too and fragrant zone
She looked at me, as she did love
And made a sweet moan

आई मेड ए गारलैण्ड फ़ौर हर हैड,
एण्ड ब्रेसलैट्स टू एण्ड फ्रेगरेंट ज़ोन,
शी लुक्ड एट मी, एज़ शी डिड लव,
एण्ड मेड ए स्वीट मोन

मैं खोज चुका इस दुनिया में, है सत्य सन्त या साधु कौन,
सद्धर्म हीन, तन-मन-मलीन, था सबका उत्तर एक मौन।

—३१, पद्मावती

(२)

In a dear mighted December
Too happy happy tree
The branches never remember
Their green felicity

इन ए डीयर माइटेड डिसम्बर, टू हैपी-हैपी ट्री
दी ब्राँचेज़ नैवर रिमेम्बर देअर ग्रीन फ़ैलिसिटी

देखा मैंने जिस घर में भी, बस फूट फबीली थी,
अति कटुता नर-नारी में थी, दुखता था मेरा जी।

—२८, सार

(३)

A thing of beauty is a joy for ever
Its loveliness increases it will never

ए थिंग ग्राफ़ बीउटी इज़ ए जौय फ़ौर ऐवर,
इट्स लवलीनैस इनक्रीज़ेज इट विल नैवर

जो कहो सभी के लिये सदा हो हितकर,
शुभ सत्य भावना बनी रहे जीवन-भर।

—२२ राधिका

८. वर्डसवर्थ Wordsworth

(१)

I travelled among unknown men
In lands beyond the sea
Nor England, did I know till then
What love I bore to thee

आई ट्रैवल्ड एमंग अननोन मैन, इन लैण्डस बियौण्ड दी सी,
नॉर इंगलैण्ड डिड आई नो टिल दैन, वाट लव आई बोर टू दी।

मैं घूमा फिरा भ्रमा घर-घर, पर नहीं सान्त्वना दी,
हे परम पिता, हे परमेश्वर, तुमने अनुकम्पा की।

—२८, सार

(२)

O joy, that in our embers
In something that doth live
The nature yet remembers
What was so fugitive

ओ जौय दैट इन अवर एम्बर्स, इन समथिंग दैट डथ लिव,
दी नेचर यट रिमेम्बर्स वाट वाज़ सो फ्यूजीटिव ।

क्यों चले न जाते हो घर, हाँ, लेलो थोड़े निब,
है तुम्हें यही अब बहतर, बस, भजा करो शिव-शिव ।

—विष्णुपद

(३)

This is idolatry and these we adore
Plain living and high thinking are no more

दिस इज़ आईडोलेट्री एण्ड दीज़ वी एडोर,
प्लेन लिविंग एण्ड हाई थिंकिंग आर नो मोर ।

वृक्षों पर बैठे पक्षीगण करते कैसा शोर,
कलरव कर कर कोहक रहे हैं, देखो मोहक मोर ।

—सखी

(४)

Thy thoughts and feelings shall not die,
Nor leave the when grey hairs are nigh

दाई थौट्स एण्ड फीलिंग्ज़ शैल नॉट डाई
नॉर लीव दी व्हैन ग्रे हेअर्स आर नाई ।

तुमने जनता को, नैतिकता सिखलाई,
हैं अब तो सब आपस में भाई-भाई ।

—राधिका

६. आरनोल्ड M. Arnold

(१)

But children at midnight
When soft the winds blow
When clear falls the moonlight
When spring tides are low

बट चिलड्रेन एट मिडनाइट, व्हैन सौफ़्ट दी विण्ड्स ब्लो,
व्हैन क्लीअर फ़ॉल्स दी मूनलाइट, व्हैन इसप्रिंग टाइडस आर लो ।

कैसा ही संकट आए, वर व्रत से नहीं टलो,
जो जीवन-ज्योति जगाए, उस पथ पर सदा चलो।

—विष्णुपद

(२)

Like us the lightning fires
Love to have scope and play
The stream like us desires
An unimpeded way

लाइक अस दि लाइटनिंग फ़ायर्स लव,
टू हैव इस्कोप एण्ड प्ले।
दी इस्ट्रीम लाइक अस डिज़ायर्स,
एन अनइम्पैडैड वे।

बोलो फिर तुम आओगे कब, सब पोथी-पत्रा ले,
कुछ दिन तो यहीं बिताओ अब, निज घर का ताला दे।

—सार

(३)

I say fear not life still
Leaves human efforts scope
But since life teems with ill
Nurse no extravagant hope

आई से फ़ीयर नौट लाइफ़ इस्टिल, लीवज़ ह्यूमैन एफ़र्टस इस्कोप
बट सिंस लाइफ़ टीम्स विद इल, नर्स नो एक्स्ट्रावेगेंट होप

तू क्यों रोता है रे बुज़दिल, क्या नहीं तुझे कुछ होश,
साहस के कामों में रिल-पिल, भर मन में थोड़ा जोश।

—मरहटा

१०. गोल्डइसमिथ Goldsmith

(१)

A man he was to all the country dear
And passing rich with forty pounds a year

ए मैन ही वाज़ टू आल दी कण्ट्री डीयर
एण्ड पासिंग रिच विद फ़ोरटी पौण्डस ए ईयर

तुम देश धर्म के धाम, सत्य के सागर,
हे भारत तिलक ललाम, बाल गंगाधर।

—२२, राधिका

(२)

O kind and gentle heart he had
To combat friends and foes
The naked every day he clad
When he was on his clothes

ए काइण्ड एण्ड जैण्टिल हार्ट ही हैड
टू कौम्बैट फ्रैण्डस एण्ड फ़ोज़
दी नैकैड एवरी डे ही क्लैड
व्हैन ही वाज़ ऑन हिज़ क्लोद्ज़

उसको चिन्ता क्या धन की थी, पाया था अक्षय कोष,
ऐसी पावनता मन की थी, रहता था अति सन्तोष।

—२९, मरहटा

(३)

Good people all of evry sort
Give ear unto my song
And if you find it wondrous short
It cannot hold you long

गुड पीपिल ऑल आफ़ एवरी सौर्ट, गिव ईयर अनटू माई सौंग,
एण्ड इफ़ यू फ़ाइण्ड इट वंडरस शौर्ट, इट कैनौट होल्ड यू लौंग।

तुम जीवों के सर्वस्व नाथ, मम विनय करो अब पूर्ण
मैं दीन-हीन, निर्बल-अनाथ, सब संकट करदो चूर्ण।

—२९, मरहटा

११. लौंगफ़ैलो Longfellow

(१)

Tell me not in mournful numbers
Life is but an empty dream
For the soul is dead that slumbers
And things are not what they seem

टैल मी नाँट इन मोर्नफुल नम्बर्स,
लाइफ़ इज़ बट एन एम्पटी ड्रीम
फ़ौर दी सोल इज़ डैड दैट स्लम्बर्स,
एण्ड थिंग्ज़ आर नाँट वाट दे सीम

नित प्रति प्रभु का ध्यान लगाओ, समझो उसको अमित असीम,
जीवन में वह ज्योति जगाओ, ऋषि-मुनि बनो भीष्म या भीम।
वही व्यक्ति नायक होता है, करता जो सेवा तप-त्याग,
बीज प्रेम-तरु के बोता है, भर सम्यक् स्वदेश-अनुराग।

—वीर

(२)

Lives af great men all remind us
We can make our lives sublime
And departing leave behind us
Foot prints on the sands of time

लाइव्ज़ आॅफ़ ग्रेट मैन आॅल रिमाइण्ड अस
वी कैन मेक अवर लाइव्ज़ सबलाइम
एण्ड डिपार्टिंग लीव बीहाइण्ड अस
फ़ुटप्रिंट्स आॅन दी सैण्ड्स आफ़ टाइम

शुभ कर्म्मों का मिलता शुभ फल,
अतः बनें हम पुण्य-परायण।
सत्य-अहिंसा, कष्टों का हल,
त्याग-तपस्या व्रत हो धारण।

—३२, समान सवैया

(३)

Father of all in every age
In every clime adored
By saint by savage and by sage
Gehovah jove and lord

फ़ादर ऑफ़ ऑल इन ऐवरी एज, इन ऐवरी क्लाइम एडोर्ड
बाई सेण्ट, बाई सैवेज एण्ड बाई सेज, जोहोवा, जोव एण्ड लौर्ड

ऋषि-मुनियों को भेज जगत में, करत विश्व कृतार्थ,
त्याग-तपस्या का वह बल दे, बनें सभी सिद्धार्थ।

—२७, सरसी

१२. राबर्ट ब्रिजेज़ Robert Bridges

(१)

I will not let thee go
Ends all our month-long love in this ?
Can it be summed up so,
Quit in a single kiss ?
I will not let thee go.

आइ विल नौट लैट दी गो
एण्ड्स ऑल अवर मंथ-लौंग लव इन दिस ?
कैन इट बी समड अप सो,
क्विट इन ए सिंगिल किस
आइ विल नौट लैट दी गो

× × × ×

तू बीज प्रेम के बो
क्यों करता है कोरी घिस-घिस
दुष्कर्मों को मत रो
दे त्याग विषैली रिस
तू बीज प्रेम के बो।

—गीत

१३. टॉमस हार्डी Tomas Hardy

(१)

Only a man harrowing clods
In a slow silent walk
With an old horse that stumbles and nods
Half asleep as they stalk

ग्रौनली ए मैन हैरोइंग क्लौड्स,
इन ए स्लो साईलेंट वॉक
विद एन ग्रोल्ड हौर्स दैट इस्टम्बल्स एण्ड नौड्स,
हाफ़ ऐसलीप ऐज़ दे स्टॉक

देखा उस वन में बड़ा वृक्ष, जब बोल रहे थे काक,
पर मुझको फ़ौरन ग्राना था, लेकर थोड़ा-सा शाक।

—मरहटा

(२)

While rain with eve in partnership
Descended darkly drip drip drip

वाइल रेन विद ईव इन पार्टनरशिप
डिसैण्डेड डार्कली ड्रिप ड्रिप ड्रिप

तुम ग्ररे गये थे क्यों तब छिप,
देखो घर दमक रहा दिप-दिप।

—तोटक (मात्रिक रूप में)

१४. डेवीस Davies

What is this life if full of care
We have no time to stand and stare

वाट इज़ दिस लाइफ़ इफ़ फुल ग्रॉफ़ केग्रर
वि हैव नो टाइम टू इस्टैण्ड एएड इस्टेग्रर

जग में मानव शुभ करनी कर,
बना गया है हृदयों में घर।

—चौपाई

१५. हेनरी चार्ल्स बीचिंग Henry Charles Beeching

Spirit of love and truth
Breathing in grosser clay
The light and flame of youth
Delight of men in the fray

इस्प्रिट ऑफ़ लव एण्ड ट्रूथ, ब्रीदिंग इन ग्रौसर क्ले
दी लाइट एण्ड फ्लेम ऑफ़ यूथ, डिलाइट ऑफ़ मैन इन दि फ्रे

आलस अन्धेर भगाया, उत्साह आत्म-बल दे,
तुमने यह देश जगाया, हे भाग्य-विधाता हे !

१६. कूपर W. Cowper

Absence of occupation is not rest
A mind quite vacant is a mind distressed

एबसैन्स आफ़ औक्कूपेशन इज़ नौट रैस्ट,
ए माइण्ड क्वाइट वेकैण्ट, इज़ ए माइण्ड डिस्ट्रैस्ड

जो प्रथा चलाई तुमने, वह है शुद्ध।
हाँ, जन-सेवक कहलाओ, बनो प्रबुद्ध।

१७. ब्राउनिंग E. Br Browning

And such a brightness in his eye
As if the ocean and the sky

एण्ड सच ए ब्राइटनैस इन हिज़ आई,
एज़ इफ़ दी ओशन एण्ड दी इस्काई।

आँखें खोल निहारो भाई,
कैसी सुन्दर है छवि छाई।

—चौपाई

१८. पोप W. Pope

१

The learned is happy nature to explore
The fool is happy that he knows no more

दी लरनैड इज़ हैपी नेचर, टू ऐक्सप्लोर
दी फ़ूल इज़ हैपी, दैट ही नोज़ नो मोर

आधी रात हुई है भाई है क्यों करते शोर,
देखो कुहक रहे हैं बैठे बरगद पर मोर।

—सुगीतिका

२

Of manners gentle, of affection mild
In wit, a man: simplicity a child

ऑफ़ मैनर्स जैण्टिल, ऑफ़ एफैक्शन माइल्ड
इन विट ए मैन, सिम्प्लीसिटी ए चाइल्ड

जीवन में सच्चे साधन कर तू धारण,
हो जाएँगे तेरे सब कष्ट निवारण।

—राधिका

१६. कैम्पबैल T. Campbell

१

The spirit shall return to him
That gave its heavenly spark
Yet think not sun it shall be dim
When thou thyself art dark

दी इस्प्रिट शैल रिटर्न टू हिम,
दैट गेव इट्स हैविनली इस्पार्क
यट थिंक नॉट सन इट शैल बी डिम
व्हैन दाऊ दाईसैल्फ़ आर्ट डार्क

भ्रम भेद भावना करो हरण, हो समता सुख संचार,
ध्रुव धर्म धीरता-सिन्धु-तरण, सद्भाव, स्नेह पतवार।

—मरहटा

(२)

Combat depends on you brave
Rush to glory or to grave

कौम्बैट डिपैण्डस आन यू ब्रेव, रश टू ग्लोरी और टू ग्रेव।
सब जीवों को नित सुख देहु, दुखियन के संकट हर लेहु।
—चौपाई

२०. रानी एलीजाबेथ Qneen Elizabeth

He was the word that spake it
He took the bread and brake it
And what the word did make it
I do believe and take it

ही वाज़ दी वर्ड दैट इस्पेक इट, ही टूक दी ब्रैड एण्ड ब्रेक इट
एण्ड वाट दी वर्ड डिड मेक इट, आई डू बिलीव एण्ड टेक इट

मारे लज्जा के गया सिमट, कुछ कह न सका होकर सिटपिट
कपड़ों-लत्तों में गया लिपट, फिर एक मित्र से गया चिपट।
—सखी

२१. मूर Moore

(१)

Contention bold with iron lungs
And slander with her hundred tongues

कंटेंशन बोल्ड विद आइरन लंग्ज़
एण्ड स्लैण्डर विद हर हंड्रेड टंग्ज़।

कर लेना फिर तुम मनरंजन,
पहले कुछ तो खालो व्यंजन।
—तोटक (मात्रिक)

(२)

The songs were made for the brave and free
They shall never sound in slavery

दि सौंग्ज़ वर मेड फ़ौर दि ब्रेव एण्ड फ्री,
दे शेल नैवर साउण्ड इन स्लेवरी।

परमेश्वर ने अति कृपा करी,
सारे अपराधी हुए बरी।
—तोटक (मात्रिक)

२२. स्विफ़्ट Swift

(१)

The love of a woman and a bottle of wine
Are sweet for a season and last for a time

दी लव ग्राफ़ ए वोमैन, एण्ड ए बौटिल ग्रॉफ़ वाइन
ग्रार स्वीट फ़ौर ए सीज़न एण्ड लास्ट फ़ौर ए टाइम

जो रुचि से पढ़ते रहते हैं रामायण,
उनको शुभ फल देता है, वह पारायण।

—राधिका

(२)

The vermin only tease and pinch
Their foes superior by an inch

दी वर्मिन ग्राँनली टीज़ एण्ड पिंच
देग्रर फ़ोज़ सुपीरियर बाई एन इंच

तू मार किसी के कभी न डंक,
हाँ सबको सदा लगाना ग्रंक।

—राभ

(३)

So never offered once to stir
But coldly said your servant sir

सो नैवर ग्रौफ़र्ड, वन्स टु इस्टर
बट कोल्डली सैड ,यौर सरवेरट सर

जल्दी से ग्रभी बिछा बिस्तर,
महमान ग्रारहे हैं घर पर।

—तोटक (मात्रिक रूप में)

(४)

Dead giddy helpless left alone
To all my friends a burden grown

डैड गिडी हैल्पलैस लैफ़्ट अलोन
टू ऑल माई फ्रैंड्स ए बर्डन ग्रोन।

कहो बढ़ेगा आगे कौन,
अरे साध बैठे क्यों मौन।

—चौपई

(५)

The shops in crowds,
The daggled females fly
Pretend to cheaper goods,
but nothing buy

टू शौप्स इन क्राउड दी डैगिल्ड फीमेल्स फ्लाई,
प्रिटेण्ड टू चीपर गुड्स, बट नथिंग बाई।

इतने क्यों निर्दय होते जाते भाई,
पट जाने दो अब द्वेष-दम्भ की खाई।

—राधिका

२३. इमर्सन R. W. Emerson

Good Bye proud world, I am going home
Long through thy weary clouds I roam

गुड बाई प्राउड वर्ल्ड, आई एम गोइंग होम,
लौंग थ्रू दाई वीयरी क्लाउड्स आई रोम।

जो करते हैं श्रद्धा से अपने घर में होम,
वे स्वस्थ-सुखी रहते हैं, हर्षाते हैं रोम।

—मुक्तामरिण

२४. चौसर Chaucer

(१)

But rich he was of holy thought and work
He was also a learned man and clerk

बट रिच ही वाज़ ऑफ़ होली थौट एण्ड वर्क,
ही वाज़ ऑलसो ए लरनैड मैन एण्ड क्लर्क।

उनके जीवन में देखा इतना फ़र्क,
वे बात-बात में करते थे अति तर्क।

(२)

Made thee of noght and in especial
Draw unto him, and pray in general

मेड दी आफ़ नॉट, एण्ड इन इस्पेशल
ड्रा अनटू हिम, एण्ड प्रे इन जनरल।

बलवान बन तू कहाता है क्यों निर्बल,
त्याग दे, काम-क्रोध दम्भ-द्वेष छद्म-छल।

—दास

२५. ग्रिफ़िथ्स Griffiths

(१)

The moment as Kekayi pressed
With cruel words her due request
Stood for a time absorbed in thought
which anguish in his bossom wrought

दी मोमेंट ऐज़ केकैयी प्रैस्ड,
विद क्रुएल वर्ड्स हर ड्यू रिक्वेस्ट।
इस्टुड फ़ौर टाइम ऐबज़ौर्ब्ड इन थौट,
विच ऐंग्विश इन हिज़ बूज़म रौट।

जिस समय भक्ति की बही धार, था दिव्य दृश्य अनुपम अपार,
चल दिये तुरत अभिराम राम, निज मात-पिता को कर प्रणाम।

—पद्धरि

(२)

The good Bhardwaj royal sage
Had no fair son to cheer his age
He great in glory, pure in will
Longing for sons was childless still

दी गुड भरद्वाज रायल सेज, हैडनो
फ़ेग्रर सन टू चोयर हिज़ एज,
ही ग्रेट इन ग्लोरी, प्योर इन विल,
लौंगिग फ़ौर सन्स वाज़ चाइल्डलैस इस्टिल ।

भगवान आज वह भक्त भेज, जिसका देखें सब दिव्य तेज,
तेरा गुण-गौरव है निर्मल, तू महा महिम निश्छल—निश्चल ।

—पद्धरि

(३)

They are slaves who fear to speak
For the fallen and the week

दे ग्रार स्लेव्ज़ हू फ़ीयर टू इस्पीक,
फ़ौर दी फ़ालिन एण्ड दी वीक ।

कभी न माँगो कोई भीख, गाँठ बाँध लो सुन्दर सीख ।
सत्य धर्म की पुण्य प्रतीक, है यह तथ्य पुरातन ठीक ।

—चौपई

२६. जॉन्सन S. Johnson

(१)

His virtues walked their narrow round
Nor made a pause nor left a void
And sure the eternal master found
The single latent well employed

हिज़ वरचूज़ वाक्ड देग्रर नैरो राउण्ड,
नौर मेड ए पौज़ नौर लैफ़्ट ए वौइड,
एण्ड श्योर दी एटर्नल मास्टर फ़ौण्ड,
दी सिंगिल लेटेण्ट वैल एम्पलौइड ।

जब दम्भ, दर्प्प अभिमान हुआ
बन गया, स्वार्थ-सेवक-साधक ।

ज्यों-ज्यों उसको कुछ भान हुआ,
त्यों-त्यों था वह प्रभु-आराधक ।

—तोटक

(२)

Fate never wounds more deep the generous heart
Than when a blockhead's insult points the dart

फ़ैट नैवर वूण्ड्स मोर डोप दी जॅनरस हार्ट,
दैन व्हैन ए ब्लौक-हैड्स इन्सल्ट पौइण्टस दी डार्ट ।

है कैसी सुन्दर, सुखद सजीली रात,
आओ मिल कर सब करें प्रेम से बात ।

—सन्त

२७. यंग Young

With fame in just proportion envy grows.
The man that makes a character makes foes

विद फ़ेम इन जस्ट प्रोपोरशन एनवी ग्रोज,
दी मैन दैट मेक्स ए कैरेक्टर मेक्स फ़ोज ।

ऐसा सुन कर क्यों आता तुझको रोष,
सुख का साधन तो माना है सन्तोष ।

—सन्त

२८. कैरी H. Carey

God save our gracious king
Long live our noble king
Send him victorious
Happy and glorious

गौड सेव अवर ग्रेशस किंग, लौंग लिव अवर नोबिल किंग ।
सैण्ड हिम विक्टोरियस, हैपी एण्ड ग्लोरियस ।

देखो कभी न करना जंग, हो जाएगी दुनिया तंग ।
कर सुकर्म्म पाओगे यश, रहो न मद-मत्सर के वश ।

—चौपई

२९. ब्लैकी W. Blake

(१)

Tiger tiger burning bright
In the forest of the night
What the hammer, what the chain
In what furnace was thy train

टाइगर टाइगर बर्निंग ब्राइट, इन दी फ़ौरैस्ट ऑफ़् दी नाइट
वाट दी हैमर वाट दी चेन, इन वाट फ़रनेस वाज़ दाई ट्रेन

जो करना हो कर डालो झट, करो किसी से भी मत खटपट।
कैसा सुख और कैसा चैन, काटो दुख में ही यह रैन।

—डिल्ला

(२)

But vain the sword and vain the bow
They never can work war's overthrow

बट वेन दि सोर्ड एण्ड वेन दि बो
दे नैवर कैन वर्क वार्स ओवरथ्रो

जब तक निश हो, तब तक तू सो,
दिन में न व्यर्थ कुछ क्षण भी खो।

—पद्धरि

३०. वबस्टर G. Webster

Sweetest breath and clearest eye
Like perfumes go out and die

स्वीटैस्ट ब्रैथ एण्ड क्लीअरैस्ट आई,
लाइक परफ़्यूम्स गो आउट एण्ड डाई।

खोजते हैं हाय कौन कहाँ गया भाई,
चारों ओर शोर कर धूम-सी मचाई।

—विहारी

३१. एडीसन J. Addison

(१)

Soon as the evening shades prevail
The moon takes-up the wondrous tale

सून एज़ दी ईवनिंग शेड्स प्रिवेल
दी मून टेक्स-अप दी वराडरस टेल

दुनिया में आकर करो मेल,
सींचो जीवन की प्रेम-बेल।

—पद्धरि

(२)

For ever singing as they shine
The hand that made us is devine

फ़ौर एवर सिंगिंग ऐज़ दे शाइन
दी हैराड दैट मेड अस इज़ डिवाइन

खाओ भाई शुद्ध रसायन, स्वस्थ रहेगा निश्चय तन-मन।

—पद्धरि

३२. बारबोल्ड A. L. Barbauld

(१)

Life I know not what thou art
But know that thou and I must part

लाइफ़ आई नो नौट वाट दाऊ आर्ट
बट नो दैट दाऊ एण्ड आई मस्ट पार्ट

तुम कहाँ गये हो गयी रात,
हा, क्षरा-भर भी तो की न बात।

—पद्धरि

(२)

And when or how or where we met
I own to me is a secret yet

एण्ड व्हैंन और हाऊ और व्हेअर वी मैट
आई ओन टू मी इज़ ए सीक्रेट यैट
मेरी-तेरी तो है खट-पट, फिर क्यों बैठा आगे से हट।

—पद्धरि

३३. सैडले Sadley

My passion with your beauty grow
And cupid at my heart
Still as his mother favoured you
Threw a news flowing dart

माई पैशन विद यौर बीऊटी ग्रो, एण्ड क्यूपिड एट माई हार्ट
इस्टिल ऐज़ हिज़ मदर फेवर्ड यू, थ्रू ए न्यूज़ फ़्लोइंग डार्ट
ओ कलित कल्पना जाग उठो, ले कविता का अवतार,
शुचि, अजर, अमर, अद्भुत उमगो, वन रसिकों का हिय-हार।

—मरहटा

३४. स्कौट W. Scott

(१)

He is gone on the mountain
He is lost to the forest
Like summer dried fountain
When our need was the sarest

ही इज़ गौन औन दी माउण्टेन, ही इज़ लौस्ट टू दी फ़ौरेस्ट
लाइक समर ड्राइड फ़ाउण्टेन, व्हैन अवर नीड वाज़ दी सेरैस्ट
वह बना फिरे था भीमसेन, हो रही हाय क्या दुर्गति,
अब नहीं उसे है तनक चैन, किस ओर गयी वह गति-मति।

—तांटक

(२)

In peace love tunes the shepherds reed
In war he mounts the warriar's steed
In halls in gay attire is seen
In hamlets dances on the green

इन पीस लव टयून्स दी शैफ़र्ड्स रीड
इन वार ही मौण्ट्स दी वारिअर्स स्टीड
इन हाल्स इन गे एटाइर इज़ सीन
इन हैमलैट्स डान्सेज ऑन दी ग्रीन

सुख में, दुख में सब करो प्रीति,
है यही नीति और यही रीति।
जल बिन व्याकुल हो रही मीन,
'मानव' कहला क्यों बना दीन।

—पद्धरि

३५. हैरिक R. Harrick

Gather ye rose-buds while ye may
Old time is still a flying
And the same flower that smiles to day
To morrow will be dying

गैदर दी रोज़-बड्स व्हाइल यी मे.
ओल्ड टाइम इज़ इस्टिल ए फ़्लाइंग
एण्ड दि सेम फ़्लौअर दैट इस्माइल्स टू डे
टू मारो विल बी डाइंग

तुम त्याग करो, अनुराग करो, जीवन में बल-विस्तारक,
दुखियों के संकट-शूल हरो, सुखमूल, स्नेह-संचारक।

—ताटंक

३६. कान्स्टेबिल H. Constable

I do love thee as each flower
Loves the sun's life-giving power
As the birds do love the spring
Or the bees their careful king

आई डू लव दी ऐज़ ईच फ़्लावर
लव्ज़ दी सन्स लाइफ़-गिविंग पावर

ऐज़ दी बर्ड्स डू लव दी इस्प्रिग
और दी बीज़ देअर केअरफुल किंग
मेरा दूर नहीं है अब घर, चलें आप भी हे करुणाकर,
मैं हूँ नाथ आपके संग, कहीं न कर देना रस-भंग।
—डिल्ला

३७. इलियट E. Elliat

O shoreless deep where no wind blows
And thou, o land which no one knows
ओ शोरलैस डीप, वेअर नो विण्ड ब्लोज़
एण्ड दाऊ, ओ लैण्ड, विच नो वन नोज़
तुम को न चाहिए कभी रोष,
देना न किसी को व्यर्थ दोष।
—चौपाई

३८. ड्राइडिन G. Dryden

(१)

He lived all the pomp he conld device
But found no favour in his ladies eyes
ही लिव्ड आल दी पौम्प ही कुड डिवाईस
बट फ़ौण्ड नो फ़ेवर इन हिज़ लेडीज़ आईज़
उसने ग्रन्थों का किया प्रचुर पारायण,
पर, फिर भी हुआ न हा, वह धर्म-परायण।
—राधिका

(२)

All other debts may compensation find
But love is strict and will be paid in kind
आल अदर डेट्स मे कम्पेंसेशन फ़ाइण्ड
बट लव इज़ इस्ट्रिक्ट एण्ड विल बी पेड इन काइण्ड
है सत्य-साधना ही जिनका जीवन-धन,
वे मानवता का करते हैं अभिवर्द्धन।
—राधिका

३९. इस्टीविन्सन Robert Louis Stevenson

A garden bare of flowers and fruit
And poplars at the garden foot
Such is the place that I live in
Bleak without and bare within

ए गार्डन बेग्रर ग्राफ़ फ़्लावर्स एण्ड फ्रुट
एण्ड पौपलर्स एट दी गार्डन फुट
सच इज़ दी प्लेस दैट ग्राई लिव इन.
ब्लीक विदाउट एण्ड बेअर विदिन

क्यों व्यर्थ कर रहे हो खटपट,
जो कुछ करना है करलो झट।
ग्रब कितने शेष रहे हैं दिन,
क्षण-क्षण घटता जाता जीवन।

—डिल्ला

४०. डार्ले G. Darley

With nothing more upon it than
Here lies the little friends of man

विद नथिंग मोर ग्रपौन इट दैन,
हीग्रर लाईज़ दी लिटिल फ्रैण्डस ग्रॉफ़ मैन

साजो शुचिता की सब सेन, प्रतिभा तो ईश्वर की देन।

—चौपई

४१. सिबर Cibber

My day or night myself I make
Whenever I wake or play
And could I ever keep awake
It would be always day

माई डे ग्रौर नाइट माईसेल्फ़ ग्राई मेक,
व्हेनैवर ग्राई वेक ग्रौर प्ले
एण्ड कुड ग्राई ऐवर कीप ग्रवेक,
इट वुड बी ग्रालवेज़ डे

मैं चेरा तेरा बमूँ एक, जब प्रभु तू गति-मति दे,
निभ जाय अरे ये नम्र टेक, निज शरण नाथ, तू ले।

—सार

४२. जॉन्सन B. Jonson

Truth is the trial of itself
And needs no other touch
And purer than the purest gold
Refine it never so much

ट्रुथ इज़ दी ट्राइल ऑफ़ इटसैल्फ़,
एण्ड नीड्स नो अदर टच
एण्ड प्योरर दैन दी प्योरैस्ट गोल्ड,
रिफ़ाइन इट नैवर सो मच।

जो मन्त्र अभी बतलाया, वैसा जाना है कब ?
देखो तुम भूल न जाना, है अनुपम अवसर अब।

—विष्णु पद

४३. बर्न्स R. Burnes

My heart is in the highlands
My heart is not here
My heart is in the highland
A—chasing the deer

माई हार्ट इज़ इन दी हाई लैण्ड्स,
माई हार्ट इज़ नौट हीयर,
माई हार्ट इज़ इन दी हाई लैण्ड्स,
ए—चेज़िंग दी डीयर।

मैं भूला-भटका विश्व बीच, पर, मिला न परमेश्वर,
जब ज्ञान हुआ तो भान हुआ, अणु-अणु है प्रभु का घर।

—विष्णुपद

४४. कावली Cowley

(१)

Banish business, banish sorrow
To the Gods belongs tomorrow

बैनिश बिज़िनैस, बैनिश सोरो, टू दी गॉड्स बीलौंग्ज़ टूमारो
जगती पर नित यश विस्तारो, त्याग कुकर्म, सुकर्म पसारो ।

(२)

Fill the bowl with rosy wine
Around our temples roses twine

फ़िल दी बाउल विद रोज़ी वाइन,
ऐराउण्ड अवर टेम्पिल्स रोजे़ज ट्वाइन
बनें सभी जन धर्म-परायण, धारें ऋषि-मुनियों के गुण-गण ।

—चौपाई

४५. ग्रीन R. Green

When the father first did see
Such a boy by him and me
He was glad and I was woe
For time changed and made him so

व्हैन दी फ़ादर फ़र्स्ट डिड सी,
सच ए बॉय बाई हिम एण्ड मी
ही वॉज़ ग्लैड एण्ड आई वॉज़ वो,
फ़ौर टाइम चेन्ज्ड एण्ड मेड हिम सो

तुमने अति अनुकम्पा की, माँगी वस्तु मुझे दे दी,
होना होता है सो हो, अब तो मुझे मुक्त कर दो ।

—सखी

४६. वाट्स Watts

Were I so tall to reach the pole
Or grasp the ocean with my span
I must be measured by my soul
The mind is the standard of the man

वेअर आई सी टाल टू रीच दी पोल
और ग्रास्प दी ओशन विद माई इस्पैन
आई मस्ट बी मेज़र्ड बाई माई सोल
दी माइण्ड इज़ दी इस्टेंडर्ड ऑफ़ दी मैन

कहता हूँ सुन लो कान खोल, है ईश्वर की सम्पदा दैन,
कब धर्म-कर्म का आँका मोल, कटुता तज बोलो मधुर बैन।

—त्रिभंगी

४७. मांट गोमरी Mount Gomery

Were I a trembling leaf
On yonder stately tree
After a season gay and brief
Condemned to fade and flee

वेअर आई एट्रेम्बिलिंग लीफ़, ऑन, यौण्डर इस्टेटली ट्री
आफ़्टर ए सीज़न गे एण्ड ब्रीफ़ कंडेम्ड, टू फ़ेड एण्ड फ़्ली

तुम बड़े प्रेम से आओ, भूलो जो विपत सही,
सब भाँति सुखी बन जाओ, प्यारा परिवार मही।

—विष्णुपद

४८. थैकरेसी W. M. Thakeracy

The play is done the curtain drops
Slow falling to the prompters bell
A moment yet the actor stops
And looks around to say farewell

दी प्ले इज़ डन दी करटेन ड्राप्स, स्लो फ़ालिंग टू दी प्रोम्पटर्स बैल
ए मोमैंट यट दी एक्टर इस्टोप्स, एण्ड लुक्स ऐराउण्ड टू से फ़ेयर वैल

जो समुचित है अब वही करो, क्यों व्यर्थ खो रहे हो निज बल,
संकट ग्रस्तों के कष्ट हरो, सब सत्य मार्ग पर रहो अचल।

—त्रिभंगी

४६. वाल्टन H. Walton

How happy is he born and taught
That serveth not another's will
Whose armour is his honest thought
And simple truth his utmost skill

हाउ हैपी इज़ ही बौर्न एण्ड टौट
दैट सरवैथ नॉट अनौदर्स विल
हूज़ ऑरमर इज़ हिज़ ऑनेस्ट थौट
एण्ड सिम्पिल ट्रुथ हिज़ अट मोस्ट इस्किल

ओ चतुर चितेरे-चित्रकार, सद्भावों का चिर चित्रण कर,
प्रतिभा-प्रकाश का कर प्रसार, नव जीवन में नव रंगत भर।

५१. एटकिन्स Rev. A. G. atkins

(१)

The modest maids entered, the hall Sita bringing.
And soul-stirring songs, in sublime voices singing

दी मोडेस्ट मेड्स इंटर्ड दी हाल सीता ब्रिंगिंग
एण्ड सोल-इस्टरिंग सौंग्स, इन सबलाइम वाइसेज़ सिंगिंग

था धर्म-भाव में रत वह, करता था सत्य समर्थन,
हरता था सब के संकट, सेवा-व्रत था जीवन-धन।

—सार

(२)

Her young body swathed, in a beautiful robe
The world mother's beauty no rival could probe

हर यंग बौडी स्वेद्ड, इन ए बीऊटीफुल रोब
दी वर्ल्ड मदर्स बीऊटी, नो राइवल कुड प्रोब

वे उग्र भाव से आए, पर किया न कुछ भी रोष,
था उनको नहीं परेखा, सब सिद्ध हुए निर्दोष।

—सरसी

(३)

The moments the Sita, set foot in the hall
The sight drew the gaze, and the hearts won of all

दी मोमेंट्स दी सीता, सैट फ़ुट इन दी हाल,
दी साइट ड्रू दी गेज़, एण्ड दी हार्ट्स वन ऑफ़ आल

वे आए गीता गाते, था कैसा हृदय विशाल,
उठ गया ज्ञान का सूरज, मिट गया अन्ध विकराल।

—सरसी

अँग्रेज़ी में अभिनव छन्द

अंग्रेज़ी में हिन्दी छन्द सब ही समाएँगे,
ऐसे दृश्य आपको ये पृष्ठ दिखलाएँगे ।

अंग्रेज़ी के कवियों ने दोहे, सोरठे, चौपाई, घनाक्षरी, कवित्त, सवैया, षट्पदी, कुण्डलिया, गीत आदि लिखने की कोशिश नहीं की, परन्तु ये छन्द अंग्रेज़ी में बड़ी सफलता और सरलता से लिखे जा सकते हैं। इन पृष्ठों में कुछ ऐसे ही छन्द दे कर हमने अपनी उक्त धारणा का समर्थन किया है। यदि ये छन्द हिन्दी छन्दों की गति और प्रवाह की तरह पढ़े जाएँगे तो स्पष्ट जाना जा सकेगा कि अँग्रेज़ी छन्दः शास्त्र में, इन सब छन्दों का समावेश हो सकता है। सम्भव है, अंग्रेज़ी भाषा या शब्द-प्रयोग की दृष्टि से इनमें किसी को कुछ आपत्ति हो, परन्तु छन्द-विज्ञान की दृष्टि से वे सब ठीक हैं। अँग्रेज़ी के कवि अपनी प्रतिभा के प्रभाव से सुन्दर भाषा और अभिनव भावों द्वारा इन छन्दों में सचमुच प्राण-संचार कर सकते हैं। छन्द तो पात्र हैं, उनमें खीर भी भरी जा सकती है, और खली भी। यह भरने वाले की इच्छा, रुचि और योग्यता पर निर्भर है।

अँग्रेज़ी दोहे English Couplet

(१)

Duty is morality, for men-women
Honesty sincerity, God-gift brotheren

ड्यूटी इज़ मौरैलिटी, फ़ौर मैन-वीमैन,
औनैस्टी-सिंसिअरिटी, गौड-गिफ़्ट ब्रदरैन ।

(२)

Mother India is our, country pious-pure
Suffering-sacrifices, elevate it sure

मदर इण्डिया इज़ अवर, कंट्री पायस-प्योर,
सफ़रिंग-सैक्रीफ़ाइसेज़, एलीवेट इट श्योर।

(३)

Among leaders patriots,
Gandhi the greatest
Truth and nonviolence,
are principles best

एमंग लीडर्स-पैट्रिअट्स, गाँधी दी ग्रेटैस्ट,
ट्रूथ एण्ड नन-वायलेंस, आर प्रिंसिपिल्स बैस्ट।

(४)

God our protector, God created whole
God our life-giver: God breath and soul

गौड अवर प्रोटेक्टर, गौड क्रिएटेड होल,
गौड अवर लाइफ़-गिवर, गौड ब्रैथ एण्ड सोल।

(५)

Forget and forgive, who are ignorant
You be ever virtuous, brother cent per cent

फ़ौरगैट एण्ड फ़ौरगिव, हू आर इगनोरेंट,
यू बी ऐवर वरचुअस, ब्रदर सेंट पर सेंट।

(६)

Sing song lady little, and dance in hall
showing joyous gesture, please please us all

सिंग सौंग लेडी लिटिल, एण्ड डान्स इन हॉल,
शोइंग जौयस जैस्चर, प्लीज़ प्लीज़ अस आल।

अँग्रेज़ी सोरठा English' sortha'

(१)

For men women, duty is morality
God-gift brotheren, honesty-sincerity

फ़ौर मैन-वीमेन, ड्यूटी इज़ मॉरैलिटी,
गौड गिफ़्ट ब्रदरेन, ऑनैस्टी सिंसियरिटी ।

(२)

God creator whole, God our protector
God breath and soul, God our life-giver

गौड क्रिएटर होल, गौड अवर प्रोटैक्टर,
गौड ब्रैथ एण्ड सोल, गौड अवर लाइफ़–गिवर ।

अँग्रेज़ी चौपाई तथा चौपई

Really is this ideal high
For your country do or die

रीयली इज़ दिस आइडियल हाई,
फ़ौर यौर कन्ट्री डू और डाई ।

जय नँद नन्दन जय जदुराई,
तुमने जस की ज्योति जगाई ।

Where the bee sucks there suck I
In a cow-slip's bell I lie

वेअर दी बी सक्स देअर सक आई,
इन ए काउ स्लिप्स बैल आई लाई ।

जिसने प्रभु गुण-गरिमा गाई,
उसने मानवता अपनाई ।

There I conch when owls do cry
On the bats back I do fly

देअर आई कौन्श वैन आउल्स टू क्राई,
आन दी बैट्स बैक आई टू फ़्लाई।

जिसने जीवन-ज्योति जगाई,
धर्म, कीर्ति, धन-राशि कमाई।

Though thy path be dark as night
Trust in God and do the right

दो दाई पाथ बी डार्क ऐज़ नाइट,
ट्रस्ट इन गौड एण्ड डू दी राइट।

हे जग-जीवन हे सुख-दायक,
हे विश्वम्भर विश्व-विधायक।

Only reapers reaping early
In among the bearded barley

औनली रीपर्स रीपिंग अरली,
इन एमंग दी बीअर्डेड बारली।

स्नेह सहित अधरों पर धरली,
बजी कृष्ण की मोहक मुरली।

× × × ×

True art can save from slavery
And gives true greatness to the free

टू आर्ट कैन सेव फ़ौम स्लेवरी
एण्ड गिव्स टू ग्रेटनैस टू दी फ़्री।

जब-जब जग पै विपदा परी,
तब-तब प्रभु ने करुणा करी।

By God grace we all are free
Soon do something for country

× × × ×

बाई गौड ग्रेस वी आल आर फ़्री,
सून डू समथिंग फ़ौर कन्ट्री।

मन में शुद्ध सुमति भर दी,
जीवन-गति सुन्दर करदी।

अँग्रेज़ी कवित्त

Food, clothes, houses never available
Thin, lean. weak, meek all are ill-clad
Fool, arrogant, vain, vulgar, useless
Talk many times that poor men are mad
For this reason, we have done all things
Why do you think that truth saying is bad
Condition of this country is horrible
Dreadful, painful, sorrowful and sad

फ़ूड, क्लोद्स, हाउसैज़ नैवर अवेलेबिल,
थिन, लीन वीक, मीक, ऑल आर इल-क्लैड
फ़ूल, एरोगेंट, वेन, वलगर, यूस-लैस
टॉक मैनी टाइम्स दैट पूअर मैन आर मैड
फ़ौर दिस रीज़न वी हैव डन आल थिंग्ज़
व्हाई डू यू थिंक दैट ट्रुथ-सेइंग इज़ बैड
कंडीशन ऑफ़ दिस कंट्री इज़ हौरीबिल
ड्रैडफ़ुल, पेनफ़ुल, सौरोफ़ुल एण्ड सैड ।

अँग्रेज़ी सवैया

For ever you would be good man
awake-arise night-day
Greatness character-building know
virtues-adoption right way
To relief the pain or poverty
discharge the duties don't delay
Whole world be pious, wise, well
to God creator we should pray

फ़ौर एवर यू वुड बी गुड मैन, अवेक एराइज़, नाइट-डे,
ग्रेटनैस करैक्टर-बिल्डिंग नो वरचूज़ अडोप्शन राइट वे ।
टु रिलीफ़ दी पेन औ पावरटी डिस्चार्ज दी ड्यूटीज़ डोण्ट डिले
होल वर्ल्ड बी पाइस, वाइज़, वैल टु गौड क्रिएटर वी शुड प्रे ।

[उक्त सवैया इस प्रवाह से पढ़िए]

पुरषारथ, साहस, मेल मिटे मत-पन्थन के मिस फूट परी,
अधिकार भयो परदेसिन कौ धन-धाम-धरा पर लूट परी।

अँगरेज़ी षटपदी (छप्पय)

My brother be sincere and do duty
Public service is supposed human beauty
Saint, sage, pure, pious all are peace-creator
Selfless always bearing good character
You should be gentle active
Give-up laziness then
Be quite, kind, virtuous
Doing good to all men

माई ब्रादर बी सिंसियर एण्ड डू ड्यूटी
पबलिक सर्विस इज़ सपोज़्ड ह्यूमैन बिऊटी
सेण्ट , सेज, प्यौर, पाइस, ऑल आर पीस-क्रियेटर
सैल्फ़लैस ऑलवेज़ बीअरिंग गुड कैरेक्टर
यू शुड बी जैण्टिल एक्टिव, गिव-अप लेज़ीनैस दैन
बी क्वाइट, काइण्ड, वर्चुअस, डूइंग गुड टू आल मैन

उक्त षटपदी के पहले चार चरण रौला छन्द के हैं, और अन्तिम दो उल्लाला के। इसी प्रवाह से पढ़िए।

अंग्रेज़ी कुण्डलिया

Be not lazy idle, do daily good deed
Always restrain you, breed, need and greed
Breed, need and greed, become you pure and pious
Adopt virtues and, leave the evil vice
Says poet o dear hear, good view, should see
By doing really thus, you gentle would be

बी नॉट लेज़ी आइडिल, डू डेली गुड डीड
ऑलवेज़ रेस्ट्रेन यू, ब्रीड, नीड एण्ड ग्रीड

ब्रीड, नीड एण्ड ग्रीड, बीकम यू प्योर एण्ड पाइस
एडोप्ट वरचूज़ एण्ड, लीव दी ईविल वाइस
सेज़ पोइट ओ डीयर, हीयर गुड व्यू शुड सी
बाई डूइंग रियली दस, यू जेंटिल वुड बी

अँग्ररेज़ी गीत

O God, bless us, pray
Be virtuous, pure or pious night and day
In the pain or poverty, be not perverted
Seeing other man's prosperity, never sorry, sad
Go always true way
O God, bless us pray
Cow, mother and motherland,
have done good to us all
They are to be served
heartily, by great-small
Good will ever convey
O God, bless us pray
Public service is due duty, do with no intrest
Selfless life is considered, always best
Attention to this pay
O God, bless us pray
Saint, sage and great men are, all philanthropist
Do good to the whole creation, this is their gist
Be active don't delay
O God, bless us pray
Be virtuous, pure or pious night and day

उक्त अँग्रेज़ी गीत इस ढंग से पढ़िए—

ओम् जय जगदीश हरे—
भक्त जननं के संकट छिन में दूर करे।
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसै मन का,
सुख-सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का—
ओम् जय जगदीश हरे—
प्रभु, जय जगदीश हरे

ओ' 'गौड ब्लैस अस प्रे—

बी वरचुअस प्योर और पाइस नाइट-एण्ड-डे ।
इन दी पेन ऑर पावर्टी, बी नॉट परवर्टेड,
सींइंग अदर मैन्स प्रौस्पैरिटी, नैवर सौरी-सैड,
गो ऑलवेज़ टू वे–
ओ' गौड ब्लैस अस प्रे ।

काउ, मदर एण्ड मदरलैण्ड हैव, डन गुड टू अस ऑल,
दे आर टू बी सर्व्ड हार्टिली, बाई ग्रेट-इस्माल,
गुडविल ऐवर कनवे–
ओ' गौड ब्लैस अस प्रे ।

पबलिक सर्विस इज़ ड्यू ड्यूटी, डू विद नो इंट्रैस्ट,
सैल्फ़लैस लाइफ़ इज़ कन्सीडर्ड, आलवेज़ बैस्ट,
एटैन्शन टू दिस पे–
ओ' गौड ब्लैस अस प्रे ।

सेण्ट-सेज एण्ड ग्रेट मैन आर, आल फ़िलैंथ्रोपिस्ट,
डू गुड टू दी होल क्रिएशन, दिस इज़ देअर जिस्ट,
बी ऐक्टिव, डोण्ट डिले–
ओ' गौड ब्लैस अस प्रे ।

बी वरचुअस प्योर और पाइस नाइट-एण्ड-डे ।

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।